नवीन शिक्षा पद्धति पर आधारित एवं एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा
निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार

हिन्दी

लेखक :
अभिषेक अग्रवाल

भाग 6

- शिक्षाप्रद-कहानियाँ
- शब्दार्थ
- मौखिक एवं लिखित प्रश्न
- अभ्यास के लिए प्रश्न-पत्र

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

संशोधनकर्त्ता

डॉ0 राम कुमार

पी-एच0 डी0, एम0 ए0 (हिंदी)

विशाल जैन

एम0 ए0 (हिंदी)

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिंदी की पाठ्य-पुस्तक

वर्तमान में सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक व प्रयोगात्मक शिक्षा की सुदृढ़ता पर भी जोर दिया जा रहा है जिससे विकास के प्रत्येक क्षेत्र को स्थायित्व प्रदान किया जा सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) को प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को सबल बनाने और 'स्वयं करके सीखने' की अवधारणा को साकार करने पर जोर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख अवयव

रचनात्मक और नवीनता (Creativity and Innovativeness)
नए विचारों को उत्पन्न करने तथा उन रचनात्मक विचारों को चरितार्थ करने में सहायता करना।

निरंतर समीक्षा (Continuous Review)
नियमित समीक्षा के द्वारा समझ को परखना तथा सीखी गई अवधारणा को सुदृढ़ करना।

संप्रेषण (Communication)
प्रभावी रूप से संप्रेषण करने योग्य बनाना

डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy)
शिक्षक-शिक्षार्थियों के बीच ऑनलाइन सहयोग को बढ़ाना

समस्या-समाधान और आलोचनात्मक सोच (Problem Solving and Critical Thinking)
मस्तिष्क को तेज करना तथा स्मरण शक्ति में वृद्धि करना।

अंतर-विषयक अधिगम (Inter-disciplinary Learning)
अध्ययन के विभिन्न विषयों को जोड़ना अथवा शामिल करना।

कला एकीकरण (Art Integration)
'कला के माध्यम' से और 'कला के साथ' सीखने हेतु छात्रों को प्रोत्साहित करना।

संगणनात्मक सोच (Computational Thinking)
तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ाना

जीवन-कौशल और मूल्य (Life skills and Values)
आत्म-विश्वास और नैतिक मूल्यों का समुचित विकास करना।

अनुभावनात्मक अधिगम (Experiential Learning)
'स्वयं करके सीखने' की प्रक्रिया में संलग्न करना, समूह भावना में वृद्धि करना तथा जोखिम लेने की क्षमता।

आपके लिए.....

'हिन्दी' नवीन हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें बच्चों की अभिरुचियों एवम् उनके मानसिक स्तर के अनुकूल हैं तथा उन्हें प्रतिदिन के जीवन से जोड़ती हैं। हिन्दी श्रृंखला अपने नाम को सार्थक करती, भाषा को विस्तृत रूप देती एक ऐसी, अनूठी श्रृंखला है जो विद्यार्थियों का निश्चय ही बहुआयामी मार्ग प्रशस्त करेगी।

पाठशाला में प्रवेश लेते ही बच्चों को उसके वातावरण के साथ तालमेल बनाना होता है, जिससे वे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ सकें। पुस्तकें उनकी प्रिय मित्र बनें, इसे ध्यान में रखते हुए बच्चों की रुचि के अनुकूल विषयों का चयन किया गया है। जब विषय बच्चों की दुनिया से जुड़े हुए होते हैं तब उनसे बच्चों का परिचय स्वाभाविक ढंग से एवम् सरलता से हो जाता है। इन कक्षाओं में भाषा पर बल दिया जाता है; क्योंकि वर्णमाला सीखे बिना भाषा के लिखित रूप को सीख पाना संभव नहीं है। पढ़ना केवल वर्णमाला के अक्षरों और मात्राओं को रटना और जोड़-जोड़कर पढ़ना तथा लिखना ही नहीं अपितु इसके साथ-साथ सोच-समझ का विकास करना प्रस्तुत श्रृंखला का उद्देश्य है। भाषा-ज्ञान को सरल, सरस और रुचिकर बनाना भी अत्यंत आवश्यक है।

हिन्दी श्रृंखला की विशेषताएँ–

- भाषा-ज्ञान के लिए प्रस्तावित विविध पाठ्यक्रमों पर आधारित सरल और बोधगम्य विषयवस्तु।
- बच्चों के प्रतिदिन के अनुभवों से जुड़ी तर्कशक्ति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वृद्धि करने वाली रोचक विषयवस्तु।
- शिक्षार्थियों के स्तर के अनुरूप कविता, कहानी, घटना-वर्णन, नाटक आदि से परिचय; विषयवस्तु में विविधता और नवीनता।
- भाषा में रुचि बढ़ाने हेतु अतिरिक्त पाठ्य एवम बोधगम्य-सामग्री।
- सरल परिभाषाओं के अतिरिक्त व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष की जानकारी हेतु प्रयास।
- अभ्यासों द्वारा जीने की कला सिखाना, मानवीय मूल्यों तथा स्वास्थ्यवर्धक आदतों पर विशेष दृष्टिकोण।
- विषय वस्तु को अधिक प्रभावपूर्ण रूप से समझाने के लिए अध्यापक बंधुओं हेतु कुछ शिक्षण-संकेत।
- प्रस्तुत श्रृंखला बच्चों के सर्वांगीण विकास में उपयोगी सिद्ध हो सकेगी; ऐसी हमारी आकांक्षा है और अपेक्षा भी।
- प्रबुद्ध शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों के अमूल्य सुझावों का सर्वदा स्वागत है।

–

प्रकाशक

विषय-सूची

1.	माँ, कह एक कहानी	(कविता)	... 5
2.	धरती का स्वर्ग	(यात्रा वृतान्त)	... 11
3.	शहर से गाँव की ओर	(कहानी)	... 17
4.	शाहजहाँपुर का खिरनी बाग	(कहानी)	... 24
5.	पंच परमेश्वर	(कहानी)	... 32
6.	मन के साहसी	(प्रेरक प्रसंग)	... 39
7.	जीवन का झरना	(कविता)	... 46
8.	परीक्षा	(कहानी)	... 49
9.	जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी	(लेख)	... 55
10.	भारत की गरिमा	(प्रेरक प्रसंग)	... 62
11.	श्रेय	(कविता)	... 67
12.	राखी की मर्यादा	(एकांकी)	... 71
13.	जेबखर्च	(विदेशी लोककथा)	... 81
14.	मैं कवि कैसे बना	(हास्य व्यंग्य)	... 86
15.	झाँसी की रानी	(प्रेरक प्रसंग)	... 93
16.	विभास की डायरी के पन्ने	(डायरी लेखन)	... 99
17.	पसीने की कमाई	(कहानी)	... 105
18.	कुंडलियाँ	(दोहे)	... 113
❀	**प्रश्न-पत्र–I**		... 117
❀	**प्रश्न-पत्र–II**		... 119

माँ, कह एक कहानी 1

(कविता)

"माँ, कह एक कहानी"
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी?"

"मुझसे कहती है यह चेटी
तू मेरी नानी की बेटी
कह माँ, कह लेटी ही लेटी
राजा था या रानी?
माँ, कह एक कहानी"

"तू है हठी, मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सवेरे
तात भ्रमण करते थे तेरे
जहाँ सुरभि मनमानी।"

"जहाँ सुरभि मनमानी?
हाँ माँ, यही कहानी!"

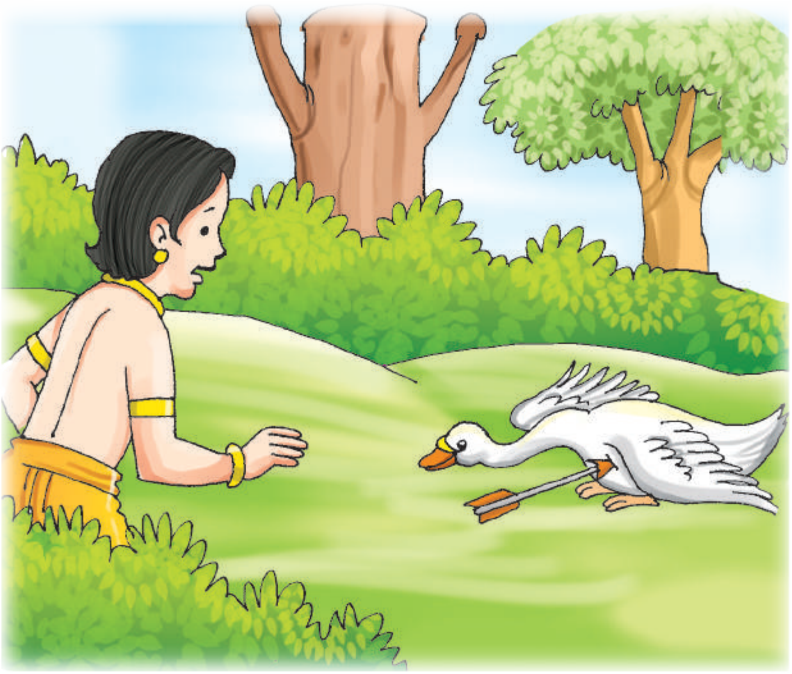

"वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिमबिंदु मिले थे
हलके झोंके हिले-मिले थे
लहराता था पानी।"

"लहराता था पानी?
हाँ, हाँ यही कहानी!"

"गाते थे खग कल-कल स्वर से
सहसा एक हंस ऊपर से
गिरा बिद्ध होकर खर शर से
हुई पक्ष की हानि"

"हुई पक्ष की हानि?
करूणा भरी कहानी!"

"चौंक उन्होंने उसे उठाया
नया जन्म-सा उसने पाया।
इतने में आखेटक आया
लक्ष्य सिद्धि की मानी।"

"लक्ष्य सिद्धि का मानी?
कोमल कठिन कहानी!"

"माँगा उसने आहत पक्षी
तेरे तात किंतु थे रक्षी।
तब उसने जो था खग-भक्षी
हठ करने की ठानी।"

"हठ करने की ठानी?
अब बढ़ चली कहानी!"

"हुआ विवाद सदय निर्दय में
उभय आग्रही थे स्वविषय में
गई बात तब न्यायालय में
सुनी सभी ने जानी।"

"सुनी सभी ने जानी?
व्यापक हुई कहानी!"

"राहुल, तू निर्णय कर इसका
न्याय पक्ष लेता है किसका?
कह दे निर्भय जय हो जिसका
सुन लूँ तेरी बानी।"

"माँ मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।"

"कोई निरपराध को मारे
न्याय क्योंकर उसे उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे
न्याय दया का दानी।"

"न्याय दया का दानी!
तूने गुनी कहानी!"

—मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश में झाँसी के निकट चिरगाँव में 3 अगस्त, सन 1886 ई. को हुआ था। इनके पिता रामशरण गुप्त तथा भाई सियारामशरण गुप्त भी प्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने चिरगाँव तथा झाँसी के मेकडॉनल स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। फिर घर पर रहकर स्वाध्याय से हिंदी, संस्कृत तथा बांग्ला साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का मूल स्वर राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक है। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं-यशोधरा, साकेत, पंचवटी, जयद्रथ वध, भारत-भारती। भारत सरकार द्वारा पद्-भूषण से भी इन्हें अलंकृत किया गया था। ये बारह वर्ष तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे थे।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

चेटी = दासी, सेविका, आखेटक = शिकारी, हठी = ज़िद्दी, सिद्धि = सफलता, मानधन = पुत्र, आहत = घायल, भ्रमण = सैर, तात = पिता, सुरभि = सुगंध, सौरभ, विवाद = कहा-सुनी, तकरार, मनमानी = अपनी इच्छा से, सदय = दयालु, वर्ण = रंग, उभय = दोनों, बिद्ध = बिंधकर, आग्रही = अपनी बात मनवाने के, खर = तेज़धार वाला, लिए अड़े हुए, रक्षक = रक्षा करने वाला, शर = बाण, पक्ष = पंख, तरफ़दारी, वाद-विवाद में किसी, भक्षक = मारने वाला।

श्रुतलेख (Dictation)

लालची, दुकानदार, शिकायत, कृपया, पसंद, सिर्फ़, मृत्यु, जवाब, पुरुष

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कौन किसको कहानी सुना रहा है?

(ख) प्रात:काल उपवन में कौन भ्रमण कर रहा था?

(ग) शिकारी को बाण लगने पर क्या हुआ?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) बुद्ध की पत्नी यशोधरा ने मानधन शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?

(ख) उपवन में कौन-सा पक्षी आहत होकर गिर पड़ा था?

(ग) राहुल के पिता का विवाद किसके साथ हुआ था?

(घ) शिकारी घायल पक्षी पर अपना अधिकार क्यों मानता था?

(ङ) दोनों राजा के दरबार में क्यों गए? वहाँ पक्षी के पक्ष में क्या निर्णय सुनाया गया?

(च) कविता में आपको सबसे अच्छा क्या लगा और क्यों?

(छ) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(i) लक्ष्य सिद्धि का मानी?
कोमल कठिन कहानी!

(ii) रक्षक पर भक्षक को
वारे न्याय दया का दानी।

(iii) हुई पक्ष की हानि?
करूणा भरी कहानी।

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(i) "हुआ विवाद सदय निर्दय में
उभय आग्रही थे स्वविषय में
गई बात तब न्यायालय में
सुन सभी ने जानी।"
"सुनी सभी ने जानी?
व्यापक हुई कहानी!"

(क) किन दोनों के बीच विवाद हो रहा था?

☐ राहुल और यशोधरा ☐ यशोधरा और सिद्धार्थ ☐ शिकारी और सिद्धार्थ

(ख) 'स्वविषय' का क्या अर्थ है?

☐ सारा विषय ☐ अपना विषय ☐ अन्य विषय

(ग) 'उभय' शब्द का क्या अर्थ है?

☐ दो व्यक्ति ☐ अकेला व्यक्ति ☐ अनेक व्यक्ति

(घ) कहानी व्यापक कैसे हुई?

☐ बात न्यायालय तक पहुँच गई। ☐ बात राजा तक पहुँच गई।

☐ बात सामान्य जन तक पहुँच गई।

(ii) "माँ मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।"
"कोई निरपराध को मारे
न्याय क्योंकर उसे उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे
न्याय दया का दानी।"
"न्याय दया का दानी!"
तूने गुनी कहानी!"

(क) 'माँ मेरी क्या बानी' राहुल ने ऐसा क्यों कहा?

☐ वह अपने विचार व्यक्त करने में हिचकिचा रहा था।

☐ वह अपने को केवल श्रोता मान रहा था।

☐ वह उत्तर देने में असमर्थ था।

(ख) राहुल के अनुसार न्याय किसे मिला?

☐ अपराधी को ☐ निरपराध को ☐ न्यायाधीश को

(ग) यशोधरा को क्यों लगा कि राहुल कहानी का अर्थ समझ गया है?

☐ क्योंकि उसे कहानी पसंद आई।

☐ उसने समझा कि रक्षक भक्षक से बड़ा होता है।

☐ उसने शक्तिशाली का पक्ष लिया।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों में से गलत (✗) विकल्प छाँटिए–

कहानी	–	☐ गाथा	☐ व्यथा	☐ कथा
पक्षी	–	☐ खग	☐ अनुचर	☐ विहग
सुरभि	–	☐ तरंग	☐ सुगंध	☐ खुशबू
उपवन	–	☐ बगीचा	☐ तपोवन	☐ वाटिका
आखेटक	–	☐ बहेलिया	☐ शिकारी	☐ गड़रिया
फूल	–	☐ कुसुम	☐ सुमन	☐ चंपा

2. दिए गए शब्दों के सही विलोम पर (✓) का निशान लगाइए–

सदय	–	दयावान	निर्दय	निष्ठुर
सरल	–	कठिन	सहज	कटु
रक्षक	–	तक्षक	संरक्षक	भक्षक
विपक्ष	–	पक्षपात	निष्पक्ष	पक्ष
अन्याय	–	न्यायप्रिय	न्याय	न्यायपूर्ण
लाभ	–	नुकसान	हानि	घाटा

3. नीचे दिए गए अनेकार्थी शब्दों का एक ही वाक्य में दो भिन्न अर्थों में प्रयोग कीजिए–

(क) वर्ण (ख) कल (ग) पक्ष (घ) कर

(ङ) पानी

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- पक्षियों के गिरे हुए पंखों को एकत्रित कीजिए और उन पक्षियों की जानकारी प्राप्त कर कक्षा के डिस्प्ले बोर्ड पर लगाइए–
- 'वृक्ष और मानव', 'पक्षी और शिकारी' के वार्तालाप को कविता रूप में लिखिए।
- गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित कहानियाँ तथा जातक कहानियाँ पढ़िए।
- कविता को कहानी या नाटक के रूप में लिखिए तथा कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- शब्दों को सही क्रम में लिखकर शब्द निर्माण कीजिए–

ला मा स भ न	प नि ध र रा
तू ल कौ ह	धा रा नी ज
र भी त	य शा द
का र प प रो	द वा वि

शिक्षण–संकेत

- विद्यालय के अन्तर्गत सभी बच्चों को पशु पक्षियों के बचाव में जानकारी देते हुए उन्हें गौतम बुद्ध के विषय में महत्त्वपूर्ण तथ्य बताइए।

धरती का स्वर्ग

(यात्रा वृतान्त)

2

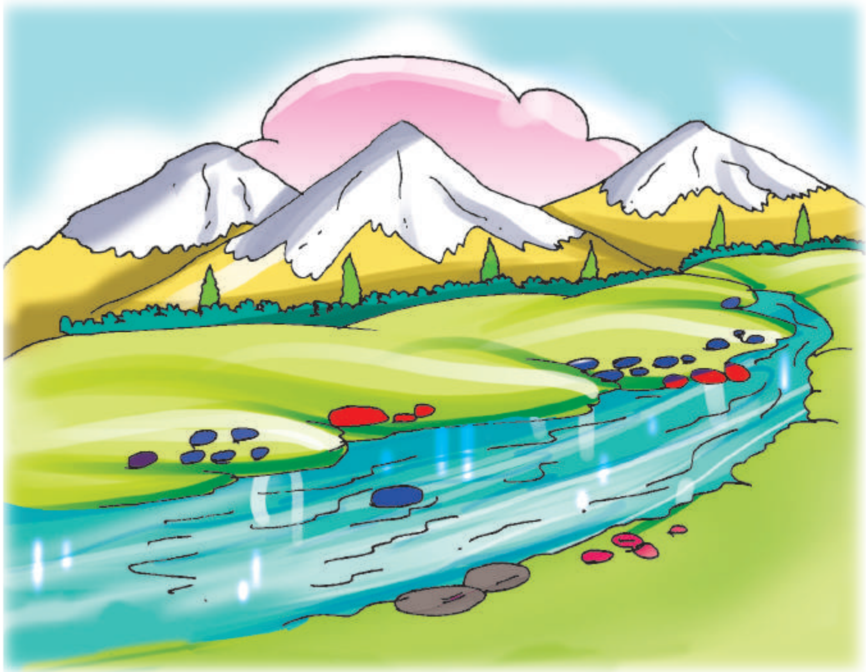

विशाल भारत के दो छोर हैं - कन्याकुमारी और हिमालय। कन्याकुमारी की सागर तरंगें अपने मंद हास से हमें चकित करती हैं। सागर के झाग को देखते-देखते मन आया कि एक बार कश्मीर की बरफीली चोटियों की झाँकी मिले, तो कितना अच्छा हो। यात्रा साहित्य में भी कश्मीर का वर्णन पढ़ते-पढ़ते यह इच्छा बार-बार उभर उठती थी।

ईश्वर की इच्छा मुझे कोरी कल्पना से ही संतुष्ट रखने की नहीं थी। उसने कश्मीर को सचमुच देख लेने का सुयोग दिया और एक दिन गोश्रीनगर (कोच्चि) से मैं श्रीनगर के लिए रवाना हो गया।

कश्मीर का नाम प्रत्येक भारतीय को लुभाता है। किसी ने यहाँ तक कहा है कि पृथ्वी पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है। कहा जाता है कि आज जहाँ घाटी है, वहाँ पहले सतीसर झील थी, जो पर्वतों की बरफ के पिघलने से बनी थी। महाभारत काल से ही कश्मीर के शासकों की गाथाएँ मिलती हैं। आगे प्रामाणिक इतिहास के युग में अशोक ने कश्मीर में अनेक बौद्ध विहार एवं स्तूप बनवाए थे। इतिहास की लंबी परंपरा में सम्राट ललितादित्य का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसका साम्राज्य बहुत ही समृद्धिशाली था। वे स्वयं साहित्यकार और कला प्रेमी थे।

कोच्चि से श्रीनगर की लंबी यात्रा में रेल द्वारा अनेक प्रदेशों से गुजरता हुआ मैं जम्मू (जम्मू तवी) पहुँचा। जम्मू के पर्वतीय नगर से श्रीनगर की बस में बैठते समय मन जोशीला था। प्रभाती पवन में चुभन भरी शीतलता थी। सोचा कि पाँच-छह घंटे की यात्रा होगी। मगर बारह घंटे की यात्रा की बात सुनकर पहले कुछ घबराया। जब सुना

कि एक ही चालक पूरे बारह घंटे बस चलाएगा, तब तो और भी सकपकाया। एक तरफ ऊँचे पहाड़ों से भरी पत्थरों के लुढ़ककर गिरने की संभावना, दूसरी तरफ जरा-सा फिसलने पर पाताल में बहती चिनाब की तीव्र धारा में गिर जाने का भय।

वैसे पहाड़ी पथ पर बस में चलने की आदत केरलवासियों के लिए नई नहीं है। कालीकट एवं कैण्णूर से मैसूर का रास्ता इसी तरह का है। कोट्टायम से तक्कड़ी का रास्ता भी कम पहाड़ी नहीं हैं। वहाँ कभी-कभी इक्के-दुक्के जंगली हाथियों के आक्रमण का भी डर रहता है। तो भी हिमालय की गोदी में जितनी विकट दशा है, उतनी अन्यत्र नहीं।

रास्ते में देखा, कठोर प्रकृति से संघर्ष, समझौता और प्रेम करके कितने ही मामूली लोग अति दुर्गम ऊँचे पर्वतीय प्रदेश में भी कृषक जीवन बिताते हैं, जंगल में मंगल करते हैं। रास्ते में बीच में छोटे-छोटे कस्बे आते हैं, दुकानों की कतारें, छोटी-छोटी पाठशालाएँ, होटल, सिनेमाघर भी। देहाती इन्हें शहर ही मानते हैं।

चढ़ाई और उतराई और उतराई और चढ़ाई का बारी-बारी से अनुभव करते और जहाँ-तहाँ थोड़ा-सा विश्राम, नाश्ता करते हुए हम शाम को साढ़े चार बजे बनिहाल रेस्ट हाउस के सामने पहुँचे। स्थानीय भूगोल की जानकारी के अभाव में कैसे पता लगता कि हम कितनी ऊँचाई पर हैं? यहाँ जलपान और विश्राम में पहले से अधिक समय लगा, तो कुछ देर चहलकदमी करता रहा। बगल की दुकान पर मंगलौर की बनी बीड़ियों का बंडल देखकर कौतुहल हुआ। छोटी-छोटी जरूरी चीजें सारे देश को कैसे एकतामय कर देती हैं। खोजने पर केरल का बना साबुन भी शायद मिल जाता।

बस अब तेज चाल से जवाहर सुरंग की ओर बढ़ी। इस पथ को पार करते हुए पुलकित हुए बिना नहीं रह सकते। इंजीनियरों की अद्‌भुत प्रतिभा, अदम्य साहस और कार्य शक्ति ने इस दुर्गम पर्वत में विशाल सुरंग पथ बनाकर कश्मीर और शेष भारत का पथ पूरे वर्ष चलने लायक बना दिया। प्रकाश धारा बहाती, सीटी बजाती बस सुरंग पथ से आगे बढ़ रही थी। रोमांचकारी दृश्य था। मानव शक्ति से यंत्र शक्ति की श्रेष्ठता को मानते हुए हम आगे रहे थे। विचारों में डुबकी लगाए रहने से पता ही नहीं चला कि जवाहर सुरंग कब पार कर ली। अब बस उतार पर चलने लगी और नए समतल स्थान काजीकुंड में पहुँचे। काजीकुंड से श्रीनगर की यात्रा समतल थी, इसलिए बड़ी तेजी रही। पर्वतीय भूमि की जगह भारत के अन्य नगरों के समान किसी नगर का चक्कर लगाने का ही अनुभव हो रहा था। दो घंटे में हम श्रीनगर पहुँचे।

कश्मीर की राजधानी ज्योतिर्मय नगर श्रीनगर के रजकण को प्रणाम कर मैंने अपने आपको धन्य माना। वर्षों की अभिलाषा जब किसी दिन सफल होती है, तब वह आनंद केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है। बरफ और केसर के नगर में कदम रखने पर मेरी पहली मानसिक प्रतिक्रिया इस सुयोग पर भगवान को धन्यवाद देने की थी।

साफ-सुंदर पर्यटक केंद्र के सामने स्वच्छ सड़के और छोटे-बड़े हरे मैदान बड़े ही मनमोहक लग रहे थे। नगर के बीच झेलम, जगह-जगह उसे पार कराने वाले पुल, जिन्हें कदम कहते हैं, दिखाई दिए। पहले स्त्री-पुरूषों का लंबा कश्मीरी चोगा, ऊनी कपड़े, पगड़ी, टोपी आदि देखते समय अनावश्यक लगते थे। मगर इस भूभाग की जलवायु का प्रत्यक्ष अनुभव करने पर इसकी जरूरत प्रमाणित हो गई, काँगड़ी की आवश्यकता भी विदित हुई।

सहज कौतूहल के कारण कश्मीर की भाषाओं के बारे में प्रश्न करने पर पता चला कि बोलियाँ कई हैं, पर श्रीनगर में मुख्य रूप से कश्मीर और उर्दू बोली जाती हैं।

श्री शंकराचार्य पहाड़ी श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान है। यह मठ बहुत पुराना है और जनश्रुति के अनुसार यहाँ का मंदिर पांडव वंश के राजाओं का बनाया है। यहाँ शिवजी और शंकराचार्य की मूर्तियाँ हैं, और मंदिर तक चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। पहले सड़क से पैदल ही मंदिर पहुँच सकते थे। अब मोटर से भी जाया जा सकता है। इस ऊँचे पहाड़ पर खड़े होकर श्रीनगर का काफी बड़ा हिस्सा दिखाई देता है। श्रीनगर की डल झील, तैरते बाग और उनके चारों ओर की पहाड़ियों के निराले दृश्य बड़े ही मनोहारी है। केरल में जन्में जगद्गुरू शंकराचार्य जी को उत्तर भारतीय सीमा पर इस गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखकर मेरा मन गर्व का अनुभव कर रहा था।

पहाड़ी से उतरकर सड़क पर आया, तो सामने डल झील में शिकारे हवा के झोंकों से झुम रहे थे। डल झील कश्मीर की जान है। शायर इसकी तारीफ करते नहीं अघाते, छायाकार इसकी रंगीन छवियों को भिन्न-भिन्न कोणों से अब भी उतारते रहते हैं।

प्रथम दृष्टि पर मेरा मन कहने लगा- कोच्चि की विशाल झील के सामने यह कुछ भी नहीं हैं। पर पहाड़, बरफ, झील की नौका, यात्रा, हाउस बोट आदि अनेक प्रकार के आनंद एक साथ एक ही जगह मिलते हैं, तो कश्मीर में। डल झील उसका मुख्य केंद्र है।

जब हम डल झील पहुँचे, तब साँझ हो गई थी; अतएव सैर करने वालों की भीड़ छँट चुकी थी। इक्के-दुक्के शिकारे तालगति पर चप्पू मारते, भिन्न-भिन्न दिशाओं में भटक रहे थे। एक शिकारे का मल्लाह हमें घुमाने को तैयार हो गया। सिर पर कश्मीरी टोपी, दुबला-पतला तन, छोटी-पतली दाढ़ी, साधारण कपड़े। वह डींग मारने लगा। चंद मिनट ही बीते होंगे कि साथियों को आवाज दे-देकर कुछ बताने लगा। उसका चेहरा थकावट में भी खिल उठा था। अपने मित्र से मुझे मालूम हुआ कि वह ईद का चाँद देखने की सूचना दे रहा था। हमें झटपट एक किनारे लगाकर वह बोला, ''अब मैं नहीं चलूँगा, नमाज पढ़ूँगा, दूसरे को ले जाइए।''

नए शिकारे का मल्लाह युसूफ किशोर था। उसके हाथ बड़ी फुरती से चप्पू चला रहे थे। मेरे साथी भी साथ दे रहे थे। मौज में मल्लाह के गले से सुरीली आवाज आने लगी। ठेठ कश्मीरी लोकगीत और ठंठ देहाती कंठ। दो-चार पंक्तियाँ ही थीं, उन्हीं को बार-बार दुहरा रहा था। कश्मीर की मिट्टी में ही प्यार-मुहब्बत की महक है। वहाँ की प्रकृति ने जिस प्रकार मिठास और मोहक रंग सेब और केसर में भर दिए हैं, उसी प्रकार की मिठास और रंग यहाँ के किशोर और किशोरियों को दिल खोलकर प्रदान किए हैं।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

हास = हँसी, जनश्रुति = परंपरा से चली आने वाली बात, प्रतिभा = विलक्षण बुद्धि, सुयोग = अच्छा अवसर, प्रतिष्ठित = विराजमान, ज्योतिर्मय = प्रकाशयुक्त, लुभाना = आकर्षित करना, कोरी कल्पना = यथार्थ से दूर की कल्पना, मनोहारी = मन को हर लेने वाला, अन्यत्र = और कहीं, प्रभाती = प्रभात काल की, मोहक = मोह लेने वाला, पुलकित = आनंदित, विकट =

भयंकर, अदम्य = जिसे दबाया न जा सके, दुर्गम = जहाँ जाना कठिन हो, शिकारा = एक लंबी नाव जिसके बीच में बैठने का स्थान छायादार होता है।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लेखक कहाँ से श्रीनगर के लिए रवाना हुआ?

(ख) लेखक जम्मू किस साधन से पहुँचा?

(ग) बनिहाल में क्या देखकर लेखक को कौतूहल हुआ?

(घ) काजीकुंड से श्रीनगर तक की यात्रा कितने समय में पूरी हुई?

(ङ) श्रीनगर में मुख्य रूप से कौन सी भाषाएँ बोली जाती हैं?

(च) नए शिकारे के मल्लाह का क्या नाम था?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) कन्याकुमारी की सागर तरंगें अपने मंद हास से हमें चकित करती हैं।

____

(ख) प्रभाती पवन में चुभन भरी शीतलता थी।

____

(ग) वहाँ की प्रकृति ने जिस प्रकार मिठास और मोहक रंग सेब और केसर में भर दिए हैं, उसी प्रकार की मिठास और रंग यहाँ के किशोर और किशोरियों को दिल खोलकर प्रदान किए हैं।

____

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) श्रीनगर के बीच _______________

☐ चिनाब नदी बहती है। ☐ झेलम नदी बहती है। ☐ व्यास नदी बहती है।

(ख) श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान _______________

☐ श्री शंकराचार्य पहाड़ी है। ☐ श्री अमरनाथ पहाड़ी है। ☐ जवाहर पहाड़ी है।

(ग) जनश्रुति के अनुसार श्रीनगर के मठ का मंदिर _______________

☐ रघुवंश के राजाओं का बनाया हुआ है।

- [ ] कौरव वंश के राजाओं का बनाया हुआ है।
- [ ] पांडव वंश के राजाओं का बनाया हुआ है।

3. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) कश्मीर को पृथ्वी का ______________ कहा गया है।

(ख) ______________ ने कश्मीर में अनेक बौद्ध विहार एवं स्तूप बनवाए थे।

(ग) कश्मीर की राजधानी ______________ है।

(घ) श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान ______________ है।

(ङ) श्रीनगर में मुख्य रूप से ______________ और ______________ भाषाएँ बोली जाती हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखक के मन में कश्मीर देखने की इच्छा क्यों हुई?

(ख) कश्मीर के इतिहास में सम्राट ललितदित्य का नाम क्यों उल्लेखनीय है?

(ग) बारह घंटे की यात्रा की बात सुनकर लेखक क्यों घबरा गया?

(घ) रास्ते में लेखक ने क्या-क्या देखा?

(ङ) जवाहर सुरंग से गुजरते हुए लेखक को कैसा लगा?

(च) श्रीनगर पहुँचने पर लेखक की पहली प्रतिक्रिया क्या थी?

(छ) डल झील को देखकर लेखक के मन में पहले क्या विचार आया? बाद में उसने अपना विचार क्यों बदला?

(ज) किस बात को देखकर लेखक का मन गर्व का अनुभव कर रहा था?

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. पद और पदबंध–

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयोग होता है, तो 'पद' कहलाता है। जब एक से अधिक पद एक व्याकरणिक इकाई का कार्य करते हैं, तो वे 'पदबंध' कहलाते हैं; जैसे–

'कन्याकुमारी की सागर तरंगे अपने मंद हास से हमें चकित करती हैं।'

इस वाक्य में 'कन्याकुमारी की सागर तरंगें' में प्रयुक्त सभी पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई के रूप में कार्य कर रहे हैं, अत: यह एक पदबंध है।

2. निम्नलिखत वाक्यों में एक-एक पदबंध छाँटिए–

(क) ईश्वर की इच्छा मुझे कोरी कल्पना से संतुष्ट करने की नहीं थी।

(ख) महाभारत काल से ही कश्मीर के शासकों की गाथाएँ मिलती हैं।

(ग) बगल की दुकान पर मंगलौर में बनी बीड़ियों का बंडल देखकर कौतुहल हुआ।

3. संधि विच्छेद कीजिए–

दुर्गम	______	अनावश्यक	______	शंकराचार्य	______
ज्योतिर्मय	______	मनोहर	______	ललितादित्य	______
हिमालय	______	पवन	______	प्रत्यक्ष	______

4. निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

समृद्धिशाली ____________________

सुयोग ____________________

अन्यत्र ____________________

स्थानीय ____________________

कौतूहल ____________________

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- किसी ऐसे ही एक पर्वतीय स्थान के चित्र एकत्रित करके, उस स्थान के बारें में जानकारी प्राप्त कर एक फाइल तैयार कीजिए।
- कश्मीर को भारत का स्वर्ग क्यों कहा गया हैं, विस्तृत रूप से अध्ययन करके बताइए।

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- हमारे देश में स्थित अनेकों सुन्दरम स्थानों पर एक कोलार्ज तैयार करिए तथा उन स्थानों के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य एकत्रित करके एक फाइल बनाइए।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को कुछ ऐसे ही सौन्दर्यात्मक स्थलों के बारे में जानकारी दें।
- विभिन्न प्रांतो के विभिन्न कौतूहल स्थान व 'यात्रा' के विषय में बच्चों को कक्षा में जानकारी दीजिए।

शहर से गाँव की ओर 3

(कहानी)

मोहन ने जैसे ही कमरे में अपना बैग रखा, उसकी छोटी बहन दीपा चिल्लाई– ''माँ! माँ! दादा आ गया।'' माँ कौशल्या गाय को चारा दे रही थी। दीपा के तीव्र स्वर ने उसके मन में हर्ष का संचार कर दिया। वह तेज कदमों से कमरे में आई। अपने खोये हुए पुत्र मोहन को सामने देखकर अवाक् रह गई। उसके मुँह से बस दो चार शब्द ही निकले– ''तू.... कहाँ.... था.... रे?'' फिर उसका गला भर आया। उसकी आँखें छलछला उठीं। कौशल्या ने मोहन को गले से लगा लिया। पूरे नौ वर्षों बाद माँ को सामने देख मोहन की वाणी भी मूक हो गई।

उसे आभास हुआ, जैसे माँ के आँसुओं के वेग में उसके सारे शब्द बह गए हों। वह भी माँ के सीने से लगकर रोने लगा।

जलपान के पश्चात् स्थिति सामान्य हो गई। बातों का सिलसिला आरंभ हुआ। माँ पूछती रही और मोहन उत्तर देता रहा। मोहन को अपने बचपन के मित्र प्रताप की याद आई। उसने माँ से पूछा- ''माँ, प्रताप कैसा है?''

"ठीक है। तुम्हें बहुत याद करता है।'' माँ ने उत्तर दिया।

"क्या तुमसे मिलने आता है? '' मोहन ने जिज्ञासा प्रकट की।

"हाँ–हाँ, अक्सर आता जाता रहता है। अचानक तेरे चले जाने से वह भी बहुत दुखी था।''

"अब कौन –सी कक्षा में पढ़ता है?''

"तीन साल पहले उसने बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की है। उसे तो नौकरी भी मिल गई थी लेकिन वह नौकरी पर नहीं गया।''

प्रताप के बारे में माँ की बातें सुनकर मोहन अतीत में खो गया। वह सोचने लगा कि यदि नौ वर्ष पहले वह घर से न भागा होता तो अब तक बी.ए. उत्तीर्ण कर चुका होता।

मोहन और प्रताप बचपन से ही गहरे मित्र थे। सारे अमृतपुर गाँव में इनकी मित्रता की चर्चा थी। मोहन कुछ चंचल प्रवृति का

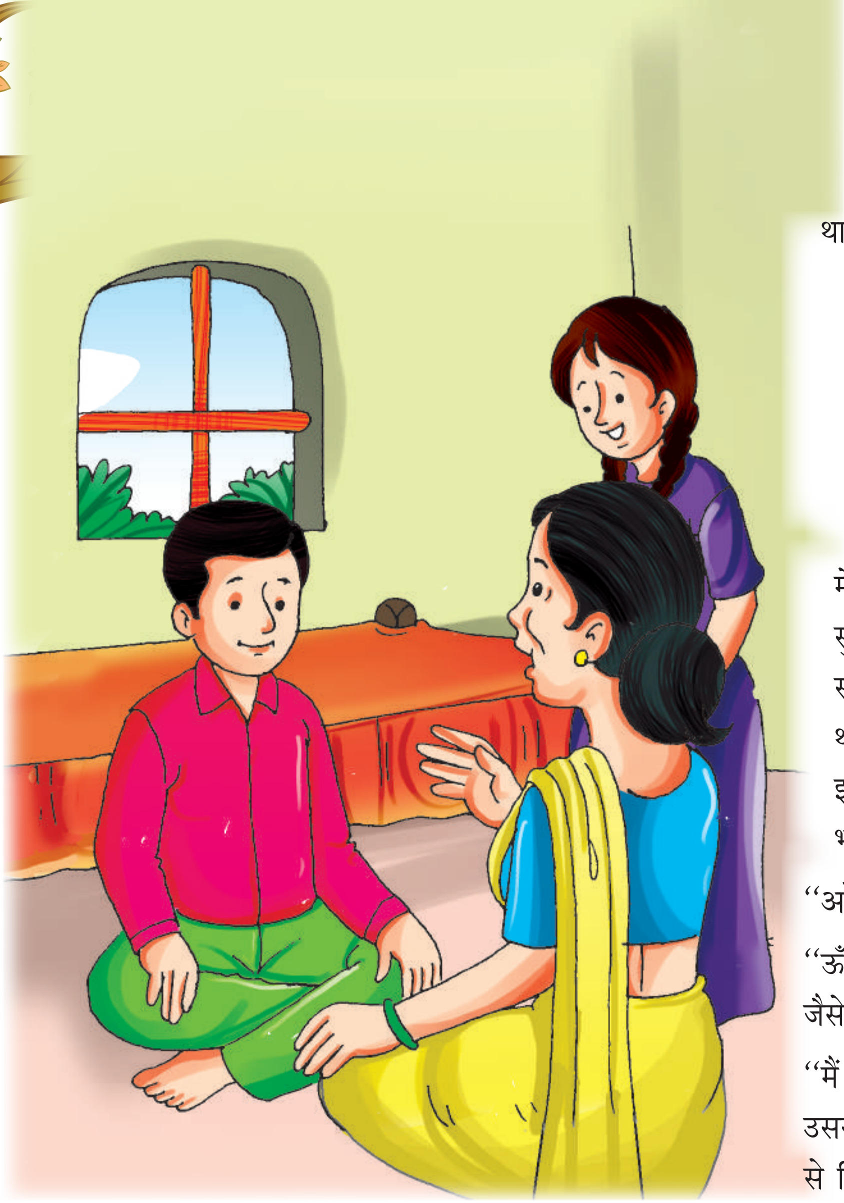

था। उसमें धैर्य का अभाव था। दूसरी और प्रताप आरंभ से ही गंभीर और चिंतनशील था। दोनों मित्र सामान्य परिवार के थे। खेती–बाड़ी और पशुपालन से गुजर–बसर होती थी। बस अंतर यह था कि मोहन के सिर से बचपन से ही पिता का साया उठ गया था। माँ ने अथक परिश्रम करके मोहन और उसकी बहन दीपा का पालन–पोषण किया था। मोहन का मन खेती–बाड़ी में नहीं लगता था। उसने शहर की झूठी–सच्ची कहानियाँ सुनी थीं। उसके मन में सपने पलने लगे थे। उसके यही सपने उसे अमृतपुर से दिल्ली लेकर उड़ गए। उसे पता था माँ कभी भी उसे दिल्ली जाने की अनुमति नहीं देंगी। इसलिए वह बिना कुछ कहे एक दिन स्कूल से ही दिल्ली भाग गया।

"अरे! क्या सोच रहा है?" माँ ने पूछा।

"ऊँ ऽऽ....। कुछ नहीं माँ ...कुछ नहीं।" मोहन को लगा जैसे माँ ने उसे नींद से जगा दिया।

"मैं जानती हूँ, तू प्रताप के बारे में ही सोच रहा होगा। जा, उससे मिल ले। वह अपने बगीचे में होगा। "हाँ माँ, मैं प्रताप से मिल कर आता हूँ।"

मोहन प्रताप के बगीचे पर पहुँचा। उसने देखा कि प्रताप पेड़ों के थाले बना रहा था। चारों ओर लगे आड़ू, नाशपाती, खुबानी और सेब के पेड़ प्रताप के परिश्रम, लगन और आत्मविश्वास की कहानी कह रहे थे।

मोहन चुपचाप देखता रहा। उसने अनुभव किया कि प्रताप उसकी अपेक्षा अधिक हृष्ट–पुष्ट है। अचानक काम खत्म हुआ। प्रताप के हाथ रुक गए।

उसके गुलाबी चेहरे पर पसीने की बूँदे उभर आई थीं। उन बूँदो को देखकर ऐसा लगता था मानो बुरांस के फूल पर ओस बिंदु झिलमिला रहे हों।

प्रताप ने अपनी नजर उठाई। वह मोहन को देखकर आश्चर्यचकित हो गया।उसके मन में भी मोहन की ही भाँति एक हूक उठी। दोनों एक दूसरे से लिपट गए। फिर दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गए। बातों की झड़ी लगी।

प्रताप ने पूछा– "पहले तो यह बता कि इतना कमजोर क्यों हो रहा है?"

"कमजोर तो नहीं हूँ। ठीक–ठीक हूँ।" मोहन ने अपने मन की पीड़ा छिपाते हुए उत्तर दिया।

"आजकल कहाँ है तू?" प्रताप ने बात आगे बढ़ाई।

"दिल्ली"

"दिल्ली?.... दिल्ली में क्या करता है?"

"नौकरी"

"नोकरी? कैसी नोकरी?"

"एक सेठ के घर में घरेलू नौकर हूँ।"

"तनख्वाह क्या मिलती है?"

"एक हजार रुपया महीना।"

"खाने–पीने और रहने की क्या व्यवस्था है?"

"सेठ के धर में ही खाता–पीता हूँ। वहीं उसके गैराज में सो जाता हूँ।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि तू पूरे दिन का नौकर है। रोटी पकाने से लेकर बर्तन माँजने तक का काम करना पड़ता होगा।"

"हाँ, ऐसा ही है।"

क्षणभर के लिए बातों का सिलसिला रुका। प्रताप की दृष्टि मोहन के चेहरे पर ठहर गई। जाने क्यों मोहन झेंप गया। उसने नजर झुकाते हुए प्रताप से कहा– "पढ़ने में तूने बहुत तरक्की की। माँ बता रही थी कि तुझे नौकरी भी मिल गई थी।"

"हाँ। मैंने बारहवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, तीन हजार रुपए महीने की एक नौकरी मुरादाबाद में मिल गई थी, लेकिन मैं गया नहीं।"

"क्यों?" मोहन ने जिज्ञासा प्रकट की।

"मैंने आत्ममंथन किया।"

"कैसा आत्ममंथन?"

"यानी कि मैंने बहुत सोच–विचार किया। फिर निर्णय किया कि मैं नौकरी के लोभ में अपना गाँव और घर छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

"ऐसा निर्णय क्यों किया?"

"मैंने सोचा, यदि मैं नौकरी

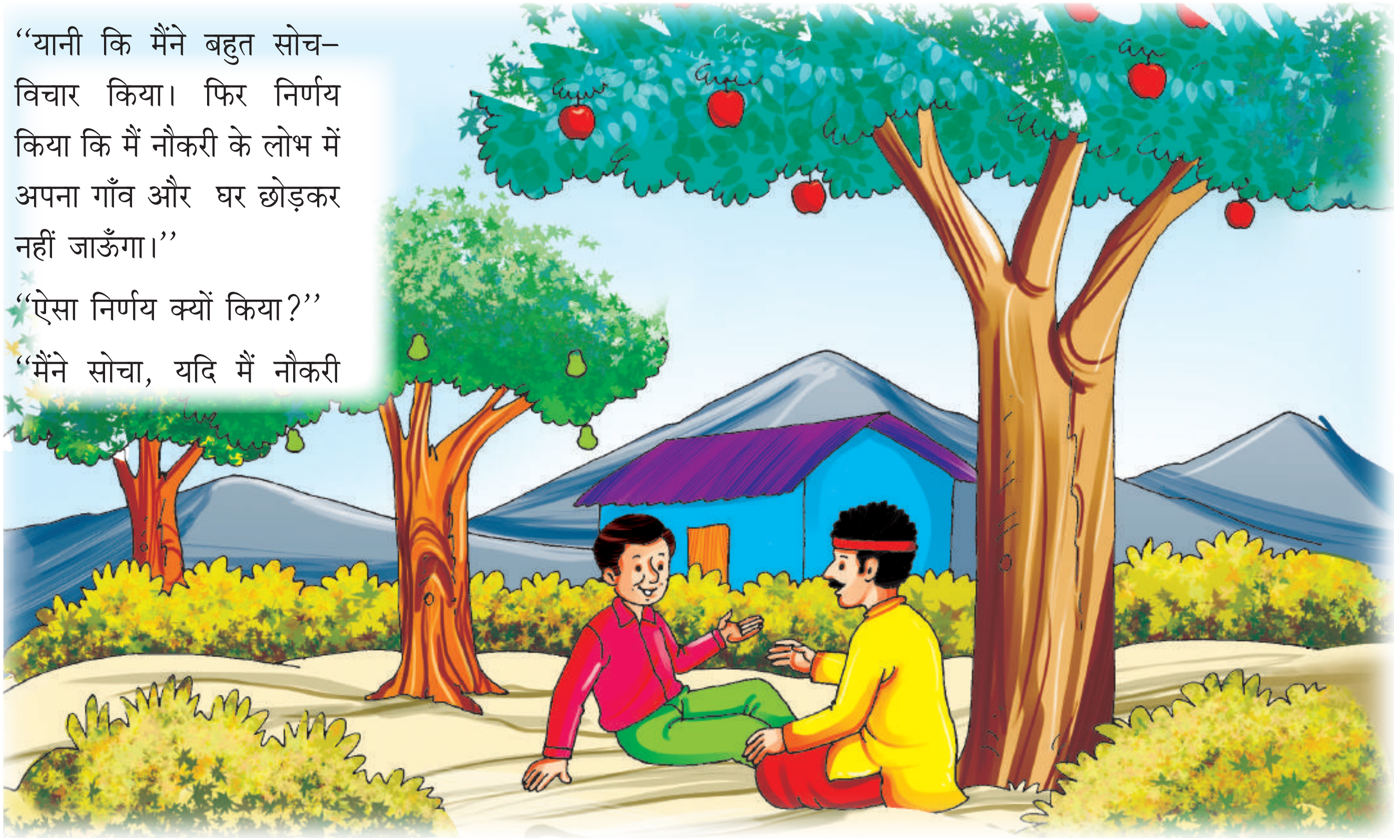

पर शहर जाता हूँ तो बूढ़े माता– पिता को साथ रखकर तीन हजार रुपए में गुजर–बसर करना कठिन होगा। साथ ही जमीन–जायदाद, पशु, शुद्ध–खानपान, गाँव का प्राकृतिक स्वच्छ वातावरण और यहाँ के हितैषियों से भी हाथ धोना पड़ेगा।... मैंने यह भी सोचा कि तीन हजार रुपए तो में अपने गाँव में भी कमा सकता हूँ। वह भी स्वतंत्र रुप से, बिना किसी कि गुलामी किए हुए।''

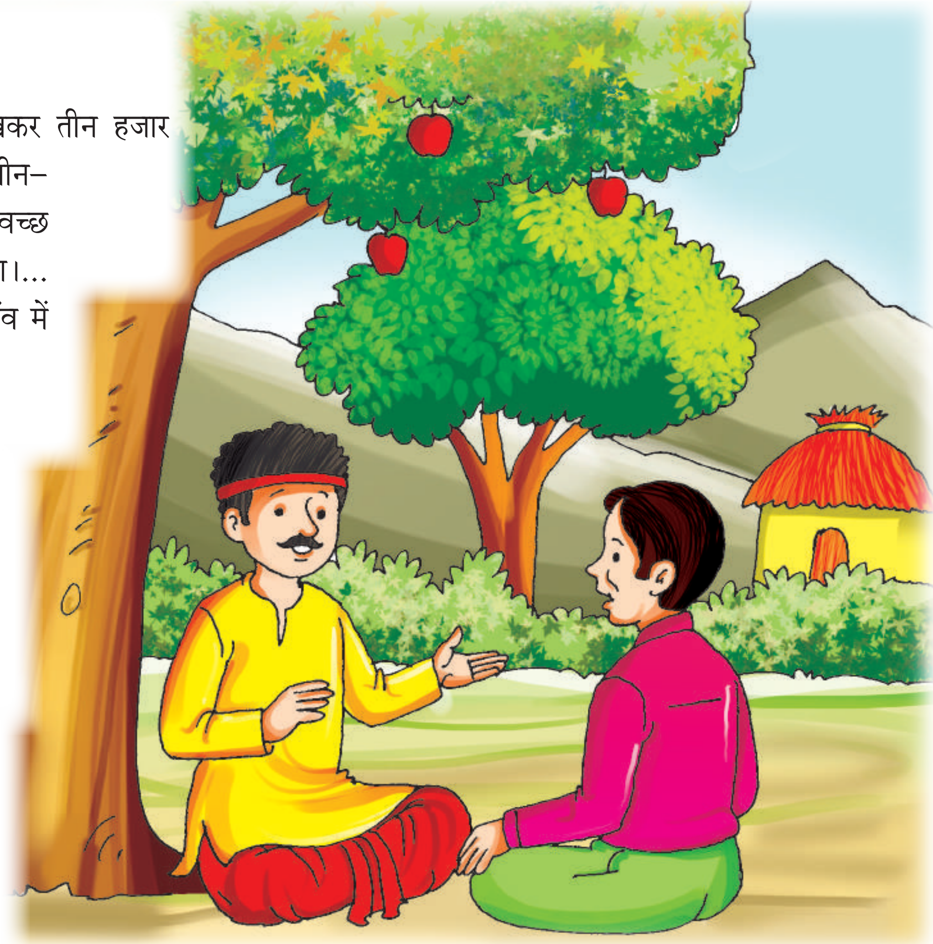

''फिर तूने क्या किया?''मोहन बीच में ही बोला।

''मैंने कठोर परिश्रम किया। खेती और बागवानी को आजीविका का आधार बनाया। फलदार वृक्ष लगाए। ब्लाक से ऋण लेकर दो उत्तम नश्ल की गायें खरीदीं। यहाँ मैं गाय का ताजा दूध पीता हूँ। अपनी धरती के अन्न–फल और सब्जियाँ खाता हूँ। गाँव के शुद्ध वातावरण में स्वस्थ रहता हूँ। माता–पिता की सेवा करता हूँ। इसके अतिरिक्त बचा हुआ अन्न, फल, सब्जियाँ तथा दूध बाजार में बेचकर तीस–चालीस हजार सालाना कमा भी लेता हूँ।

मोहन, खुद सोचकर देख कि अच्छा जीवन क्या होता है। रहने को अपना मकान, खाने पीने के लिए शुद्ध व पौष्टिक भोजन, शुद्ध वायु व शीतल जल, और इससे बढ़कर अपने माता–पिता, बुजुर्गो की सेवा का अवसर। शहर की जिंदगी की चकाचौंध में इंसान इन सबसे दूर सिर्फ एक दिखावटी और मशीनी जिंदगी ही तो जी रहा है। यह सब विचार कर मैंने अपने गाँव में ही मेहनत और सम्मान की जिंदगी जीने का निर्णय किया है।

अपनी बात बताकर प्रताप चुप हो गया। मोहन मन ही मन उसके निर्णय की प्रशंसा कर रहा था। उसने अनुभव किया कि प्रताप में उससे कहीं अधिक आत्मविश्वास था, जो उसे दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति की ओर बढ़ने को प्रेरित कर रहा था।

अचानक प्रताप ने पूछा– ''अब कब लौटने का विचार है?'' मोहन की भावमुद्रा बदल गई–

''अब कभी नहीं, प्रताप ... कभी नहीं। तुम्हारी बातें सुनकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि परदेश की अपमान भरी चुपड़ी रोटी से घर की सूखी रोटी उत्तम है। मैं भी अब गाँव में रहकर तुम्हारी तरह मेहनत और लगन से अपने टूटे सपनों को पूरा करूँगा। कठिनाई पड़ने पर तुमसे सलाह लूँगा। बचपन की तरह अब भी मेरा साथ दोगे न प्रताप?''

—अष्वघोष

लेखक परिचय

अष्वघोष का जन्म 20 जुलाई 1941 में उत्तर-प्रदेश मे बुलंदशहर में हुआ। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम.ए., पी. एच.डी. की। इन्हें उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान तथा भारतीय बाल कल्यण संस्थान कानपुर द्वारा सम्मानित किया गया। इनके प्रसिद्ध कविता संग्रह हैं-'तूफान में जलपान-, 'अमा का खत' और वह-एक आवारा लड़की'। 'सपाट धरती की फसलें' और 'गई सदी के स्पर्श' इनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

दादा = बड़ा भाई, संचार = फैलना, अवाक् = हैरान, वाणी = बोल, आभास = अहसास, अनवरत = लगातार, जिज्ञासा = जानने की इच्छा, चिंतनशील = सोच विचार करने वाला।, अपेक्षा = तुलना में, हृष्ट—पुष्ट = हट्टा— कट्टा, व्यवस्था = प्रबंध, निष्कर्ष = परिणाम।, दृष्टि = नजर, तत्काल = तुरंत, ऋण = कर्ज, आत्ममंथन = मन ही मन विचार करना, आजीविका = जीवन निर्वाह का साधन

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) मोहन और प्रताप कौन थे?
(ख) मोहन कहाँ चला गया था?
(ग) मोहन शहर में क्या करता था?
(घ) मोहन और प्रताप में से कौन और किस प्रकार समझदार निकला?
(ङ) इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दीपा जोर से क्यों चिल्लाई?

____

(ख) मोहन कहाँ से और कितने दिन बाद वापस आया था?

____

(ग) मोहन ने अपने मित्र के बारे में क्यों पूछा?

____

(घ) मित्र से मिलने वह कहाँ गया? दोनों मित्र कैसे मिले?

____

(ङ) मोहन शहर में क्या कार्य करता था?

____

(च) मोहन घर छोड़कर शहर क्यों गया?

____

(छ) "प्रताप के बगीचे में लगे पेड़ उसके परिश्रम, लगन और आत्मविश्वास की कहानी कह रहे थे" – कैसे?

(ज) मोहन अपने बारे में प्रताप को बताकर क्यों झेंप गया?

(झ) प्रताप ने किस विचार पर आत्ममंथन किया? उसका क्या परिणाम निकला?

(ञ) प्रताप की बातों का मोहन पर क्या प्रभाव पड़ा?

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) मोहन का स्वभाव कैसा था?

☐ गंभीर ☐ चंचल ☐ चिंतनशील

(ख) मोहन के मन में क्या सपने पल रहे थे?

☐ परदेश जाने के ☐ खूब पैसा कमाने के ☐ बड़ा आदमी बनने के

(ग) प्रताप के बगीचे में लगे पेड़ बताते थे कि वह–

☐ परिश्रमी हैं। ☐ आत्मविश्वासी है। ☐ दोनों है।

(घ) मोहन का मन खेती–बाड़ी में नहीं लगता था क्योंकि–

☐ वह सरकारी नौकरी करना चाहता था।

☐ उसके पास भूमि नहीं थी।

☐ उसके सपने बहुत ऊँचे थे।

3. मोहन और प्रताप की विशेषताओं को एक-एक अनुच्छेद में लिखिए–

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों में से अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत के शब्दों को छाँटिए–

मशीन, गुम, गुजर–बसर, स्कूल, इंसान, दृष्टि, स्वतंत्र, नजर, गैराज, उत्तीर्ण, आत्ममंथन, तरक्की, बाजार, हृदय, प्रथम।

अंग्रेजी ____________ संस्कृत ____________

उर्दू ____________

2. एकवचन से बहुवचन बनाते समय 'अ' और 'आ' अंत वाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'अ' के स्थान पर 'एं' और 'आ' के साथ 'एँ' जोड़ दिया जाता है। जैसे–

बात	बातें	कक्षा	कक्षाएँ
गाय	गायें	सेवा	सेवाएँ

उसी नियमानुसार निम्न शब्दों के बहुवचन बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

माता, मशीन, रात, लता, बहिन, याद, कविता, सभा, सेवा, हवा।

3. **कुछ सर्वनाम विशेषण रुप में भी प्रयुक्त होते हैं। उस समय उनकी पहचान कठिन हो जाती हैकि ये सर्वनाम हैं या विशेषण। परंतु सर्वनाम शब्द तभी विशेषण कहलाऐंगे जब उनके साथ संज्ञा का भी प्रयोग हो। सर्वनाम शब्द सदैव अकेले आते हैं, क्योंकि ये संज्ञा के स्थान पर आते हैं। सार्वनामिक विशेषणों के साथ विभक्ति चिह्न नहीं लगते, परंतु विशेष्य के कारक और वचन के अनुसार उनके रुप बदल जाते हैं। जैसे–**

सर्वनाम — वह खेत जोत रहा है।

सार्वनामिक विशेषण — वह किसान खेत जोत रहा है।

- **इन वाक्यों के सामने सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण पहचान कर लिखिए–**

(क) यह भवन सुंदर है। ____________________

यह सुंदर भवन है। ____________________

(ख) वह मिठाई खा रहा है। ____________________

वह बच्चा मिठाई खा रहा है। ____________________

(ग) ये खिलाड़ी मैच खेल रहे हैं। ____________________

ये मैच खेल रहे हैं। ____________________

4. **इन मुहावरों का अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग किजिए–**

सपने पूरा होना ____________________

साया उठ जाना ____________________

नजर झुकाना ____________________

दिन दूनी रात चौगुनी ____________________

5. **विलोम लिखिए–**

शुद्ध	________	प्रशंसा	________	उत्तीर्ण	________
मित्र	________	उन्नति	________	प्राकृतिक	________
स्वच्छ	________	गुलामी	________	ऋण	________
पौष्टिक	________				

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **स्वरोजगार और नौकरी में क्या अंतर है? इस विषय पर अपने विचार एक अनुच्छेद में लिखिए–**
- **इस कहानी का नाट्य रूपांतर करके कक्षा में अभिनय कीजिए–**

शिक्षण–संकेत

- इस पाठ से प्राप्त शिक्षा के बारे में बच्चों को ज्ञान दें तथा उन्हें बताइए कि आकस्मिक इच्छाऐं तथा बिना सोचे किये गये विचार हमारे लिए किस प्रकार अनुपयोगी व हानिकारक होते हैं।

शाहजहाँपुर का खिरनी बाग 4

(कहानी)

यह शाहजहाँपुर रेलवे स्टेशन है। स्टेशन पर इधर-उधर नजर दौड़ाता हूँ, पर शहीदों की इस नगरी के स्टेशन पर उनके नाम पर कुछ नहीं है, जबकि शाहजहाँपुर जनपद में पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल', अशफाकउल्ला खाँ और रोशन सिंह जैसे तीन-तीन क्रांतिकारी शहीदों ने जन्म लिया था।

स्टेशन से बाहर निकलता हूँ और दाहिनी ओर चलकर रिक्शे से खिरनी बाग की ओर चल देता हूँ। इसे सड़क कहूँ या गलियारा, गड्ढों से पटी यह सड़क नगर की मुख्य सड़क है। कुछ कहते नहीं बनता है, सड़क में गड्ढें हैं या गड्ढें में सड़क है।'

बहरहाल मैं कुछ नहीं कह सकता किंतु शासन से जरूर कह सकता हूँ कि वह एक आयोग बैठा दे जो यह तय करे कि 'सड़क में गड्ढें हैं या गड्ढों में सड़क है। मै रिक्शा—चालक रामदुलारे से पूछता हूँ- "तुम बिस्मिल के विषय में कुछ जानते हो?"

"कौन बिस्मिल बाबू! जो तंबाकू की दुकान करते हैं? कबाड़िया हैं वे।"

"नहीं भाई,"मैं कुछ झुँझलाकर कहता हूँ- "अरे, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, जिन्हें अंग्रेजों ने फाँसी पर लटकाया था।"

"हाँ बाबू जानता हूँ। उनकी मूर्ति वहीं खिरनी बाग में ही तो लगी है। हर साल वहाँ जलसा होता है। बड़े-बड़े नेता आते हैं, मिठाई, चाय और न जाने क्या-क्या उड़ता है। हम लोगों को सवारियाँ तो मिलती हैं उस दिन, पर ये नेता लोग पैसा देने में बड़ी कंजूसी करते हैं।"

बातें हो रही हैं कि खिरनी बाग आ जाता है। मैं रिक्शा-चालक को भाड़ा देकर विदा करता हूँ और खंदकों से पटी हुई सड़क पर बच-बचाकर चलता हूँ। काली मंदिर के सामने एक गेट बना है। जिस पर 'बिस्मिल द्वार, बिस्मिलनगर' लिखा है। एक आधुनिक तरुण से पूछता हूँ- "यहाँ रामप्रसाद बिस्मिल का मकान किधर है?" वे कहते हैं- "मैं तो नहीं बता सकता। बाहर का रहने वाला हूँ। यहाँ आए हुए अभी छह-सात महीने ही हुए हैं, आप उस पान की दुकान पर पूछ लो।"ऐसा कहकर वे आगे बढ़ जाते हैं।

"मुझे बिस्मिल जी का जन्मस्थान बता दीजिए।" पान की दुकान वाले से पूछता हूँ। वह कहता है "अच्छा-अच्छा। आप अखबार वाले हैं, किताब वाले हैं....ओ, आगे वाला जो मोड़ है, उस कोलिया में चले जाइए, फिर बाएँ घूम जाइएगा।"

उनके निर्देशित रास्ते पर मैं धीरे-धीरे चला जा रहा हूँ। थोड़ा आगे बढ़ने पर एक मोड़ पर फिर

ठिठकता हूँ। एक विद्‌यार्थी हाथ में गैस पेपर लिए परीक्षा की तैयारी में पान मसाला चबाता हुआ टहल रहा है और मुँह से कुछ बुदबुदाता जा रहा है। मुँह से चिरैया नक्षत्र की जैसी फुहारें पन्ने पर पड़ रही हैं। मैं पूछता हूँ- ''बेटा! यहाँ बिस्मिलजी का जन्मस्थान कहाँ है?''वह कहता है- ''वो आगे कुछ-कुछ हरा पुता मकान जो दिखाई देता है,वही है।''

मैं अनमनेपन से आगे बढ़ता हूँ और विचारों की लंबी रील मस्तिष्क में चलने लगती है-'' अपराजेय विश्वप्रसिद्‌ध क्रांतिकारी शहीद का जन्मस्थान स्वतंत्र भारत में पूछ-पूछकर खोजना पड़ रहा है। जहाँ छोटे-छोटे चोर, भ्रष्टाचारी नेताओं के नाम पर न जाने क्या—क्या किया जा रहा है— उनके नाम पर सड़कें बन रही हैं, कॉलेज खुल रहे हैं, अस्पताल तैयार हो रहे हैं— वहाँ एक मकान शहीद के जन्मस्थान तक पहुँचने में दिक्कत हो रही है।

याद आ रही हैं बिस्मिल की वे लाइनें जो जननी-जन्मभूमि के प्रेम में सराबोर होकर उन्होंने फाँसी की कोठरी में लिखी थीं—

हाय! जननी जन्मभूमि छोड़कर जाते हैं हम,

देखना है फिर यहाँ कब लौटकर आते हैं हम।

स्वर्ग के सुख से भी ज्यादा सुख मिला हम को यहाँ,

इसलिए तजते इसे, हर बार शर्माते हैं हम।

ऐ नदी-नालो! दरख्तो! पक्षियो! मेरा कसूर,

माफ करना, जोड़कर हाथ तुमसे फर्माते हैं हम।

माँ। तुझे इस जन्म में कुछ सुख न दे पाए कभी, फिर जन्म लेंगें यहीं, यह कौल कर जाते हैं हम।।

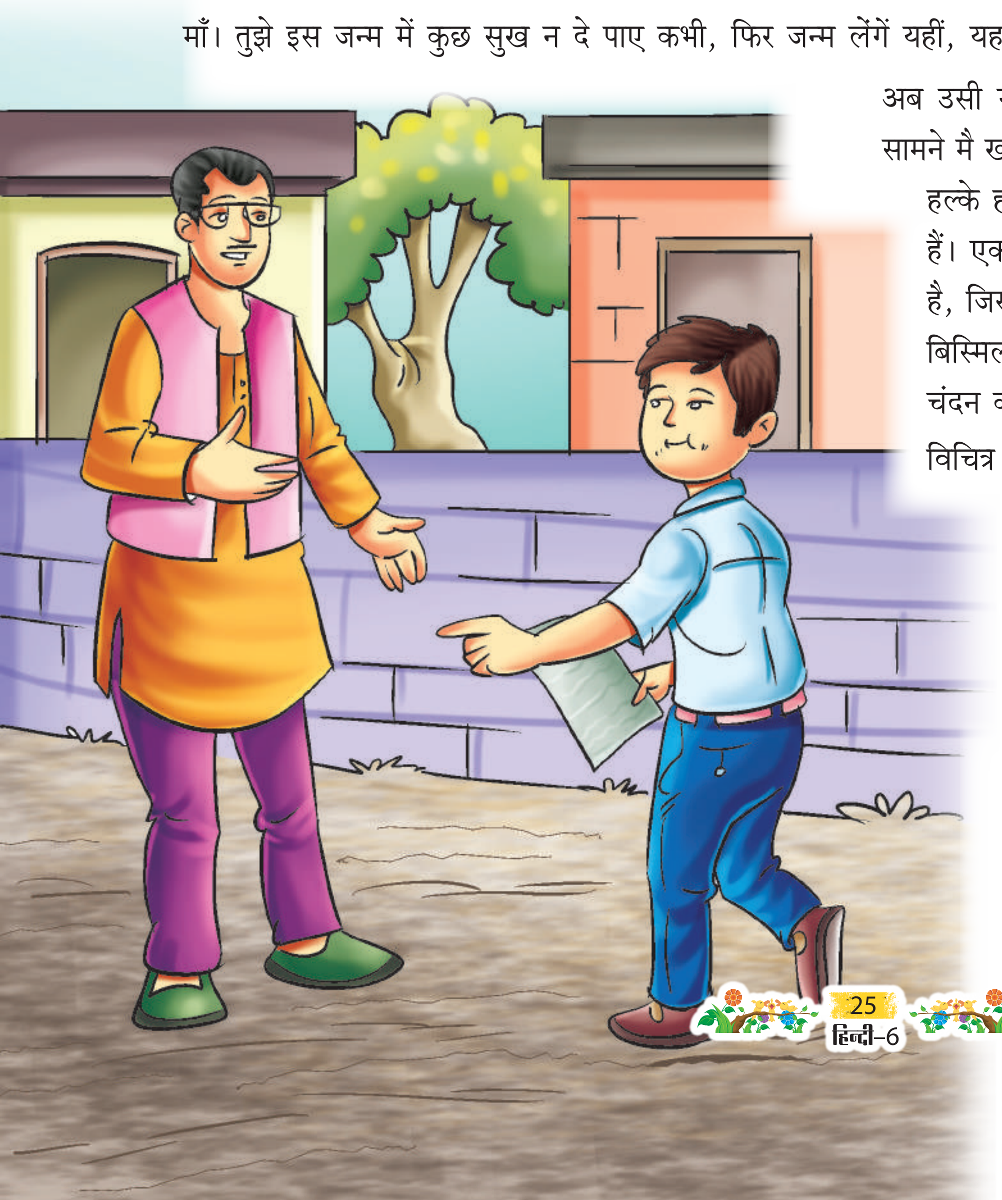

अब उसी गंदी, ऊबड़-खाबड़ गली के मकान नं० 279 के सामने मै खड़ा हूँ। एक मंजिल का अत्यंत साधारण यह मकान हल्के हरे-नीले रंग से पुता है। पुरानी चाल के दो दरवाजे हैं। एक कुछ चौड़ा, दूसरा सँकरा। यही वह पावन धरती है, जिसमें अंग्रेज साम्राज्य को दहलाने वाले पं० रामप्रसाद बिस्मिल ने जन्म लिया था। मैं वहाँ की धूलि को हाथ से चंदन की तरह उठा लेता हूँ और माथे पर चुपड़ लेता हूँ। विचित्र बात! इन धूलि कणों में वो चंदन जैसी शीतलता नहीं है, बल्कि चिनगारियों की चुनचुनाहट महसूस हो रही है। शरीर में एक साथ हजारों आग की लपटें भर जाती हैं। अपने आप- 'इंकलाब जिंदाबाद' अधरों से फूट निकलता है।

इस घर की छत पर एक युवक खड़ा है वह कुछ सकपका जाता है। पूछता है- ''का काम है भैया?'' मैं उसे नीचे बुलाता हूँ। वह बिल्कुल हक्का-बक्का सा खड़ा है। कुछ घबराहट भरे स्वर में कहता है- ''पिता जी को बुलाता हूँ।''

एक गहरे साँवरिया रंग का ढलती उमर का व्यक्ति

मार्कीन की बनियाइन और धोती पहने, सिर के अधपके कुतनू को दाहिने हाथ से सहलाते हुए अत्यंत विनम्र भाव में मेरे सामने खड़ा है। इनका नाम है- श्रीनारायन। ये ही इस घर के मालिक-पुरखा हैं।

''यही बिस्मिल जी का मकान है?'' मेरे यह पूछने पर वह बिल्कुल शांतभाव से कहते हैं—''हाँ साहब! मैंने इसे खरीदा था। इसे बिस्मिल की बहन ने एक चूड़ीवाले के हाथ बारह सौ रुपये में बेचा था। उससे एक दूसरे आदमी ने लिया और फिर मैंने चार हजार में उनसे खरीदा था।''

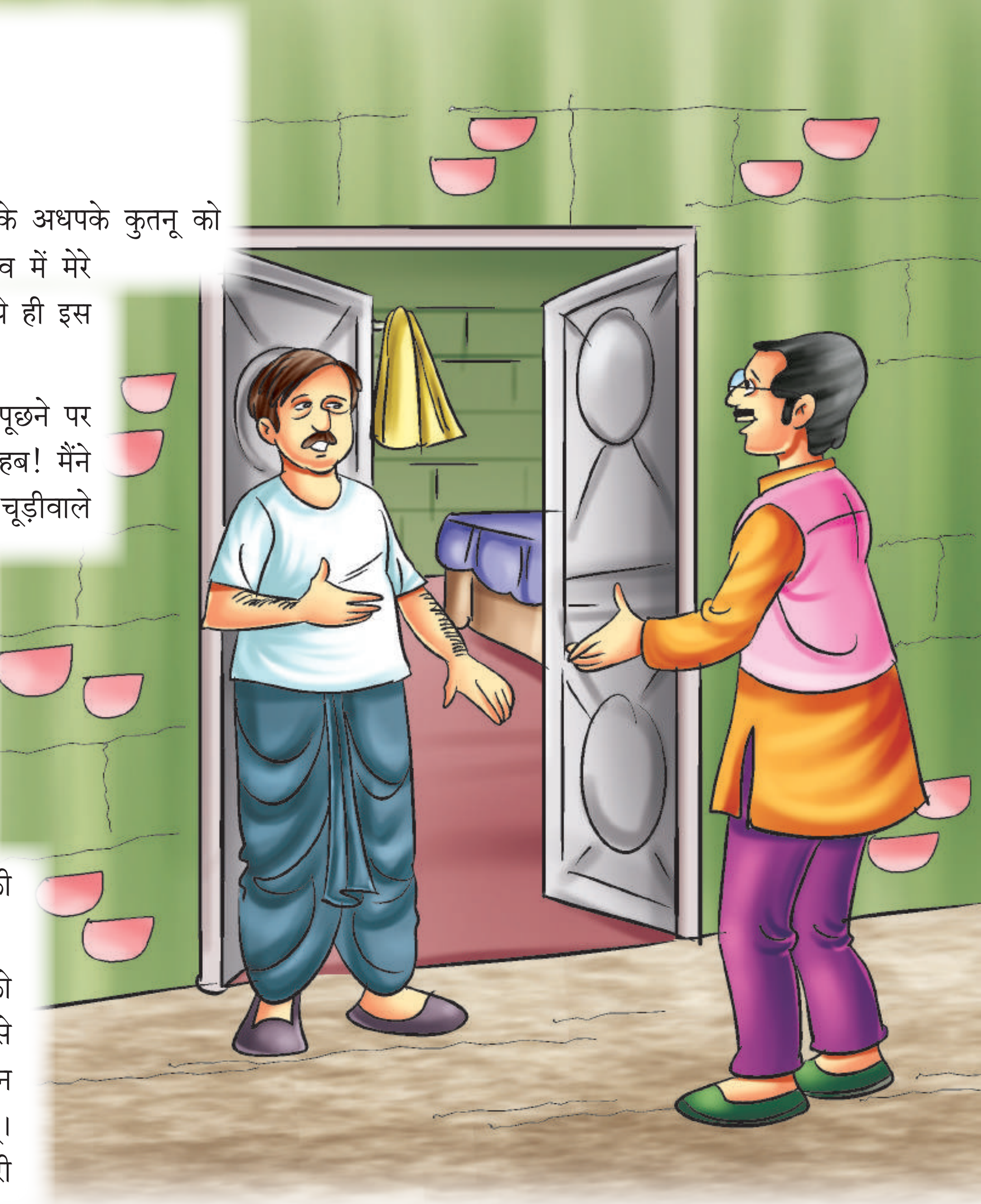

मेरे मन में यह बात कौंध जाती है कि इसी मकान में 11 जून, 1897 को पं० रामप्रसाद बिस्मिल ने जन्म लिया था और आजादी के पचास वर्ष बाद उसकी स्वर्ण जयंती पर भी शहीदे—वतन के जन्मस्थान की कोई खोज-खबर लेने वाला नहीं है।

अब मैं मकान के अंदर जाता हूँ। उस स्थान को शीश झुकाता हूँ, जहाँ माता मूलमती की कोख से शेरे-वतन ने जन्म लिया था। बिस्मिल इस स्थान पर पैदा हुए थे, यह सोचकर में काँप उठता हूँ। उपेक्षा के गहन अंधकार में डूबा यह स्थल हमारी अर्चना का स्थल है, हमारी पूजा का मंदिर है। निस्संदेह यह अर्पण की भूमि है, तर्पण की भूमि है, वंदन की भूमि है, अभिनंदन की भूमि है। इस मिट्टी का कण-कण भारत के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रीय अस्मिता, जातीय शौर्य और बलिदान की भावना भरता है। मन विहल हो रहा है, आँखों में ग्लानि का सागर उमड़ रहा है और घृणा के करोड़ों बिच्छू डंक मार रहे हैं अंदर की साँस के साथ शब्द निकलते हैं— ''इस मिट्टी से तिलक करो, यह मिट्टी है बलिदान की।'' और मैं बोझिल मन और शिथिल तन से उस भूमि पर लोट जाता हूँ।

माँ मूलमती और पिता मुरलीधर के लाडले ने इस घर में किलकारियाँ भरी थीं। यहीं पर तो सोहर गाए गए थे। यहीं डिठौना लगाकर माँ गाय का दूध पिलाकर, मुँह चूमकर अपने पूत को खेलने भेजती थी। बचपन में वीरों की गाथाओं की कहानियाँ माँ ने उन्हें इसी घर में सुनाई थीं।

नारायन ऐसे सिधुआ आदमी हैं कि उन्हें अपनी जन्मतिथि भी नहीं याद। उन्हें यह जरूर मालूम है कि बिस्मिल भैया को गोरखपुर जेल में फाँसी दी गई थी। कब दी गई थी? यह वे नहीं जानते हैं। वे कहते हैं— ''मिश्र जी, आपको सब कुछ बता देंगें। यहीं सामने वाला घर है उनका। ''मैं नारायन के साथ श्री नन्हेलाल मिश्र के द्वार की कुंडी खटखटाता हूँ।

एक झुर्रियोंदार गोरे चेहरे वाले बूढ़े सज्जन धोती-कुर्ता पहने, कुर्ते की बटनों के मध्य जनेऊ निकाले मेरे सामने आ जाते हैं। मैं अपना मंतव्य बताता हूँ। वे मुझे घर के आँगन में एक पुरानी चाल की निवाड़ की खटिया पर बैठा देते हैं और स्वयं सामने रखी तिपाई पर एक पैर दूसरे पर रखकर बैठ जाते हैं। मैं बिस्मिल के संबंध में बातें छेड़ देता हूँ। वे कुछ भावुक होकर विस्तार से बताना शुरू करते हैं—

''मैंने बिस्मिल भैया को तो नहीं देखा है किंतु उनके माता-पिता को खूब देखा है। पिता जी तो मेरे पास जब-तब आकर बैठते थे। दूर ही कौन, सामने ही तो घर है। मैं उनके पास जाकर घंटों उनके घर में बैठा करता था। वे कचहरी में लैसंसदारी करते थे। और माता जी घर में रहती थीं। अपने पुत्र की याद करके वे गौरव और गर्व का अनुभव करते थे। उन्हें मैंने रोते कभी नहीं देखा। वे बताया करते थे कि बिस्मिल के बाबा उन्हें खूब दूध पिलाया करते थे। बिस्मिल के बचपन के बारे में वे जब-तब बताया करते थे।''

मिश्र जी आगे बताते हैं- ''हमसे बिस्मिल भैया के पिता जी घरेलू बातें किया करते थे। वे बहुत वीर स्वभाव के थे। बिस्मिल भैया की बहन एटा में ब्याही थी। वे इस मकान में एक-दो वर्ष रही थीं। अब वे इस दुनिया से चल बसीं। उनके लड़का-बहू हैं। वे भी दो- बार यहाँ आए हैं।

जब 'भैया' के पिता जी नहीं रहे थे तो सन् 47 में देश की आजादी के बाद उनकी माता जी के पास देश के विभिन्न भागों से मनीऑर्डर आया करते थे। मैं ही उनकी गवाही करता था। यह मकान बिस्मिल की बहन से 1200 रुपये में चूड़ीवाले विद्‌याराम ने खरीदा था, विद्‌याराम से एक पंजाबी ने और बाद में नारायन ने।''

पास में बैठे नारायन हामी भरते हैं- ''हाँ, भाई साहब, मिश्र जी ठीक बता रहे हैं।''

इसी बीच मिश्र जी की धर्मपत्नी , जो अभी तक चुप्पी साधे बैठी हैं, कहती हैं-''बिस्मिल भैया की महतारी गेरूआ धोती पहनती थीं।''

आज पुरानी चाल की एक पल्ले वाली धोती को सिर के ऊपर से खिसकाते हुए कहती है- ''बिस्मिल भैया की महतारी इसी मेरे आँगन में बैठा करती थीं और अपने पुत्र की यादों के पुलिंदे खोलती थीं। कभी-कभी तो वे अत्यधिक भावुक हो जाती थीं, पर क्या मजाल जो आँखों से आँसू टपकें। वे बताती थीं कि भैया जब आर्यसमाज में जाने लगे तो पिता जी बहुत नाराज होते थे किंतु मैं 'भैया' को उत्साहित करती रहती थी।''

मिश्र जी किंचित् गंभीर होकर कहते हैं— ''इस शहर का दुनिया में नाम करने वाला यह घर एक इतिहास है; किंतु शासन में बैठे लोग अपने-अपने इतिहास को उजागर करने में जुटे हैं पर जिनकी बदौलत हमें आजादी मिली, उन्हें भुला दिया। हम लोग तो समझते थे कि यहाँ स्मारक जरूर बनेगा। यादगार की वजह से ही मैंने इस घर को नहीं खरीदा था। किंतु अपने देश में सब कुछ है, देशभक्ति छोड़कर।''

बिस्मिल के विषय में कहा जाता है, कि वे 'रूद्र', 'आनंद प्रकाश परमहंस ' तथा महंत आदि छद्‌म नामों से क्रांतिकारियों को पत्र लिखते थे।

नारायनजी व मिश्रजी से विदा लेकर मैं गली-गली चला आ रहा हूँ।

मैं आगे बढ़ जाता हूँ। थोड़ी दूरी पर सड़क की बाईं ओर एक वयोवद्‌ध वैद्‌य जी पुरानी चाल वाली आराम कुर्सी पर आसीन हैं। कमरे में अलमारियों में दवाएँ भरी शीशियाँ करीने से सजी हैं। एक आदमी बोरा बिछाए इमामदस्ते कुछ जड़ी-बूटियाँ कूट रहा है। मैं उनसे बिस्मिल के बारे में पूछता हूँ। वे संजीदगी के स्वर में खाँसते हुए कहते हैं— 'मैं तो क्या कहूँ? मैं शर्म से गड़ जाता हूँ जब कोई मुझसे उनके विषय की बात चलाता है। काकोरी केस के जितने शहीद हुए सभी के प्रति घोर उपेक्षा की गई। सामने की ओर संकेत करते हुए वे कहते हैं-''वो देखिए बिस्मिल की प्रतिमा लगी है, किंतु उसकी दुर्दशा देखी नहीं जाती। किस से कहा जाए, कोई तो सुनने वाला नहीं है। उनकी माता जी तो आजादी के बाद तक जीवित रहीं। किंतु किसी ने उनकी खोज-खबर नहीं ली।''

बिस्मिल की माताजी ने ही तो उन्हें ऐसा गढ़ा था कि वे देश के लिए कुर्बान हो गए। माताजी के द्वारा दिए गए 125 रुपयों से ही तो उन्होनें ग्वालियर में टोपीदार पाँच फायर वाला रिवाल्वर खरीदा था। यहीं गर्रा नदी के किनारे ही तो वे अभ्यास करते थे। लखनऊ कांग्रेस में जाने के लिए माताजी ने ही उन्हें पिता जी के विरोध के बावजूद रुपये दिए थे।

ऐसी वंदनीय जननी की तो स्वतंत्रता के बाद पूजा होनी चाहिए थी, किंतु वे उपेक्षा के गर्त में पड़ी रहीं। कोई और मुल्क होता तो उन्हें आदर से, सम्मान से पाट दिया जाता, किंतु हम तो सच में कृतघ्न ही निकले।

अब मैं नगरपालिका की ओर चल पड़ता हूँ। टाउन हॉल के सामने कुछ व्यापारी हड़ताल पर बैठे हैं। उनमें एक सभासद भी है। उनसे बिस्मिल के विषय में पूछताछ करता हूँ किंतु उन्हें इस विषय में कोई रूचि नहीं है। कई और नवयुवक वहीं खड़े हैं, उनसे बातचीत करने पर पता चलता है कि बिस्मिल का जन्मस्थान तक नहीं जानते।

इसी परिसर में टाउन हॉल के सामने बिस्मिल की प्रतिमा के पास अशफाकउल्ला, रोशन सिंह और प्रेमकृष्ण खन्ना की प्रतिमाएँ भी लगी हैं इन रंगी-चुगी प्रतिमाओं का रख-रखाव अच्छा है। यहीं 'शहीद द्वार' भी है।

घूमता-घूमता, लाई-चना कुटकता, मैं नगर की चौड़ी धचकोलेदार सड़क पर रिक्शे पर चला जा रहा हूँ।

बालिका विद्यालय की हाईस्कूल की छात्राएँ भेड़ों की तरह झुंड में छुट्टी के बाद चली आ रही हैं। मैं रिक्शा से नीचे उतर पड़ता हूँ और उनसे पूछता हूँ- "रामप्रसाद बिस्मिल को जानती हो?"

सब लड़कियाँ नीचे मुंडी झुका लेती हैं किंतु उनमें से एक कहती है- "हाँ जानती हूँ। वे क्रांतिवीर थे अंग्रेजों के खिलाफ लड़े थे। काकोरी केस में उन्हें फाँसी दी गई थी।"

अब मैं रेलवे स्टेशन की ओर चल देता हूँ। तन रिक्शे पर है और मन सोच रहा है कि 16 दिसंबर, 1927 को गोरखपुर की जेल की कोठरी में बिस्मिल ने लिखा था-"मुल्क पर कुरबान हो जाने के अरमाँ दिल में हैं।" इस दिन के ठीक तीन दिन बाद यानी 19 दिसंबर को प्रातः साढ़े छह बजे उन्होंनें फाँसी के फंदे को चूम लिया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

जलसा = उत्सव, भाड़ा = किराया तरुण = युवा व्यक्ति, कोलिया = पतली सँकरी गली, निर्देशित रास्ता = बताया हुआ रास्ता, अनमनेपन से = दु:खी मन से, अपराजेय = जिसे जीता न जा सके, दरख्त = पेड़, मालिक-पुरखा = संपत्ति के मालिक, महतारी = माँ, शेरे वतन = देशभक्त(रामप्रसाद बिस्मिल), सिधुआ आदमी = बेफिक्र, अरमाँ = इच्छा, पुलिंदा = पोटली/गठरी, छद्‌म नाम = बनावटी नाम, कृतघ्न = उपकार को न मानने वाले।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) प्रस्तुत पाठ में किस स्थान के विषय में बात की गई है?

(ख) लेखक ने किसके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए इस यात्रा वृत्तांत का वर्णन किया है?

(ग) मिश्र जी ने लेखक को बिस्मिल के विषय में क्या बताया?

(घ) लेखक ने किस पक्ष में हमें कृतघ्न बताया है?

(ङ) रामप्रसाद बिस्मिल को कब फाँसी पर लटकाया गया?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) पंडित रामप्रसाद बिस्मिल कौन थे? उनका जन्म कहाँ हुआ था?

____

(ख) पान वाले से पूछने पर पान वाले ने लेखक को क्या उत्तर दिया?

____

(ग) फाँसी की कोठरी में लिखी गई बिस्मिल की वे पंक्तियाँ कौन-सी हैं जो लेखक को याद आईं?

____

(घ) नारायन कौन है? उसने लेखक की किस प्रकार सहायता की?

____

(ङ) मिश्र जी ने लेखक को बिस्मिल के विषय में क्या बताया?

____

(च) लेखक ने खिरनी बाग की नगरपालिका में जाकर क्या देखा?

____

(छ) लेखक को किस बात की और किन लोगों से शिकायत है?

____

2. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पाठ के अनुसार लेखक इस रेलवे स्टेशन पर उतरा–

☐ शाहजहाँपुर ☐ शाहजहाँबाद ☐ खिरनी बाग

(ख) एक आधुनिक तरुण से पूछने पर कि बिस्मिल का घर कहाँ है? उसने उत्तर दिया–

☐ कौन बिस्मिल बाबू! जो तंबाकू की दुकान करते हैं कबाड़िया हैं वे।

☐ मैं तो नहीं बता सकता, आप उस पान की दुकान पर पूछ लो।

☐ अच्छा, अच्छा आप अखबार वाले हैं, किताब वाले हैं...ओ, आगे वाला जो मोड़ है उस कोलिया में चले जाइए, फिर बाएँ घूम जाइएगा।

(ग) पाठ के अनुसार बिस्मिल के मकान का न० है।

☐ 279 ☐ 217 ☐ 297

(घ) बिस्मिल के पिता का नाम था–

☐ मुरलीधर ☐ नारायन ☐ विद्याराम

(ङ) बिस्मिल की माता का नाम था–

☐ भूलवती ☐ मूलवती ☐ राजवती

3. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) शाहजहाँपुर जनपद में पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ और ______________ जैसे तीन-तीन क्रांतिकारी शहीदों ने जन्म लिया था।

(ख) काली मंदिर के सामने एक गेट बना है जिस पर '______________' लिखा है।

(ग) याद आ रही है बिस्मिल की वे लाइनें जो ______________ के प्रेम से सराबोर होकर उन्होंने ______________ की कोठरी में लिखी थीं।

(घ) इस मिट्टी का कण-कण प्रत्येक नागरिक में ______________ जातीय ______________ और बलिदान की भावना भरता है।

(ङ) बिस्मिल भैया की महतारी ______________ पहनती थीं।

(च) माता जी के द्वारा दिए गए ______________ रुपयों से ही तो उन्होंने ग्वालियर में टोपीदार ______________ फायर वाला रिवाल्वर खरीदा था।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निचे लिखे वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के काल लिखिए–

(क) सुरेश खाना खाएगा। ______________

(ख) हमारा संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। ______________

(ग) गाय घास चरती है। ______

(घ) मौसा जी अगले साल आएँगे। ______

(ङ) शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया। ______

2. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

मुहावरे		अर्थ
(क) लोहे के चने चबाना	–	______
(ख) खरी–खोटी सुनाना	–	______
(ग) चादर देखकर पैर फैलाना	–	______
(घ) नस–नस का पता होना	–	______
(ङ) लल्लो–चप्पो करना	–	______

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- पाठ में लेखक ने बिस्मिल का घर खोजने में अनेक कष्ट उठाए। कल्पना कीजिए आप भी वहीं जा रहे हैं। तब आप किस प्रकार पहुँचेंगे? अपनी कल्पना के आधार पर लिखिए।
- बिस्मिल ने जब 125 रुपये की रिवाल्वर खरीदी तब उन्होंने क्या अनुभव किया होगा?

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- अनेकार्थक शब्द – जिन शब्दों के प्रसंग के अनुसार भिन्न-भिन्न वाक्यों में, भिन्न अर्थ होता हैं, उन्हें अनकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे- घन – बादल, हथौड़ा।

निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखिए-

(क) कर – ______ ______ (ख) अंबर – ______ ______

(ग) धन – ______ ______ (घ) पत्र – ______ ______

शिक्षण–संकेत

- इस पाठ से प्राप्त शिक्षा के बारे में बच्चों को ज्ञान दें।

पंच परमेश्वर 5

(कहानी)

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। दोनों को एक-दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे। अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे। उनमें न तो खानपान का व्यवहार था और न धर्म का नाता, केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूलमंत्र भी यही है।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थी। उसके पास कुछ थोड़ी-सी मिलकियत थीं, परंतु उसके निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लंबे-चौड़े वायदे करके वह मिलकियत अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री न हुई थी, तब तक खाला का खूब आदर-सत्कार किया गया। पर रजिस्ट्री की मुहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानों मुहर लगा दी। अब बेचारी खाला को प्रायः नित्य ही कड़वी बातें सुननी पड़ती और अपमान सहन करना पड़ता था। कुछ दिन उसने सुना और सहा, पर जब न सहा गया तो जुम्मन से शिकायत की और अलग रहने के लिए गुजारे की माँग की। जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया - ''रूपया क्या यहाँ फलते हैं?''

खाला ने नम्रता से पूछा- ''मुझे भी कुछ रूखा-सूखा चाहिए कि नहीं?''

जुम्मन ने गंभीर स्वर से जवाब दिया– ''तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो?''

खाला बिगड़ गई और उसने मामला पंचायत में पेश करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे, जिस तरह कोई शिकरी हिरण को जाल की तरफ जाते देखकर मन ही मन हँसता है। वे बोले– ''हाँ, जरूर पंचायत करा लो। फैसला हो जाए। मुझे भी यह रात-दिन की खटपट पसंद नहीं।''

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस विषय में जुम्मन को कुछ भी संदेह नहीं था। ऐसा कौन था जो उसको अपना शत्रु बनाने का साहस कर सके?

इसके बाद कई दिनों तक बुढ़ी खाला हाथ में लकड़ी लिए आसपास के गाँवों में दौड़ती रही। कमर झुककर कमान हो गई थी। एक-एक पग चलना दूभर था, मगर बात आ पड़ी थी। उसका निर्णय करना जरूरी था। संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जुम्मन शेख ने पहले से ही सारा प्रबंध कर रखा था।

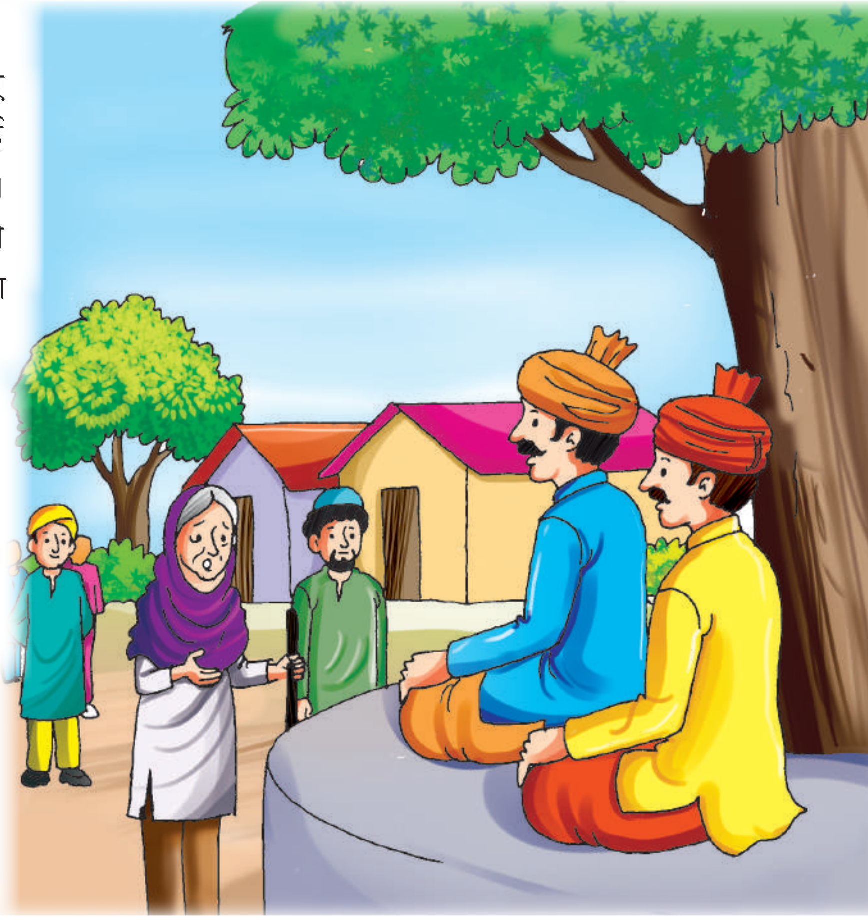

पंच लोग बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की– ''पंचो! आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे जुम्मन के नाम लिख दी थी, इसे आप लोग जानते ही होगें। जुम्मन ने मुझे जीवन-भर रोटी, कपड़ा देना कबूल किया था। साल-भर तो मैंने रो-धोकर काटा, पर अब रात-दिन का रोना नहीं सहा जाता। अब न पेट को रोटी मिलती है, न तन को कपड़ा। बेबस बेवा हूँ, कचहरी-दरबार नहीं कर सकती। तुम्हारे सिवा और किससे अपना दुख सुनाऊँ? तुम लोग जो राह निकाल दो उसी पर चलूँ। मैं पंचो का हुक्म सिर-माथे चढ़ाऊँगी।''

सरपंच किसे बनाया जाए, इस प्रश्न को लेकर शेख और खालाजान में कुछ कहा-सुनी हो गई। खाला बोली– ''खुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं और न दुश्मन। और, तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को तो मानते हो। लो, मै उन्ही को सरपंच बनाती हूँ।''

जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे, परंतु भावों को छिपाकर बोले– ''अलगू चौधरी ही सही। मेरे लिए जैसे रामधन मिश्र वैसे अलगू।''

जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाजी मेरी है। पर जब अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की तो एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़े की चोट की तरह पड़ने लगा। जुम्मन चकित थे कि अलगू को क्या हो गया–अभी यह मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था! इतनी ही देर में ऐसी काया -पलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आएगी?

जुम्मन शेख इसी संकल्प-विकल्प में पड़े हुए थे कि अलगू ने फैसला सुनाया– ''जुम्मन शेख! पंचो ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह नीति-संगत मालूम होता है कि

खालाजान को माहवार खर्च दिया जाए। बस, यही हमारा फैसला है। अगर जुम्मन को खर्च देना मंजूर न हो तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाए।''

इस फैसले ने अलगू-जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। वे मिलते-जुलते थे लेकिन उसी तरह जैसे तलवार से ढाल मिलती है। जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटका करती थी कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

ऐसा अवसर जल्दी ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौधरी बटेसर से दो बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी लाए थे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का? निदान यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू साहू थे। वे इक्का-गाड़ी हाँकते थे। गाँव से गुड-घी लादकर मंडी ले जाते, मंडी से तेल-नमक भरकर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। उन्होंनें सोचा 'यह बैल हाथ लगे तो दिन-भर बेखटके तीन खेप हों। आजकल तो एक ही खेप के लाले पड़े रहते हैं।' बैल देखा, मोल-तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही लिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज थी ही, घाटे की परवाह न की।

समझू साहू ने नया बैल पाया तो लगे रगेदने। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेप करने लगे। न चारे की फ्रिक थी, न पानी की। बस खेपों से काम था। मंडी ले गए, वहाँ कुछ सूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न ले पाया था कि फिर पहर की खपत। महीने-भर में वह पिस-सा गया। एक दिन चौथी खेप में साहू ने दूना बोझ लादा। दिन-भर का थका जानवर, पैर न उठते थे। पर साहू को जल्दी पहुँचने की फ्रिक थी। अतएव उन्होनें कई कोड़े निर्दयता से फटकारे। बैल धरती पर गिर पड़ा और ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

उस घटना को कई महीने बीत गए। अलगू जब अपने बैल के दाम माँगते तब साहू और सहुआइन झल्लाते और अंड-बंड बकने लगते। सबने पंचायत कराने का परामर्श दिया। साहू जी राजी हो गए। अलगू ने भी हामी भर ली।

पंचायत बैठी तो रामधन मिश्र ने कहा– ''बोलो चौधरी, किसको पंच बदते हो?''

अलगू ने दीनभाव से कहा– ''सहझू साहू ही चुन ले।''

समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले– ''मेरी ओर से जुम्मन शेख!''

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धक-धक करने लगा, मानों किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। किसी ने पूछा– ''क्यों चौधरी, तुम्हें कोई उज्र तो नहीं?''

चौधरी ने निराश होकर कहा– ''नहीं, मुझे क्या उज्र होगा?''

सरपंच का मुख्य आसन ग्रहण करते हुए शेख के मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होनें सोचा– 'मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ भी निकलेगा वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मेरा सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं।'

पंचो ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब किए। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया– ''अलगू चौधरी और समझू साहू! पंचो ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस समय उन्होनें बैल लिया, उस वक्त उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिए जाते तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का अच्छा प्रबंध न किया गया।''

सरपंच का फैसला सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाए। उठ खड़े हुए और जोर से बोले– ''पंच परमेश्वर की जय!'' इसके साथ ही चारों ओर ध्वनि हुई– ''पंच परमेश्वर की जय!''

थोड़ी देर के बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले लिपटकर बोले– ''जबसे तुमने मेरी पंचायत की तबसे मैं तुम्हारा शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया की जबान से खुदा बोलता है।'' अलगू रोने लगा। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

लेखक परिचय

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में बनारस के निकट लमही ग्राम में हुआ था। स्कूली शिक्षा की समाप्ति पर पारिवारिक समस्याओं के कारण इन्हें नौकरी करनी पड़ी। आगे जाकर महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय होने के कारण नौकरी से त्यागपत्र दिया। प्रेमचंद राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने के बाद भी लेखन कार्य करते रहे। प्रेमचंद ने पहले नवाबराय के नाम से उर्दू में लेखन कार्य किया। इनका असली नाम धनपतराय था। प्रेमचंद की रचनाओं का अनुवाद विश्व की लगभग हर भाषा में हो चुका है। प्रेमचंद की रचनाओं में समाज यथार्थ तथा मानव स्वभाव का सजीव वर्णन मिलता है। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं- सेवा सदन, गबन, कर्मभूमि, निर्मला आदि।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

अटल = स्थिर, पक्का नीति-संगत = नीति के अनुसार, मूलमंत्र = असली आधार, दैवयोग = भाग्य से/ईश्वर की कृपा से, मिलकियत = स्थायी संपत्ति, निदान = हल, खातिरदारी = आवभगत मन, लहराना = खुश होना, प्रसन्न होना, मुहर लगाना = जड़ से हिला देना, खेप = फेरा, बारी, धृष्टता = उद्दंडता, लाले पड़ना = कठिनाई में पड़ना, बेबस = असहाय, बेवा = विधवा, अंड-बंड बकना = अनाप-शनाप बोलना/उल्टा सीधा बोलना, परामर्श = सलाह, बदना = चुनना, नियुक्त करना उज्र = आपत्ति, जिरह = सवाल-जवाब/तर्क-वितर्क, मनोविकार = मन का दोष, जड़ खोदना = पूरी तरह मिटाना, नष्ट करना, समावेश = शामिल होना, संकल्प-विकल्प = असमंजस की स्थिति।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) खाला ने जुम्मन से अलग गुजारे की माँग क्यों की?

(ख) अलगू चौधरी ने किसके पक्ष में निर्णय दिया?

(ग) अलगू चौधरी ने पंचायत क्यों बुलाई?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) खाला पंचायत क्यों बुलाना चाहती थी?

(ख) अलगू चौधरी ने अपना बैल किसे बेचा था?

(ग) समझू साहू क्या करते थे?

(घ) मित्रता का मूल मंत्र क्या है?

(ङ) ये जानते हुए कि जुम्मन शेख और अलगू चौधरी अभिन्न मित्र हैं। खाला ने अलगू को ही सरपंच क्यों बनाया?

(च) अलगू और जुम्मन दोस्ती की मिसाल थे। एकाएक उनकी मित्रता दुश्मनी में कैसे बदल गई?

(छ) समझू साहू का नया बैल कैसे मर गया?

(ज) जुम्मन शेख का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(झ) 'पंच परमेश्वर' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पाँच वाक्यों में सिद्ध कीजिए।

(ञ) आशय स्पष्ट कीजिए।

1. इतनी ही देर में ऐसी काया-पलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है।

2. मेरे मुँह से इस समय जो कुछ भी निकलेगा वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए।

3. इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की मित्रता का आधार क्या था?

☐ एक-सा खानपान ☐ समान धर्म ☐ समान विचार

(ख) खाला ने किसे सरपंच बनाया?

☐ रामधन मिश्र को ☐ समझू साहू को ☐ अलगू चौधरी को

(ग) सरपंच का आसन ग्रहण करते ही जुम्मन शेख के मन में क्या भाव पैदा हुआ?

☐ जिम्मेदारी का भाव ☐ आदर का भाव ☐ दुविधा का भाव

(घ) चारों ओर 'पंच परमेश्वर' की जय की ध्वनि क्यों हुई?

☐ जुम्मन शेख ने अलगू का पक्ष लिया।

☐ जुम्मन ने निष्पक्ष होकर फैसला लिया

☐ समझू साहू से दुश्मनी निकाली।

3. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की ______________ में खेती होती थी।

(ख) जुम्मन ने खाला से लंबे-चौड़े वायदे करके ______________ अपने नाम लिखवा ली थी।

(ग) खाला के और अधिक सहन न करने पर उसने जुम्मन से ______________ की।

(घ) अलगू चौधरी के फैसले ने दोनों दोस्तों में ______________ की जड़ें हिला दीं।

(ङ) ______________ के पद पर बैठकर कोई किसी का मित्र या दुश्मन नहीं होता।

4. ये शब्द किसने कहे? सही विकल्प चुनकर (✓) लगाइए–

(क) ''फैसला हो जाए। मुझे भी यह रात-दिन की खटपट पसंद नही।''

○ समझू साहू ने ○ जुम्मन ने ○ खाला ने

(ख) ''नहीं, मुझे क्या उज्र होगा?''

○ अलगू चौधरी ने ○ समझू साहू ने ○ जुम्मन शेख ने

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों में से गलत (✗) विकल्प छाँटिए–

जेब	–	○ जेबखर्च	○ जेबघड़ी	○ जेब्रा	○ जेबकतरा
शत्रु	–	○ अरि	○ वैरि	○ अलि	○ दुश्मन
हुक्म	–	○ आदेश	○ हिमायत	○ आज्ञा	○ हिदायत
गाँव	–	○ बस्ती	○ ग्राम	○ देहात	○ खेड़ा
आग्रह	–	○ विनती	○ अनुरोध	○ प्रार्थना	○ आदेश

2. सही विलोम चुनकर (✓) का निशान लगाइए–

गर्व	–	अभिमान	सम्मान	घमंड
मित्रता	–	समता	विद्वता	शत्रुता
कठिन	–	तरल	सरल	विरल
नित्य	–	अनित्य	आदित्य	औचित्य

3. नीचे दिए शब्दों से तीन-तीन शब्द बनाइए–

(क) जो किसी का पक्ष ले	–	पक्षपाती	निष्पक्ष	तटस्थ
(ख) जो किसी का पक्ष न ले	–	निराधार	निष्पक्ष	निर्विकार
(ग) जिसका निर्णय न हुआ हो	–	अवर्णित	अविजित	अनिर्णित
(घ) जो कहा न जा सके	–	अव्यक्त	अकथनीय	अर्निवचनीय

4. नीचे दिए मुहावरों का सही अर्थ से मिलान कीजिए–

(क) लाले पड़ना	राहत की साँस लेना
(ख) जड़ खोदना	दुश्मनी भूल जाना
(ग) काया-पलट होना	घबराना
(घ) चैन की बंसी बजाना	कमी होना
(ङ) दिल का मैल धुल जाना	पूरी तरह बदल जाना
(च) कलेजा धक-धक करना	दुश्मनी निकालना

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **'पंच परमेश्वर' कहानी का सारांश संक्षेप में लिखिए–**
- **जुम्मन शेख और खाला, अलगू और समझू साहू के बीच का वार्तालाप अपने शब्दों में लिखिए।**
- **मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ पढ़िए तथा उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक (प्रोजेक्ट) परियोजना कार्य तैयार कीजिए।**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **निम्नलिखित शब्दों के सन्धि विच्छेद कीजिए–**

(क) सत्कार	____________	(ख) कदापि	____________
(ग) समावेश	____________	(घ) सर्वोच्च	____________
(ङ) मनोविकार	____________	(च) नि:स्वार्थ	____________

शिक्षण-संकेत

- "हमें व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए" इस तथ्य को बच्चों के सामने कक्षा में स्पष्ट कीजिए।
- बच्चों को लालच के विषय में पूर्ण रूप से जानकारी अवश्य दें।

मन के साहसी 6

(प्रेरक प्रसंग)

हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं-रोटी, कपड़ा और मकान। किंतु सोचिए यदि दो वक्त का भोजन जुटाने के लिए रात-दिन मेहनत-मज़दूरी करनी पड़े, खून-पसीना बहाना पड़े और पौष्टिक भोजन तो दूर की बात है, परिवार को भरपेट भोजन भी न मिल पाए; घर के रूप में एक ऐसी झोंपड़ी हो जिसके टूटे दरवाजों ओर दरारों से जेठ के महीनों में, लू के थपेड़ों को प्रवेश करने की खुली छूट हो तथा पूस की रात की सर्द हवाएँ हड्डियाँ तक झिंझोड दें, और वस्त्रों के रूप में फटी-पुरानी उतरन हो तो वह कठोर जीवन कितना कष्टप्रद ओर असाध्य होगा! सभी इंद्रियों के होते हुए रंगहीन और स्वादरहित, मन-मस्तिष्क के होते हुए भी भावविहीन ओर रसविहीन।

ऐसा ही जीवन था... सौराष्ट्र, गुजरात के अकोलबाड़ी की एक अनपढ़ निर्धन ग्रामीण महिला संतोखबा का, जिनके पास निधि के रूप में सौराष्ट्र की पारंपरिक कला और लोकगीतों का अपार संसार था जिसे गुनगुनाने में भी दर्द उमड़ पड़ता था। किंतु इस विलक्षण महिला ने कभी हार नहीं मानी। परिस्थितियों से लड़ती रही और दूसरों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर गई।

संतोखबा का विवाह छोटी उम्र में ही प्रेम जी भाई दुधात से हुआ था। शीघ्र ही उनके चार संतानें भी हो गई। तीन पुत्र गोविंद भाई दुधात, भानु भाई दुधात, बाबू भाई दुधात ओर एक पुत्री नंदू बेन। जब तक पति जीवित थे, गरीबी में भी सुकून था। परिवार के स्नेह बंधन में बँधी ऊबड़-खाबड़ ज़िंदगी भी उन्हें समतल प्रतीत होती थी। किंतु शायद संतोखबा का जीवन सपाट जीवन जीने के लिए नहीं बना था। वे जीवन-भर विकट परिस्थितियों के रूप में चुनौतियों का सामना सिर उठाकर करती रहीं।

जब संतोखबा का सबसे छोटा पुत्र बाबू मात्र छह माह का था, तभी उनके पति प्रेम जी भाई की असमय मृत्यु हो गई। संतोखबा के ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। चार छोटे-छोटे बच्चों का लालन-पालन करने के लिए वे कभी खेती-मज़दूरी करतीं, सड़कों को बनाने के लिए पत्थर तोड़तीं, रोड़ियाँ कूटतीं, बोझा ढ़ोतीं, जंगल से फल बटोरतीं, घास काटतीं और छाती पर पत्थर रखकर अपने बच्चों का पेट पालतीं। उनके पास तिनके का सहारा भी न था। किंतु उनके पास बेमिसाल हिम्मत, आत्मविश्वास ओर मेहनत करने की लगन थीं। सहनशील होने के साथ-साथ परिस्थितियों ने उन्हें व्यावहारिक भी बना दिया था। एक बार रात के एकांत में उनकी झोपड़ी में एक शेर आ गया था। उस समय बा

ने न तो हिम्मत खोई और न ही मानसिक संतुलन। बुद्धि का प्रयोग करते हुए उन्होंने तुरंत चूल्हे की जलती हुई लकड़ी उठाई और शेर के पीछे दौड़ पड़ीं। संतोखबा की इस ललकार से शेर भयभीत हो गया और भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार उनकी प्रत्युत्पन्नमति से सबका बचाव हो गया। अतएव अपने बच्चों को मिले उस नए जीवन को सँवारकर वे उनका भविष्य निश्चित करना चाहती थीं।

किंतु वे असहाय निर्धन महिला शिक्षा के लिए धन कैसे जुटातीं? तभी उन्हें मालूम हुआ कि जाम नगर के आनंद बाबा के आश्रम में बच्चों के आवास और शिक्षा की निशुल्क व्यवस्था है। उन्होंने गाँव की पंचायत की सहायता से बच्चों को आश्रम भेज दिया।

अब संतोखबा बच्चों के भरण-पोषण की चिंता से तो मुक्त थीं किंतु नितांत अकेली हो गई थीं। पर वे इस अकेलेपन से तनिक भी विचलित नहीं हुईं। मेहनत-मज़दूरी करने के बाद वे अपने एकांत के समय में कसीदाकारी करतीं। सौराष्ट्र की पारंपरिक कलाएँ तो उनकी रग-रग में रची बसी थीं। रामायण और महाभारत की कथाएँ उन्हें कंठस्थ थीं। वे कभी दीवारों पर परंपरागत चित्र बनातीं और साथ-साथ अपनी बोली के गीत भी गुनगुनातीं। अब उनके जीवन में कुछ-कुछ रंग उभरने लगे थे।

इधर उनके पुत्र-पुत्री आश्रम में पढ़कर बड़े होने लगे। बड़ा पुत्र तो अधिक नहीं पढ़ पाया किंतु भान और बाबू ने स्कूली शिक्षा के पश्चात् बड़ौदा में कॉलेज की पढ़ाई भी की। तत्पश्चात् भानु ने कला स्नातक की शिक्षा पूरी की ओर विद्यानगर के कॉलेज ऑफ़ फाइन आर्ट्स में एक व्याख्याता के रूप में कार्य करना आरंभ किया। नौकरी मिलने के बाद भानु संतोखबा को अपने पास ले आया।

कहा जाता है कि जब मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है जब उसकी उच्चस्तरीय महत्वाकांक्षाएँ जाग्रत होने लगती हैं। संतोखबा के जीवन में एक बड़े अंतराल के बाद ऐसा समय आया जब वे रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता से मुक्त हुईं। उनके भीतर भावनाओं का सागर हिलोरें लेने लगा ओर कुछ कर गुजरने का साहस उन्हें एक नई चुनौती देने लगा। यही वह समय था जब उन्हें मुंबई की जहाँगीर कलादीर्घा में सुश्री डी. प्रभा की चित्र प्रदर्शनी देखने का अवसर मिला। उसे देखकर संतोखबा ने स्वतः ही यह प्रतिक्रिया व्यक्त की कि वे भी चित्र बना सकती है।

खेल-खेल में उन्हें रंग और तूलिका पकड़ा दिए गए... और तब देखने वालों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने संतोखबा के चित्रों को देखा। संतोखबा ने सहज में ही महाभारत ओर रामायण की घटनाओं को अपना विषय बनाकर पारंपरिक शैली

में दर्शनीय चित्र उकेर डाले थे। देखने वालों ने दाँतों तले उँगलियाँ दबा लीं। जिस आयु में आम लोग अवकाश ग्रहण करते हैं, उस आयु में इस अनपढ़ ग्रामीण महिला ने अपने हाथों में तूलिका पकड़ ली। शुरू में संतोखबा ने कागज़ पर और उसके बाद छोटे-छोटे कैनवस पर चित्र बनाने शुरू किए। उनकी पहली चित्र प्रदर्शनी बड़ौदा में लगाई गई। उस समय संतोखबा के आश्चर्य ओर हर्ष का ठिकाना न रहा जब लोगों ने उनके चित्रों को सौ-सौ रूपयों में खरीदा। उनका हौसला बढ़ा और चित्र बनाने की आवश्यक सामग्री के लिए उन्हें किसी पर निर्भर भी नहीं होना पड़ा। उन्होंने और भी लगन से चित्र बनाने शुरू कर दिए और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे रामायण और महाभारत की कथाओं के प्रसंगों को चित्रित करतीं ओर उस कथा को गा-गाकर गुनगुनातीं। उनके चित्र और भी जीवंत, रसमय तथा प्रभावपूर्ण होते चले गए। उनकी प्रदर्शनियाँ भी बड़ौदा, अहमदाबाद, शिरडी, बंगलौर, दिल्ली तथा विदेशों में भी लगती रहीं।

फिर तो संतोखबा ने एक इतिहास रच दिया। उन्होंने बड़े-बड़े स्क्रोल बनाने शुरू कर दिए। विद्यानगर के एक छोटे से कमरे में वे आठ-आठ घंटे लगातार काम करतीं और लंबे-लंबे स्क्रोल चित्रित करतीं। उन्होंने 54 मीटर लंबा रामायण का स्क्रोल बनाया जिसे एयर इंडिया ने अपने संकलन के लिए खरीदी। उन्होनें 250 मीटर लंबा शिरडी के साईं बाबा का जीवनवृत्त चित्रित किया जिसकी प्रदर्शनी शिरडी में लगाई गई। इसके पश्चात् उन्होने महाभारत के कुछ दृश्यों ओर कथाओं को चित्रित किया, जिसका जर्मनी व इंग्लैंड के कला मर्मज्ञों ने क्रय किया। उन्होंने इंदिरा गाँधी के जीवनवृत्त को 250 मीटर लंबे स्क्रोल में तथा महात्मा गाँधी के जीवनवृत्त को 25 मीटर लंबे स्क्रोल में चित्रित किया।

संतोखबा का सबसे विलक्षण कार्य था महाभारत की कहानी के घटनाक्रम को 1200 मीटर लंबे स्क्रोल के रूप में चित्रित करना। दुनिया में कुछ कर दिखाने की ललक, लगन और दृढ़ निश्चय की शक्ति ने विश्व के सबसे लंबे स्क्रोल की रचना कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। अस्सी वर्ष की उम्र में लगातार आठ वर्षों के परिश्रम से बना वह स्क्रोल अपने आप में मन की दृढ़ता, कर्मठता, कला के प्रति समर्पण भावना और उस जुझारू व्यक्तित्व का उदाहरण है जो शायद संतोखबा के अतिरिक्त और कोई हो ही नहीं सकता था। संतोखबा के चित्रों की रचना का सबसे उल्लेखनीय और आश्चर्यजनक पक्ष यह है कि चित्रों को बनाने में उन्होंने न तो किसी पुस्तक से उदाहरण लिया और न ही किसी अन्य पेंटिंग्स का सहारा लिया। सब कुछ मौलिक रूप में, परंपरागत शैली में स्वतः प्रवाहित होती धारा के रूप में चित्रित कर डाला। उन्होंने महाभारत की कथा को वैसा ही चित्रित किया जैसा कि उन्होंने अपने बड़ों से सुना था। श्रव्य ज्ञान का ऐसा प्रत्यक्ष

उदाहरण और कहाँ देखने को मिलेगा! उनकी यह अनूठी चित्रकथा व्यास द्वारा गणेशजी को कथा सुनाने के प्रसंग से शुरू होती है।

चित्रों को चित्रित करने का संतोखबा का ढंग भी अनूठा है। धृतराष्ट्र को दृष्टिविहीन चित्रित करने के लिए जहाँ उन्होंने उनकी आँखें बिना पुतली की बनाई हैं, वहीं शकुनि की कुटिलता को प्रदर्शित करने के लिए एक आँख सफ़ेद है, जबकि दूसरी काली। संतोखबा ने अपने चित्रों में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया है। यही कारण है कि वे चित्र आज भी उतने ही चमकदार और प्रभावी लगते हैं जितने कि वे तब थे जब उन्हें चित्रित किया गया था। संतोखबा को इस अनूठे स्क्रोल के लिए विदेशी कला प्रेमियों द्वारा मुँह-माँगी धनराशि दी जा रही थी। किंतु अपनी धुन की पक्की और विचारों की परिपक्व संतोखबा इस अमूल्य कृति को विदेश में नहीं देना चाहती थीं। इसी कारण उन्होंने इस ऐतिहासिक स्क्रोल को उसकी आधी से भी कम धन राशि पर इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर ऑफ आर्ट्स को देना स्वीकार किया।

संतोखबा के जीवन में एक और मोड़ आया जब उनके पास अपार धनराशि आ गई थी और उनके निश्चिंत होकर जीवन बिताने के दिन थे परंतु उम्र के उस अंतिम पड़ाव में उनके उसी पुत्र ने उन्हें धोखा दिया जिसने उन्हें कला देवी बनने की राह की ओर उन्मुख किया था। अपनी मेहनत ओर लगन से अर्जित की लाखों रूपयों की धन राशि से उन्हें हाथ धोना पड़ा। विद्यानगर का उनका घर गिरवी हो गया। 96 वर्ष की बूढ़ी और अशक्त माँ के लिए इससे बड़ी और व्यथा क्या होगी? वे अपने सबसे छोटे पुत्र बाबू के साथ अपने गाँव आ गईं। किंतु संतोखबा किसी दूसरी ही मिट्टी की बनी थीं। इस कारण ऐसी अवस्था में भी उन्होंने अपना मन प्रकृतिस्थ रखा, अधीर नहीं हुईं और काँपते जर्जर हाथों से चित्र उकेरती रहीं-गीत गुनगुनाती रहीं। 106 वर्ष की अवस्था में गुजरात सरकार ने उनका बहुमान किया ओर उन्हें कला देवी की उपाधि से सम्मानित किया।

25 फरवरी, 2009 को अपनी मातृभूति सौराष्ट्र में ही संतोखबा का निधन हो गया। किंतु अपने अभूतपूर्व कार्य के रूप में वे आज भी साहस और लगन की एक अनोखी मिसाल के रूप में जीवित हैं। अनके गीत आज भी सौराष्ट्र के अकोलबाड़ी में गूँज रहे हैं। वे एक आदर्श के रूप में हमारे हृदयों को स्पंदित कर हमें चेतन व जागरूक करती रहेंगी इस संदेश के साथ कि परिस्थिति का सामना डट कर करो, सीखने की कोई उम्र नहीं होती। कला की धारा जब भी प्रवाहित हो उसे रोको मत, बहने दो। रास्ता खुद-ब-खुद बनता चला जाएगा।

—डॉ. मधु पंत

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

मूलभूत = किसी वस्तु के मूल तत्व से संबंध रखनेवाला, पारंपरिक = परंपरा से चला आया, व्याख्याता = व्याख्या करनेवाला, भाषण देनेवाला, झिंझोड़ना = हिला देना, असाध्य = दुष्कर, कठिन, जिसे साधा न जा सके, जाग्रत = जागा हुआ, जो सोया हुआ न हो, अंतराल = दो बिंदुओं के बीच का समय, निधि = पूँजी, सुकून = मन की शांति, ऊबड़-खाबड़ = ऊँची-नीची, तूलिका = ब्रश, समतल = सपाट, जीवंत = सजीव, विकट = कठिन, संकलन = संग्रह व्यावहारिक = व्यवहार के विचार से, जीवनवृत्त = जीवन चरित, निशुल्क = बिना शुल्क/फ़ीस के, समर्पण = आदरपूर्वक कुछ भेंट करना/अर्पण करना, कसीदाकारी = कपड़े पर सुई-धागे से, प्रत्युत्पन्नमति = जो तुरंत कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले, बेल = बुटे बनाने का काम, उन्मुख = उद्यत, उत्सुक, उत्कंठित, जो ऊपर मुख किए हो, नितांत = बहुत अधिक, बिल्कुल, एकदम प्रकृतिस्थ = स्वाभाविक, जिसके होश-हवास ठिकाने हों, जर्जर = टूटा-फूटा, खंडित, पुराना, वृद्ध, प्रतिक्रिया = प्रतिकार, बदला, क्रिया के बदले में की गई क्रिया।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) संतोखबा कौन थीं?

(ख) संतोखबा ने अपने बच्चों को जामनगर के आश्रम में क्यों भेजा?

(ग) जहाँगीर कलादीर्घा में चित्र प्रदर्शनी देखकर संतोखबा की क्या प्रतिक्रिया हुई?

(घ) महाभारत की कथा को चित्रित करते समय संतोखबा ने किसके द्वारा गणेशजी को कथा सुनाने का प्रसंग दर्शाया है?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जीवन की मूल आवश्यकताएँ क्या हैं?

____

(ख) संतोखबा ने अपनी कलाकृतियों को विदेश में क्यों नहीं बेचा?

____

(ग) संतोखबा के चित्रों का विषय क्या होता था?

____

(घ) संतोखबा ने सबसे लंबा स्क्रोल किस विषय पर बनाया था?

____

(ङ) संतोखबा का प्रारंभिक जीवन कैसा था?

____

(च) संतोखबा ने अपने बच्चों का लालन-पालन किस प्रकार किया?

____

(छ) किस घटना से संतोखबा की प्रत्युत्पन्नमति तथा साहस का परिचय मिलता है?

____

(ज) संतोखबा के चित्रों की क्या विशेषता थी?

____

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) संतोखबा भारत के किस प्रांत की रहनेवाली थीं?

☐ महाराष्ट्र ☐ कर्नाटक ☐ गुजरात

(ख) संतोखबा अपने अकेलेपन से विचलित क्यों नहीं होती थीं?

- [ ] वे कसीदाकारी करती थीं।
- [ ] वे बच्चों के भविष्य के सपने देखती थीं।
- [ ] वे पड़ोसियों से बातचीत करती रहती थीं।

(ग) संतोखबा की पहली चित्र प्रदर्शनी कहाँ लगाई गई थी?

- [ ] दिल्ली में
- [ ] अहमदाबाद में
- [ ] बड़ौदा में

(घ) गुजरात सरकार ने 106 वर्ष की आयु में संतोखबा को कौन-सी उपाधिक दी?

- [ ] श्रीदेवी
- [ ] कला देवी
- [ ] मातृदेवी

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों में से गलत (✗) विकल्प छाँटिए–

चित्र	–	○ छवि	○ चित्रपट	○ तस्वीर
विश्व	–	○ संसार	○ ग्लोब	○ जगत
उम्र	–	○ अवस्था	○ आयु	○ अवधि
कपड़ा	–	○ साड़ी	○ वस्त्र	○ वसन

2. सही विलोम शब्द चुनकर (✗) लगाइए–

उचित	–	○ समुचित	○ अनुचित	○ रचित
सुखद	–	○ दुखी	○ दुखमय	○ दुखद
प्रत्यक्ष	–	○ परोक्ष	○ नेपथ्य	○ सापेक्ष
विधवा	–	○ विवाहित	○ सधवा	○ बंधुवा
परिपक्व	–	○ अपरिमित	○ अपरिपक्व	○ अपरिचित

3. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) 'पारंपरिक' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है?

- [ ] रिक
- [ ] इक
- [ ] क

(ख) 'चित्रित' शब्द में मूल शब्द कौन-सा है?

- [ ] चित्रण
- [ ] चित्र
- [ ] त्रित

(ग) 'कर्मठता' शब्द में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है?

- [ ] ठता
- [ ] ता
- [ ] अठता

(घ) 'प्रवाहित' शब्द में मूलशब्द तथा प्रत्यय क्या है?

- [ ] प्रवाहि + त
- [ ] प्रवाह + हित
- [ ] प्रवाह + इत

4. इनके लिए एक शब्द चुनकर लिखिए–

कलाप्रेमी, प्रत्युत्पन्नमति, पारंपरिक, कलाकृति, जिजीविषा, विधवा, सधवा, प्रतिष्ठित

(क) जो परंपरा से आया हो ____________________

(ख) कला का नमूना ____________________

(ग) जिसका पति जीवित न हो ____________________

(घ) जिसका पति जीवित हो ____________________

(ङ) जीने की प्रबल इच्छा रखनेवाला ____________________

(च) कला से प्रेम करनेवाला ____________________

(छ) जिसे प्रतिष्ठा प्राप्त हो ____________________

(ज) जो व्यक्ति तत्काल समस्या का हल खोज सके ____________________

5. दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

पूर्ति, जर्जर, उन्मुख, प्रवाहित, प्रतिक्रिया, परंपरागत, प्रत्युत्पन्नमति

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **अपने आस-पास के बुज़ुर्गों में उनकी सुप्त प्रतिभा, कला प्रतिभा को बढ़ाने तथा उभारने के लिए आप क्या कर सकते हैं?**
- **अपने घर तथा पड़ोस के बुज़ुर्गों की सूची बनाइए तथा जानिए कि वे किस कला को जानते हैं?**

जैसे— संगीत, पाक कला, रंगोली आदि। उनमें से किसी एक के साथ हुई बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

- **गुजरात पर एक फ़ाइल बनाइए जिसमें वहाँ की लोककलाओं, नृत्य, संगीत, वेशभूषा, तीज-त्योहार तथा भोजन के विषय में लिखिए।**
- **ऐसी कौन-सी कलाएँ हैं जो विलुप्त होती जा रही हैं, उनके बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।**
- **भारत की लोककलाओं के बारे में जानकारी एकत्रित कर कक्षा के बुलेटिन बोर्ड पर लगाइए।**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **आपके अन्दर कौन-सी कला करने की योग्यता है, जिसे आप बहुमुखी रूप से कर सकते हैं? प्रयोगात्मक रूप से बताइए।**
- **भारत में सम्मिलित वे सभी अनेकों कलाओं का वर्णन एक फाइल के रूप में करिए।**

शिक्षण–संकेत

- कक्षा में बच्चों को कुछ ऐसे कलाकारों के बारे में बताइए, जिन्होने हमारे देश को अपनी कलाओं से ओर भी सुन्दर और आकर्षक बनाया है।
- सभी बच्चों को भारत की विभिन्न कलाओं के बारे में उन्हें बोर्ड पर प्रदर्शित करके जानकारी दीजिए।

जीवन का झरना 7

(कविता)

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से, चल रही राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर से, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस धारी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, यौवन हैं, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठतीं हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर में गति ही जीवन है, रुक जाएगी गति यह जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग-दुर्दिन की घड़ियाँ गिन-गिन।

निर्झर कहता है—बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है—बढ़े चलो, सोचो मत होगा क्या चलकर।

चलना है—केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।

—आरसी प्रसाद सिंह

लेखक परिचय

एक झरने के समान है जिसका कार्य पानी है। यह सुख-दुख के रास्ते पर चलता है। यह पहाड़ों के बीच से फूटकर किसके आँचल में गिर जाता है। कितने तेज धारों से बहकर यह अपने को नीचे खींच लाता है। यह रास्ते में आने वाली बाधाओं से लड़कर, वनों में पेड़ों से टकराकर, बढ़ते हुए चट्टानों पर चढ़ता है और नौजवानों की तरह मदमाता है। इसकी लहरें बार-बार उठकर गिरती हैं और किनारे पर खड़ा हुआ नाविक पछताता रहता है। जब यौवनावस्था आगे बढ़ती है वह झरने की तरह बढ़ता ही जाता है। झरने ने उसका चलना ही जीवन है। जिस दिन झरने की गति रुक जाएगी उस दिन मनुष्य की मृत्यु हो जाएगी। जगत के बुरे समय को गिन-गिनकर वह नष्ट हो जाएगी। झरना रूपी जीवन कहता है तुम्हारा कार्य निरंतर आगे बढ़ते रहने का है पीछे मुड़कर कभी देखना नहीं। जवानी कहती है कि आगे बढ़ते चलो यह मत सोचो कि आगे क्या होने वाला है। जीवन का कार्य केवल गति है। मृत्यु उसका आखिरी स्थान है। उसकी गति वहीं रुक जाती है यही हमें झरना कहता है।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

निर्झर = झरना, गिरि = पहाड़, अंतर = भीतर, बीच में, दुर्दिन = बुरे दिन, बुरा समय, समतल = समान तल, यौवन = जवानी, सिर्फ = केवल, बाधा = रुकावट, नाविक = नाव चलाने वाला, गति = चाल, मानव = मनुष्य, झरकर = बहकर

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) निर्झर का प्राण क्या है?

(ख) निर्झर की क्या विशेषता है?

(ग) कवि ने मृत्यु किसे माना है?

(घ) कवि ने झरने के पानी की तुलना किससे की है?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कवि ने जीवन की क्या परिभाषा दी है?

(ख) जीवन और झरने में सबसे बड़ी समानता क्या है?

(ग) सुख और दुख को कवि ने दो किनारों के समान क्यों बताया गया है?

(घ) निर्झर को गाता हुआ क्यों कहा गया है?

(ङ) मार्ग में बाधाएँ आने पर झरना क्या करता है?

(च) इन पंक्यिो का अर्थ अपने शब्दों मे स्पष्ट किजिए—

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

निर्झर में गति ही जीवन है, रुक जाएगी गति यह जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग-दुर्दिन की घड़ियाँ गिन-गिन।

2. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) कवि ने जीवन की तुलना किससे की है?

☐ झरना से ☐ खुशी को ☐ सुख-दुख

(ख) जीवन का पानी किसे कहा गया है?

☐ मस्ती को ☐ हँसी को ☐ खुशी को

(ग) झरने के दो किनारे कौन-कौन से हैं?

☐ उत्तर-दक्षिण ☐ पूरब-पश्चिम ☐ सुख-दुख

(घ) कवि के अनुसार रुक जाना किसका पर्याय है?

☐ आलस्य का ☐ शिथिलता का ☐ मृत्यु का

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप लिखिए–

(क) र्दुदिन — ____ (ख) शीष्रक — ____
(ग) सम्तल — ____ (घ) आर्शीवाद — ____
(ङ) मसती — ____ (च) निझ्रर — ____

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) जीवन — ____ (ख) दिन — ____
(ग) समतल — ____ (घ) पीछे — ____
(ङ) सुख — ____ (च) दुर्दिन — ____

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- 'जीवन का झरना' शीर्षक में अभिव्यक्त जीवन-दर्शन पर एक लेख लिखिए।
- भगवतीचरण वर्मा और रामनरेश त्रिपाठी की ओजपूर्ण कविताएँ पढ़िए।

परीक्षा 8
(कहानी)

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजान सिंह बूढ़े हुए, तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की "दीनबंधु, दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था ढल गई, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।"

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब न माने, तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान उन्हीं को ढूँढ़ना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध समाचार पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की आवश्यकता है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजान सिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है। मंदाग्नि के मरीज को यहाँ तक का कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम परंतु कर्त्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगें।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद ओर किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से। कोई नए फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम को रोया करते थे, यहां उसकी कोई जरूरत न थी।

सरदार सुजान सिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोजेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर व्यक्ति अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का

दर्शन करते थे। मि० 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, पर आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि० 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरो से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को भी अपना पद छिन जाने की शंका लगी रहती थी। मि० 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वही नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था।लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया, तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

एक दिन नए फैशन वालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपाकर रखें! संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फील्ड बन गया। खेल शुरू हो गया ओर गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भले-मानस लोग शंतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेजी से उड़ते, तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानों लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँखों और चहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से जरा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी उँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पंहियो को हाथ से धकेलता, लेकिन बोझ इतना अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर न चढ़ती थी और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार जोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा निराश होकर इधर-उधर ताकता, मगर वहाँ कोई नजर न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी

न सकता था। बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा, परतुं किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था; मगर उदारता और भाईचारे का नाम भी न था। लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था। जिसके हृदय में दया थी ओर साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गई। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला- ''मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?''

किसान ने देखा, एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला, ''हुजूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?'' युवक ने कहा, ''मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधों, मैं पहियों को धकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाएगी।''

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहियों को जोर लगाकर उठाया। कीचड़ बहुत ज्यादा था। वह घुटने तक जमीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर जोर लगाया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जोर लगाया, तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला, ''महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।''

युवक ने हँसकर कहा, ''अब मुझे कुछ इनाम देते हो?''

किसान ने गंभीर भाव से कहा, ''नारायण चाहेंगे, तो दीवानी आपको ही मिलेगी।''

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, कहीं ये सुजान सिंह तो नहीं? आवाज मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही लगता है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला, ''गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलता है।''

महीना पूरा हुआ ओर चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से ही अपनी-अपनी किस्मत का फैसला सुनने को उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते-जाते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे। न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपा दृष्टि होगी?

संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस आकर धनाढ्य राज कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे। उम्मीद्वारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजान सिंह ने खड़े होकर कहा, ''दीवानी के उम्मीदवार महाशयों ! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरूष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो ओर साथ-साथ आत्म बल। हृदय वह जो उदार हो, आत्म बल वह जो विपत्ति का वीरता के साथ

सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरूष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।''

रियासत के कर्मचारियों ओर रईसों ने जानकीनाथ की तरफ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया, ''आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरूष स्वयं जख्मी होकर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे, उसके हृदय में साहस, आत्म बल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म से कभी न हटेगा।''

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

नेकनामी = अच्छाई, यश, शिखर = चोटी, अकस्मात् = अचानक, हृष्ट-पुष्ट = पूरी तरह स्वस्थ, आपत्ति = एतराज, लत = बुरी आदत, अप्रेंटिस = किसी कार्यालय या कारखाने मे काम करने/सीखने आया व्यक्ति।, मंदाग्नि = पेट की बीमारी जिसमें पाचन शक्ति कमजोर हो जाती हैं।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) सरदार सुजान सिंह कहाँ के दीवान थे?

(ख) किस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी?

(ग) दीवानी के लिए आए उम्मीदवार अपने जीवन को कैसा दिखाने की कोशिश कर रहे थे?

(घ) देवगढ़ के पढ़े-लिखे लोग कैसे खेल खेलते थे?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) सरदार सुजान सिंह अपना पद क्यों छोड़ना चाहते थे?

____

(ख) महाराज ने नया दीवान ढूँढ़ने की जिम्मेदारी किस पर डाल दी?

____

(ग) विज्ञापन में दीवान पद के लिए क्या योग्यताएँ निर्धारित की गई थीं?

____

(घ) युवक ने किसान की क्या सहायता की?

(ङ) किसान को ध्यान से देखने पर युवक के मन में क्या संदेह हुआ?

(च) सरदार सुजान सिंह ने पंडित जानकीनाथ को दीवान क्यों चुना?

(छ) पंडित जानकीनाथ की तरफ देखते समय किनकी आँखों में सत्कार ओर किनकी आँखें में ईर्ष्या थी?

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) किसान की गाड़ी में क्या भरा था?

☐ आलू की बोरिया भरी थीं। ☐ भूसा भरा था। ☐ अनाज भरा था।

(ख) हॉकी के खेल का अयोजन किस उद्देश्य से किया गया था?

☐ हॉकी का श्रेष्ठ खिलाड़ी चुनने के लिए।

☐ रियासत के लोगों को हॉकी का खेल सिखाने के लिए।

☐ अपनी एक विद्या का प्रदर्शन करने के लिए।

(ग) चुनाव के दिन सरदार सुजान सिंह ने कहा, इस पद के लिए ऐसे पुरूष की आवश्यकता थी—

☐ जिसके हृद्य में दया हो ☐ जिसके हृद्य में आत्मा बल हो ☐ दोनों

3. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) राजा साहब अपने अनुभवशील दीवान का बड़ा ____________ करते थे।

(ख) सरदार सुजान ने देवगढ़ के लिए एक ____________ को ढूँढने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन निकलवाया।

(ग) विज्ञापन ने सारे मुल्क में ____________ मचा दी।

(घ) किसान को देखकर युवक के मन में ____________ हुआ।

(ङ) सरदार साहब ने फरमाया, वह आदमी गरीबों को न सताएगा जो अपने ____________ को स्थिर रखेगा।

4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

(ख) गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

(ग) गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलता है।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

- **तत्सम और तद्भव शब्द–**

संस्कृत के वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में प्रयोग होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–अग्नि, हस्त, रात्रि, भगिनी, उच्च, अंधकार।

संस्कृत के वे शब्द जो थोड़े परिवर्तन के साथ प्रयोग होते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–आग, हाथ, रात, बहन, ऊँचा, अँधेरा।

1. नीचे लिखे शब्दों में तत्सम ओर तद्भव शब्द अलग-अलग छाँटकर लिखिए–

विनय, अवस्था, मिट्टी, परीक्षा, किवाड़, बूढ़ा, बच्चा, निर्णय, स्वार्थ, चुनाव, महीना, संकल्प।

तत्सम शब्द ____________________

तद्भव शब्द ____________________

2. संधि विच्छेद कीजिए–

मंदाग्नि ____________ सदाचार ____________

सहानुभूति ____________ स्वार्थ ____________

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

दाग लगना ____________________

____

मिट्टी में मिल जाना ____________________

____

नाक में दम करना ____________________

____

बंद आँखों से देखना ____________________

____

लक्ष्मी की कृपादृष्टि होना ____________________

____

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- एक चार्ट पेपर की सहायता से उस पर व्यक्तियों को कुछ असहाय व्यक्तियों की मदद करते हुए चित्रित कीजिए तथा इसे अपनी कक्षा में लगाइए।
- ''बूढ़ें व्यक्तियों की सहायता करना इस शीर्षक को ध्यान में रखते हुए अपनी कक्षा में इसका'' नाटक रूप में मंचन कीजिए।

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- सामान्य अर्थों में एक सच्चे मनुष्य का हृदय कैसा होना चाहिए, पेन्सिल/पेन की सहायता से एक चार्ट पर नोट कीजिए।
- अपने परिवार के सदस्यों और सहपाठियों से असहायों के प्रति उनके विचार जानने को कोशिश करें।

शिक्षण-संकेत

- बच्चों को इसी पाठ से सम्बन्धित कोई एक कहानी सुनाइए।
- सभी बच्चों में बूढ़ो, गरीबों, असहायों या अन्य किसी भी व्यक्ति के प्रति सहानुभूति की भावना को जाग्रत करें।

जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी 9

(लेख)

बचपन की बात है। उस समय आर्य समाज का सुधारवादी आंदोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्य समाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री-शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी–खासी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे, फिर भी घर में नियमित पत्र–पत्रिकाएँ आती थीं – 'आर्यमित्र', साप्ताहिक, 'वेदोदय', 'गृहिणी', और दो बाल– पत्रिकाएँ खास मेरे लिए - 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थीं परियों, राजकुमारों, दानवों और सुंदरी राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गई। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषद् और उनके हिंदी अनुवाद 'सत्यार्थ प्रकाश'। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन–मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आते थे, पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानंद की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रो से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरूद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्‌भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थीं। चूहे को भगवान का मीठा खाते देखकर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना, तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिम–शिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है? सत्य क्या है? जो भी समाज–विरोधी, मनुष्य–विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं, उनका खंडन करना और अंत में अपने हत्यारे को क्षमा करके उसे सहारा देना – यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देतीं। चिंतित रहती कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा कहीं खुद साधु बनकर घर से भाग गया तो? पिता कहते– "जीवन में यही पढ़ाई काम आएगी, पढ़ने दो।" मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रखे गए थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली–गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ। अतः स्कूल में मेरा नाम तब लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिताजी अँगुली पकड़कर मुझे घूमाने ले गए। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्‌टी के कुल्हड़ में पिलाया और सिर पर हाथ रखकर बोले– "वादा करो कि पाठयक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की

चिंता मिटाओगे।" उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चौथें दर्जे में मेरे अच्छे नंबर आए और पाँचवें दर्जे में तो फर्स्ट आया। माँ ने आँसू भरकर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नंबर सबसे ज्यादा थे, अतः स्कूल से इनाम में अंग्रेजी की दो किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती है। दूसरी किताब थी 'ट्रस्ट द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं– कितने प्रकार के होते हैं, कौन-कौन-सा माल लादकर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की जिदंगी कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक

खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनाई और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रखकर कहा, ''आज से यह खाना तुम्हारी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।'' यहाँ से आरंभ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्‌ठी करने की सनक क्यों सवार हुई। उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा-केंद्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित 'पब्लिक लाइब्रेरी' से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित 'भारती भवन' तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी 'हरि भवन'। स्कूल से छुट्‌टी मिली कि मैं उसमें जाकर जम जाता था। पिता दिवंगत हो चुके थे, लाइब्रेरी का चंदा चुकाने का पैसा नहीं था, अतः वहीं बैठकर किताबें निकलवाकर पढ़ता रहता था। अपने छोटे-से 'हरि भवन' में खूब उपन्यास थे। वहीं परिचय हुआ बंकिमचंद्र चट्‌टोपाध्याय की 'दुर्गेशनंदनी', 'कपाल कुंडला' और 'आनंद मठ' से। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना', विक्टर ह्युगों का 'पेरिस का कुबड़ा', गोर्की की 'मदर' और सबसे मनोरंजक सर्वा-रीज का 'विचित्र वीर' (यानी 'डॉन क्विक्जोट') हिंदी के ही माध्यम से सारी दुनिया के कथा-पात्रों से मुलाकात करना कितना आकर्षक था।

लाइब्रेरी खुलते ही पहुँच जाता और जब लाइब्रेरियन शुक्लती कहते कि ''बच्चे अब उठो, पुस्तकालय बंद करना है।'' तब बड़ी अनिच्छा से उठता। जिस दिन कोई उपन्यास अधुरा छूट जाता, उस दिन मन में कसक होती कि काश! इतने पैसे होते कि सदस्य बनकर किताब ईश्यू करा लाता या काश! इस किताब को खरीद पाता तो घर में रखता। एक बार पढ़ता, दो बार पढ़ता, बार-बार पढ़ता। पर जानता था कि यह सपना ही रहेगा। भला कैसे पूरा हो पाऐगा। पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि पूछिए मत। फिर मैंने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक याद है।

उस साल इंटरमीडिएट पास किया था। पुरानी पाठ्य-पुस्तकें बेचकर बी० ए० की पाठ्य-पुस्तकें

लेने सेकंड-हैंड बुक शॉप पर गया। उस बार जाने कैसे पाठ्य-पुस्तकें खरीदकर भी दो रूपये बच गए थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगा था – न्यू थियेटर्स वाला। बहुत चर्चा थी उसकी। लेकिन मेरी माँ को सिनेमा बिल्कुल नापसंद था। उसी से बच्चे बिगड़ते हैं। लेकिन उसके गाने सिनेमा-गृह के बाहर बजते थे। उसमें सहगल का एक गाना था 'दुःख के दिन अब बीतत नाहीं। उसे मैं अक्सर गुनगुनाता रहता था। कभी-कभी गुनगुनाते-गुनगुनाते आँखों से आँसू भी आ जाते थे, जाने क्यों ?

एक दिन माँ ने सुना। माँ का दिल तो आखिर माँ का दिल ! एक दिन बोली – "दुःख के दिन बीत जाएँगे बेटा, दिल इतना छोटा क्यों करता है, धीरज से काम ले।" जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो फ़िल्म 'देवदास' का गाना है, तो सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने कहा – "अपना मन क्यों मारता है, जाकर पिक्चर देख आ। पैसे मैं दे दूँगी।" मैंने माँ को बताया कि "किताबें बेचकर दो रूपये मेरे पास बचे हैं।" वे दो रूपये लेकर माँ की सहमति से फिल्म देखने गया। पहला शो छुटने में देर थी, पास में अपनी परिचित किताब की दुकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउंटर पर एक पुस्तक रखी है– 'देवदास', लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्या, दाम केवल एक रूपया। मैंने पुस्तक उठाकर उल्टी-पल्टी तो पुस्तक-विक्रेता बोला - "तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो। हमारे पुराने ग्राहक हो। तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह किताब दे दूँगा।" मेरा मन पलट गया। कौन देखे डेढ़ रूपये में पिक्चर ? दस आने में देवदास खरीदी। जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रूपये में से बचे एक रूपया छः आना माँ के हाथ में रख दिए।

"अरे तू लौट कैसे आया ?, पिक्चर नहीं देखी ?" माँ ने पूछा। "नहीं माँ ! फिल्म नहीं देखी, यह किताब ले आया, देखो।" माँ की आँखों में आँसू आ गए। खुशी के थे या दुःख के - यह नहीं मालूम। वह मेरे अपने पैसों से खरीदी, मेरी अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी।

लेखक - परिचय

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 को हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम0 ए0, पी-एच0 डी0 करने के पश्चात ये वहीं हिन्दी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए, फिर 'धर्मयुग' साप्ताहिक पत्रिका के संपादक होकर मुंबई चले गए। इनका निधन सन् 1986 में बंबई (वर्तमान मुंबई) में हुआ। धर्मवीर भारती नई कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार रहे है। 'अन्धयुग', 'कनूप्रिया', 'सात गीत-वर्ष', 'ठंडा लोहा', इनके काव्य संग्रह हैं। 'गुनाहों के देवता' ओर 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसे इनके उपन्यासों की हिंदी में बहुत चर्चा हुई है। 'गुल की बन्नों', 'बंद गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिंदी की नई कहानी में विशिष्ट स्थान है।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

आह्वान = बुलावा, नियमित = लगातार, नियम से, रोड = सड़क, कसक = टीस, प्रतिमाएँ = मूर्तियाँ, हिम–शिखर = बर्फीले पहाड़, ईश्यू कराना = निकलवाना, निर्गत करना, रोमांचित = अति प्रसन्न, पिक्चर = फिल्म, खंडन = विरोध, निजी = स्वयं की, अद्‌भुत = विचित्र, अनोखी, बालमन = बचपन का मन, तलाश = खोज, फर्स्ट = प्रथम, सेकंड हैंड बुक शाप = पुरानी पुस्तकों की दुकान, अक्सर = कभी–कभी, सहमति = आज्ञा, सहसा = अचानक।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) धर्मवीर भारती के पिता कहाँ के प्रधान थे?

(ख) लेखक के पिता की नौकरी कैसी थी?

(ग) लेखक को किसकी जीवनी पसंद थी?

(घ) लेखक धर्मवीर भारती 'देवदास' फिल्म का कौन-सा गीत गुनगुनाते रहते थे?

(ङ) लेखक की माँ की आँखों में आँसू क्यों आए थे?

(च) लेखक की माँ ने फिल्म देखने के लिए कितने पैसे दिए?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखक के पिता ने सरकारी नौकरी क्यों छोड़ दी थी?

____

(ख) बचपन में लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?

____

(ग) लेखक की माँ की चिंता का क्या कारण था?

____

(घ) लेखक को स्कूल से इनाम में मिली अंग्रेजी की दो किताबें किससे संबंधित थीं?

____

(ङ) लेखक धर्मवीर भारती 'हरि भवन' में बैठकर किन उपन्यासों को पढ़ा करते थे?

____

(च) शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की पुस्तक 'देवदास' को लेखक ने किस प्रकार खरीदी?

____

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) किसका आंदोलन पूरे जोर पर था?

☐ मजदूरों का। ☐ आर्य समाज का। ☐ देश-भक्तों का।

(ख) लेखक को उनके पिताजी ने अनार का शर्बत किसकी दुकान पर पिलाया?

☐ लोकनाथ की। ☐ अमरनाथ की। ☐ राजनाथ की।

(ग) लेखक ने किस विषय में सबसे अधिक नंबर आए थे?

- [ ] हिंदी में।
- [ ] विज्ञान में।
- [ ] अंग्रेजी में।

(घ) लेखक ने दस आने में कौन-सी पुस्तक खरीदी?

- [ ] ठंडा लोहा।
- [ ] देवदास।
- [ ] आर्यमित्र।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) ______________ के आह्वान पर लेखक के पिताजी ने सरकारी नौकरी छोड़ दी।

(ख) लेखक को 'स्वामी दयानंद की जीवनी' नामक पुस्तक ______________ थी।

(ग) ______________ भारत के प्रसिद्ध शिक्षा-केंद्रो में एक रहा है।

(घ) लेखक के मुहल्ले में एक ______________ नामक लाइब्रेरी थी।

(ङ) लेखक ______________ पिक्चर देखना चाहता था।

(च) लेखक की माँ को ______________ बिल्कुल पसंद नहीं था।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। और विशेषण शब्द जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे – 'ताजा अनार' में ताजा शब्द विशेषण है और 'अनार' शब्द विशेष्य है।

- **निम्नलिखित विशेषणों के साथ उचित विशेष्य लिखिए–**

काली	______________	ऊँचा	______________	कुछ	______________
छोटे	______________	खट्टी	______________	योग्य	______________
मीठे	______________	उदार	______________	सरल	______________
परिश्रमी	______________	कपटी	______________	ईमानदार	______________
योग्य	______________	आकर्षक	______________	कमजोर	______________

2. जिन संज्ञा-शब्दों से संपूर्ण जाति का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–

लड़का पुस्तक बच्चा नदी पर्वत माता

- **उपर्युक्त शब्दों का अपने वाक्यों में एकवचन या बहुवचन के रूप में प्रयोग कीजिए–**

____

____

3. इस पाठ में अंग्रेजी के कई शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे – रोड, फर्स्ट, लाइब्रेरी, ईश्यू, सेकंड-हैंडए पब्लिक, मदर, शॉप, थियेटर, पिक्चर, ईस्ट इंडिया, आदि। इन शब्दों का हिंदी अर्थ लिखिए–

____

____

4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

शौक	______	खास	______	अलावा	______
कोशिश	______	मजा	______	तलाश	______
भर्ती	______	शाम	______	किताब	______

5. निम्नलिखित संज्ञाएँ किस प्रकार की हैं- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक या भाववाचक ? लिखिए–

यमुना	______	पुस्तकालय	______	कोलकाता	______
गंगा	______	सोना	______	ऊँचाई	______
दिल्ली	______	फूल	______	पत्ते	______
धीरज	______	नेपोलियन	______	शत्रुता	______

6. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

बचपन	______	कायर	______	आकाश	______
उन्नति	______	आदि	______	आशा	______
उदय	______	इच्छा	______	पसंद	______
आरंभ	______	गहरा	______	निरक्षर	______

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **इंटरनेट या लाइब्रेरी के माध्यम से कुछ प्रसिद्ध कवियों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।**
- **हिन्दी भाषा में वर्णित कुछ प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं को एकत्रित करके उन्हें एक बड़ी फाइल के रूप में प्रदर्शित कीजिए।**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **दिये गए शब्दों के गलत पर्याय पर निशान लगाइए–**

(क)	आरंभ	–	शुरू	○	प्रारंभ	○	पूर्ण	○
(ख)	अद्भुद	–	अलग	○	विचित्र	○	शांत	○
(ग)	आकर्षक	–	विचित्र	○	सुन्दर	○	उत्कृष्ठित	○
(घ)	संकट	–	मुसीबत	○	विपदा	○	युद्ध	○

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को कक्षा में कवियों के बारे में व उनकी पत्र-पत्रिकाओं के बारे में ज्ञान दें।
- किसी एक प्रसिद्ध लेखक के बारे में बच्चों को जानकारी व जीवन परिचय के विषय में जानकारी दें तथा उनकी साहित्यिक व ऐतिहासिक रचनाएँ एकत्रित करने के लिए कहें।

भारत की गरिमा 10

(प्रेरक प्रसंग)

''देखो माँ! मैंने एक कविता लिखी है— सुनाऊँ!'' माता ने आश्चर्य से उसकी ओर देखकर कहा, ''लेकिन तुम तो बीजगणित के सवाल हल कर रही थीं।'' ''हाँ, कर तो रही थी लेकिन जब वह समझ में नहीं आया तो मैंने एक कविता लिख डाली।'' उसके बार-बार आग्रह करने पर माँ कविता सुनने बैठ गईं। तभी उसके पिता जी भी वहाँ पहुँच गए। अपनी ग्यारह वर्ष की बिटिया सरोजिनी के मुँह से इतनी सुंदर और सुरीली कविता सुनकर माता-पिता गद्गद हो गए। उन्होंने बेटी को शबाशी देकर कहा, ''तू तो गाने वाली चिड़िया जैसी है।'' माता-पिता की यह बात सत्य सिद्ध हुई। अब तो लिखने का जो क्रम चला, वह चलता ही रहा। 13 वर्ष की अवस्था में उसने 1300 पंक्तियों की एक लंबी कविता और दो हज़ार पंक्तियों का नाटक लिख डाला। सरोजिनी का कंठ अत्यंत मधुर था। वे जब कविता-पाठ करने लगतीं तो उनका मधुर-स्वर सुनकर श्रोता मंत्र-मुग्ध हो जाते। यही कारण है कि सरोजिनी को 'भारत कोकिला' की उपाधि प्रदान की गई।

सरोजिनी का जन्म 13 फरवरी, सन 1879 ई० को हैदराबाद में हुआ था। पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय तथा माता वरदासुंदरी की काव्य-लेखन की प्रतिभा अपने माता-पिता से विरासत में पाई थी।

काव्य-रचना के साथ-साथ सरोजिनी का अध्ययन कार्य भी चलता रहा। सन 1890 ई० में, सरोजिनी ने मद्रास विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसने सब छात्रों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। एक बालिका के लिए ऐसी सफलता प्राप्त करना उन दिनों असाधारण बात थी। अध्ययन के साथ-साथ सरोजिनी में गंभीरता आती गई। उनकी कविता के विषय भी बदल गए। अब वे अपना समय स्वतंत्र अध्ययन करने और उच्च कोटि की कविताएँ लिखने में लगाना चाहती थीं। उच्च शिक्षा के लिए उन्हे इंग्लैंड भेजा गया। यहाँ उनका परिचय प्रसिध साहित्यकार एडमंड गॉस से हुआ। सरोजिनी की कविता-लेखन की क्षमता और रुचि को देखकर उन्होंने भारतीय समाज को ध्यान में रखकर लिखने का सुझाव दिया। यहाँ पर सरोजिनी ने तीन संग्रह लिखे।

1. द गोल्डन थ्रेश होल्ड 2. द ब्रोकेन विंग्स 3. द सैप्टर्ड फ़्लूट

''लिए बाँसुरी हाथों में हम घूमें गाते-गाते,
मनुष्य सब हैं बंधु हमारे, जग सारा अपना है।।''

ये पंक्तियाँ 'द गोल्डेन थ्रेश होल्ड' की हैं। इस पुस्तक से इंग्लैंड का साहित्य-जगत आश्चर्यचकित रह गया। साहित्यकारों, समालोचकों और समाचार-पत्रों ने एक स्वर में उनकी प्रशंसा की। भारत ने भी इस सफलता पर सरोजिनी का अभिनंदन किया।

भारत लौटने पर सरोजिनी का विवाह गोविंदराजुल नायडू के साथ हुआ। वे हैदराबाद के रहने वाले थे तथा सेना में डॉक्टर थे। इस अंतर-प्रांतीय और अंतर्जातीय विवाह के लिए ब्रह्म समाजी विचार के माता-पिता ने सहर्ष अनुमति प्रदान की। उनका वैवाहिक जीवन बड़ा सुखी था।

गोपाल कृष्ण गोखले तथा महात्मा गांधी के साथ आने पर सरोजिनी नायडू राष्ट्रप्रेम तथा मातृभूमि को संबोधित कर कविताएँ लिखने लगीं।

''श्रम करते हैं हम, कि समृद्ध हो तुम्हारी जागृति का पल।

हो चुका जागरण, अब देखो, निकला दिन कितना उज्ज्वल।''

सरोजिनी नायडू की इन पंक्तियों को पढ़कर सहज की अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका हृदय देश-प्रेम से सर्वथा ओत-प्रोत रहा था। सन 1912 ई0 में, 'द बर्ड ऑफ़ टाइम' नामक कविता संग्रह का प्रकाशन हुआ। इनकी प्रशंसा करते हुए 'यार्क शायर पोस्ट' नामक पत्र ने लिखा था- ''श्रीमती नायडू ने हमारी भाषा को तो समृद्ध किया ही है, पूर्वी देशों की भावना और आत्मा से भी हमारा निकट का संपर्क कराया है।''

सरोजिनी नायडू में तारों तक पहुँचने के लिए ऊपर उठने की चाह थी। उन्होंने अपने कविता संग्रह 'द ब्रोकन विंग्स' में लिखा है–

''ऊँचा उठती हूँ मैं पहूँचूँ नियत झरने तक।

टूटे ये पंख लिए, मैं चढ़ती हूँ ऊपर तारों तक॥''

गोपाल कृष्ण गोखले सरोजिनी के अच्छे मित्र थे। वे उस समय भारत को अंग्रेज़ी सरकार से मुक्त कराने का कार्य कर रहे थे। इस कार्य से सराजिनी बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने कहा—''देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़ा देखकर कोई भी ईमानदार इनसान बैठकर केवल गीत नहीं गुनगुना सकता। कवयित्री होने की सार्थकता इसी में है कि संकट की घड़ी में, निराशा और पराजय के क्षणों में आशा का संदेश दे सकूँ।'' ऐसा दृढ़ संकल्प करके सरोजिनी ने देशभर का भ्रमण किया।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल होने के बाद उनका कविता-लेखन का कार्य धीमा पड़ गया, लेकिन जो स्थान अंग्रेज़ी काव्य में उन्होंने अपने लिए बना लिया था, वह आज भी विद्यमान है।

सरोजिनी को लेखनी के साथ-साथ वाणी का भी वरदान मिला था। लोग उनके धारा-प्रवाह भाषण को मंत्र-मुग्ध होकर सुना करते थे। वे पर्दा-प्रथा, हिंदू-मुस्लिम एकता और स्वदेशी अपनाओ जैसे विषयों को लेकर देश के विभिन्न भागों में जागृति का संदेश पहुँचाने गईं। इनके जोशीले भाषणों की देश-भर में बड़ी धूम थी। जब गांधी जी के साथ सन 1916 ई0 में ये कांग्रेस अधिवेशन में गईं तब जवाहरलाल नेहरू से उनकी पहली भेंट हुई थी। नेहरू जी ने लिखा है—''मैं उन दिनों सरोजिनी नायडू के कई धारा-प्रवाह भाषणों से प्रभावित हुआ था। वे राष्ट्रीयता और देश-भक्ति से भरी-पूरी थीं।''

सन 1919 ई0 में जब प्रथम सत्याग्रह-संग्राम का प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया गया तो उसमें उन्होंने बढ-चढ़ कर भाग लिया। सन 1922 ई0 में गांधी जी पर मुकदमा चला और इन्हें 6 वर्ष की सज़ा हो गई। इस समय सरोजिनी ने खद्दर के वस्त्र धारण किए और देश के कोने-कोने में सत्याग्रह संग्राम का संदेश पहुँचाने के कार्य में लग गईं। इस समय ये कवयित्री होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम की उच्च कोटि की नेता भी थीं।

सन 1925 ई0 में इन्हें भारतीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया गया। इस समय गांधी जी ने उत्साह भरे शब्दों में उनका स्वागत किया और कहा—''पहली बार एक भारतीय महिला को देश की सबसे बड़ी सौगात मिली है।''

सन 1930 ई0 में गांधी जी ने 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' में 'दांडी मार्च' किया और नमक कानून तोड़ा। सरोजिनी महिलाओं के दल के साथ पहले से समुद्र के किनारे उपस्थित थीं। सन 1942 ई0 में गांधी जी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में उन्होंने भाग लिया। आज़ादी की लड़ाई में उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा लेकिन वे कभी पीछे नहीं हटीं।

अंततः भारत के लिए वह सुनहरा दिन भी आया जिसकी लोगों को वर्षों से प्रतीक्षा थी। भारत स्वतंत्र हुआ और श्रीमती सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद पर का भार सौंपा गया। उत्तरदायित्व के इतने उच्च पद पर आसीन होने वाली वे भारत की प्रथम महिला थीं। उनके कार्यकाल में उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक जीवन में नया उत्साह दिखाई दिया।

सरोजिनी को इस बात का अच्छी तरह अनुभव था कि नारी अपने परिवार, देश के लिए कितना महान कार्य कर सकती है। इसलिए उन्होंने नारी-मुक्ति और नारी-शिक्षा आंदोलन शुरू किया। नारी विकास को ध्यान में रखकर वे 'अखिल भारतीय महिला परिषद' की सदस्य बनीं। सरोजिनी नायडू का व्यवहार बहुत सामान्य था। वे राजनीतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ गीत और चुटकुलों का आनंद लिया करती थीं। प्रकृति से उन्हें बड़ा प्रेम था।

जब 30 जनवरी, सन 1948 को दिल्ली में राष्ट्रपिता गांधी की हत्या कर दी गई तो इस वज्रपात से सरोजिनी नायडू मार्महत हो उठीं। देश भर में उदासी छा गई। सरोजिनी नायडू ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा-"मेरे गुरू, मेरे नेता, मेरे पिता की आत्मा शांत होकर विश्राम न करे बल्कि उनकी राख गतिमान हो उठे। चंदन की राख, उनकी अस्थियाँ इस प्रकार जीवंत हो जाएँ और उत्साह से परिपूर्ण हो जाएँ कि समस्त भारत उनकी मृत्यु के बाद स्वतंत्रता पाकर पुनर्जीवित हो उठे। मेरे पिता विश्राम मत करो, न हमें विश्राम करने दो। हमें अपना वचन पूरा करने की क्षमता दो। हमें अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने की शक्ति दो। हम तुम्हारे उत्तराधिकारी हैं, संतान हैं, संवक हैं, तुम्हारे स्वप्न रक्षक हैं। भारत के भाग्य-निर्माता हैं, तुम्हारा जीवनकाल हम पर प्रभावी रहा है, अब तुम मृत्यु के बाद भी हम पर प्रभाव डालते रहो।" गांधी जी की मृत्यु का आघात उनके लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। 1 मार्च, सन 1949 को जब वे बीमार थीं तो उन्होंने नर्स से गीत सुनाने का आग्रह किया। नर्स का मधुर गीत सुनते-सुनते वे चिरनिद्रा में सो गईं।

2 मार्च, सन 1949 को प्रातः साढ़े तीन बजे भारत कोकिला सदा के लिए मौन हो गईं। लेकिन उनकी मृत्यु तो केवल शरीर से हुई है, अपने यशरूपी शरीर से वे आज भी हमारे बीच में हैं।

अपनी एक कविता में उन्होंने मृत्यु को कुछ देर ठहर जाने के लिए कहा है—

"मेरे जीवन की क्षुधा, नहीं मिटेगी जब तक,
मत आना हे मृत्यु, कभी तुम मुझ तक।"

सरोजिनी नायडू ने जो जीवनभर विभिन्न रूपों में देश की सेवा की है, इसके लिए हम भारतवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

बीजगणित = गणित की एक शाखा, आग्रह = निवेदन, काव्य-लेखन = कविता लिखना, उत्तीर्ण = सफल, गंभीरता = संजीदगी, साहित्यकार = लेखक, कवि, अभिनंदन = स्वागत, अंतर-प्रांतीय = विविध प्रांतों के पारस्परिक व्यवहार, अंतर्जातीय = दो या अधिक जातियों में होनेवाला से संबंधित, समृद्ध = वैभवशाली, चिरनिद्रा = मृत्यु, विद्यमान =

मौजूद, सार्थकता = उपयोगिता, जागृति = सजगता, क्षुधा = भूख, धारा–प्रवाह = लगातार, बिना रुके, सौगात = उपहार प्रतिज्ञा–पत्र = इकरारनामा, उत्तराधिकारी = वारिस, उत्तरदायित्व = ज़िम्मेदारी, मर्माहत = जिसके मर्म पर आघात किया गया हो, गतिमान होना = जिसमें गति पैदा हो, पुनर्जीवित = फिर से जीवित किया गया

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) सरोजिनी का जन्म कहाँ हुआ था? उनके माता–पिता का क्या नाम था?

(ख) इंग्लैंड में प्रकाशित सरोजिनी के तीन कविता संग्रहों के नाम बताइए।

(ग) तेरह वर्ष की अवस्था में सरोजिनी नायडू ने क्या–क्या सीख लिया था?

(घ) सरोजिनी नायडू की मृत्यु कब हुई थी?

लिखित (Written)

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सबसे पहले कविता लिखकर सरोजिनी नायडू ने किसे सुनाई?

☐ अध्यापिका को ☐ सहेलियों को ☐ माता–पिता को

(ख) सरोजिनी नायडू का जन्म कब हुआ था?

☐ 13 फरवरी, 1879 ☐ 13 फरवरी, 1878 ☐ 12 फरवरी, 1879

(ग) 13 वर्ष की अवस्था में सरोजिनी नायडू ने कितनी पंक्तियों की एक कविता लिखी?

☐ 1500 ☐ 700 ☐ 1300

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सरोजिनी नायडू के व्यक्तित्व की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

___

(ख) पाठ के आधार पर सरोजिनी जी के जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

___

(ग) यदि सरोजिनी जी को शिक्षा का अवसर न मिला होता तो क्या उनकी प्रतिभा निखर पाती? अपनी राय दीजिए।

___

(घ) गांधी जी की हत्या के बाद सरोजिनी नायडू ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए क्या कहा?

___

(ङ) सरोजिनी नायडू की मृत्यु किस प्रकार हुई?

____

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए वर्ग में से शब्द छाँटकर विलोम शब्दों के जोड़े बनाइए तथा उन्हें दिए गए स्थान पर लिखिए–

__________ × __________   __________ × __________
__________ × __________   __________ × __________
__________ × __________   __________ × __________

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए उचित संज्ञा शब्दों से कीजिए।

(क) मई के महीने में बहुत __________ होती है। (गरम / गरमी)
(ख) वर्षा से खेतों की __________ हो जाती है। (सींचती / सिंचाई)
(ग) __________ जीत जीवन के दो पहलू हैं। (हारना / हार)
(घ) सरोजिनी नायडू की आवाज़ में बहुत __________ थी। (मिठास / मीठा)
(ङ) हम भारतवासी __________ के सूत्र में बँधे हैं। (एकत्व / एकता)

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

(क) पुस्तकालय से सरोजिनी नायडू द्वारा रचित किसी पुस्तक को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

(ख) सरोजिनी नायडू पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए, जिसमें निम्न बिंदुओं को शामिल कीजिए—

सरोजिनी नायडू का जन्म   उनकी शिक्षा
उनकी साहित्यिक यात्रा   उनके अंतिम दिन

इसके लिए आप इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

(ग) यदि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरोजिनी नायडू का स्वर्गवास इतनी जल्दी न होता तो वे स्वतंत्र भारत की उन्नति में किस तरह अपना योगदान देतीं, कल्पना करके लिखिए।

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से जुड़े प्रेरक-प्रसंगों को पढ़िए। अपनी डायरी में लिखिए कि आज़ादी की महान लड़ाई किस प्रकार लड़ी गई।**
- **सरोजिनी नायडू की जीवनी पर एक छोटी-सी कविता लिखने का प्रयास कीजिए।**

शिक्षण-संकेत

- विद्यार्थियों को स्वतंत्रता-संग्राम पर आधारित पुस्तकों की सहायता से सरोजिनी नायडू के विषय में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने के लिए प्रेरित कीजिए।

11 श्रेय
(कविता)

कहा किसी ने–पेड़, तुम इतने बड़े हो,
इतने *कड़े* हो,
न जाने कितने *बरसों* से,
आँधी-पानी में सीधे खड़े हो,
और हाँ, सिर ऊँचा किए,
अपनी जगह पर *अड़े* हो।

सूरज उदय होता है,
चाँद बढ़ता-घटता है,
ऋतुएँ बदलती हैं,
बिजली गिरती है,

और तुम सब सहते हुए,
विनम्रता की हरियाली को ओढ़े,
लौह-स्तंभ की तरह खड़े हो,
अपनी जगह पर अड़े हो।

पेड़ काँप उठा,
अनहोनी को *भाँप उठा*,
पत्तियाँ चुप न रह सकीं,
सर्र-सर्र का शब्द गूँजा,

नहीं-नहीं झूठा श्रेय,
मुझे मत दो, मुझे मत दो,
मै तो बार-बार झुका, गिरा,
डालियाँ टूटीं और मैं *उखड़ा*,
सूखा ठूँठ होकर कैसे *उजड़ा*।

श्रेय देना हो तो दो,
मेरे पैरों *तले* की मिट्टी को,
जिसने न जाने कैसे मेरी जड़ों को,
अपनी गोद में सँभलाकर रखा।।

कवि परिचय

अज्ञेय का जन्म 7 मार्च, 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के 'कुशीनगर' नामक स्थान पर हुआ था। अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। उन्हें अपने कविता संग्रह 'आँगन के पार द्वार' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 'महावृक्ष के नीचे', 'हरी घास पर क्षण भर' आदि इनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह तथा 'जयदोल' इनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। 'अपने-अपने अजनबी', 'शेखरः एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 4 अप्रैल, 1987 को इनका निधन हो गया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

कड़े = कठोर, बरसों = सालों, अड़े = स्थित, लौह-स्तंभ = लोहे का खंभा, अनहोनी = जो नहीं होना चाहिए, भाँप उठा = आभास हो गया, उखड़ा = जमीन से अलग हो जाना, उजड़ा = नष्ट होना, तले = नीचे

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) किसी ने क्यों कहा कि पेड़ अपनी जगह पर अड़ा हुआ है?

(ख) पेड़ किसकी तरह खड़ा है?

(ग) पेड़ ने क्या भाँप लिया?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कविता में पेड़ को 'लौह-स्तंभ' क्यों कहा गया है?

____

(ख) पेड़ क्यों काँप उठा?

____

(ग) 'पत्तियाँ चुप न रह सकीं'— पत्तियों ने चुप न रहकर क्या किया?

____

(घ) किसी ने पेड़ से क्या कहा? संक्षेप में बताइए।

____

(ङ) पेड़ ने किसे श्रेय दिया और क्यों?

____

(च) कैसे पता चलता है कि पेड़ अपनी जगह पर अड़ा हुआ है?

____

(छ) 'विनम्रता की हरियाली को ओढ़े'– से कवि का क्या तात्पर्य है?

____

(ज) 'अनहोनी को भाँप उठा'— यहाँ कवि किस अनहोनी की बात कर रहा है?

____

(झ) पेड़ ने कौन-सा झूठा श्रेय नहीं लिया?

____

(ञ) यदि पेड़ दिया गया श्रेय स्वयं ले लेता, तो आप पेड़ के बारे में क्या सोचते?

____

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पेड़ कैसी स्थिति में सीधा खड़ा है?

☐ धूप-ताप में ☐ आँधी-पानी में ☐ प्रेम-प्यार में

(ख) पेड़ कैसी हरियाली ओढ़े खड़ा है?

☐ श्रेष्ठता की ☐ अच्छाई की ☐ विनम्रता की

(ग) पेड़ क्या नहीं लेना चाहता?

☐ झूठा श्रेय ☐ धन-संपदा ☐ खाद-पानी

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे लिखे शब्दों को संज्ञा के भेदों के अनुसार छाँटकर लिखिए–

पत्तिया, मित्रता, विनम्रता, ऋतुएँ, पेड़, गंगा, हरियाली, आम, करुणा, सूरज, चाँद, माली

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
____________	____________	____________
____________	____________	____________
____________	____________	____________
____________	____________	____________

2. विलोम शब्द लिखिए–

झूठा × ____________ उदय × ____________

सूखा × ____________ घटता × ____________

विनम्रता × ____________ ऊँचा × ____________

3. दिए गए शब्दों के लिंग पहचान कर रिक्त स्थान में 'पुल्लिंग' या 'स्त्रीलिंग' लिखिए–

(क) सूरज ______________ (ङ) चाँद ______________

(ख) धरती ______________ (च) पेड़ ______________

(ग) डालियाँ ______________ (छ) मिट्टी ______________

(घ) स्तंभ ______________ (ज) पत्तियाँ ______________

(झ) बिजली ______________ (ञ) आँधी ______________

4. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों को छाँटकर तालिका के अनुसार लिखिए–

टेकड़ी, टोपी, अग्नि, मुश्किल, नींद, निशान, उपजाऊ, मुकाम, हास्य, गरमी, मूर्खता, सौदागर, अभिलाषा, क्षेत्र, फैंसी, थियेटर, दुभाषिये, हिमाकत, सूर्य, धौंकनी

(i) तत्सम शब्द – ______________________________

(ii) तद्भव शब्द – ______________________________

(iii) देशज शब्द – ______________________________

(iv) विदेशी शब्द – ______________________________

5. समान तुक वाले शब्द लिखिए–

(i) बड़े हो ______________ (ii) काँप उठा ______________

(iii) उखड़ा ______________ (iv) बदलती है ______________

(v) गिरा ______________ (vi) उड़ती है ______________

6. रिक्त स्थानों में पर्यायवाची शब्द लिखिए–

घर – ______________ ______________

अँधेरा – ______________ ______________

अतिथि – ______________ ______________

इच्छा – ______________ ______________

जंगल – ______________ ______________

नदी – ______________ ______________

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मनुष्यता' पढ़िए।**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की अन्य तीन कविताएँ संकलित कीजिए। उन कविताओं को अपनी परियोजना कॉपी में लगाइए।**

राखी की मर्यादा 12
(एकांकी)

(1)

(गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने चित्तौड़ को घेर रखा है। चित्तौड़गढ़ के भीतरी भाग में स्वर्गीय महाराणा साँगा की पत्नियाँ-कर्मवती और जवाहरबाई तथा अन्य क्षत्राणियाँ थालियों में राखियाँ सजाए खड़ी हैं। बहनें टीका करके भाइयों को राखी बाँधनी हैं और तलवारें देती हैं।

कर्मवती — कर्मवती मेवाड़ के महाराणा साँगा की पत्नी थीं। महाराणा साँगा ने तराइन के मैदान में पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी की लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान का साथ दिया था जिसमें वे शहीद हो गए। बाद मे इनके पुत्र कर्णसिंह राजा बने तथा कर्मवती संरक्षिका के रूप में सहायता कर रही थीं।

श्रावणी — श्रावण मास की पूर्णिमा को श्रावणी कहते हैं। इस दिन बहिनें भाइयों को राखी बाँधती हैं और भाई बहिनों की रक्षा का संकल्प लेते हैं।

कर्मवती — मेवाड़ में ऐसी रंगीन श्रावणी कभी न आई होगी। भाइयो! क्षत्राणियों की राखियाँ सस्ती नहीं होतीं। हमारे तारों का प्रतिदान सर्वस्व बलिदान है। जिन्हें प्राण चढ़ाने का शौक हो, वे ही ये राखियाँ स्वीकार करें।

एक क्षत्रिय — मेवाड़ के क्षत्रियों को यह बात नए सिरे से नहीं समझानी होगी। माँ, हम लोग सदियों ये हँसते-हँसते प्राण देते आए हैं। हमारी इस अजस्त्र शक्ति का स्रोत और कहाँ है? बहनों की राखियों के धागे ही तो हमें बल देते आए हैं।

अर्जुन — बहन, तुम्हारे भाई के लिए यह राखी ही जीवन का ध्रुवतारा है। आज यह मरण

की ओर इशारा कर रही है, तो क्या हम इसका आदेश अमान्य कर सकते है। केवल नक्शे की लकीर देखकर ही तो देश पर प्राण नहीं दिए जा सकते। तुम्हारी राखी के धागों ने ही तो उन लकीरों का महत्व समझाया है। जिस प्रकार इन धागों में असीम स्नेह, ममत्व, वेदना और आशीर्वाद भरा है। उसी प्रकार उन लकीरों में भी है। ये धागे असीम, स्नेह, ममत्व, वेदना और आशीर्वाद के प्रतीक हैं।

कर्मवती — धन्य हो, वीरो! तुमसे यही आशा थी। अच्छा आओ, राखी की इस मर्यादा में बँधकर प्रतिज्ञा करो कि प्राण रहते मेवाड़ की पताका को झुकने न देंगे।

सब — यही होगा। माँ, यही होगा।

कर्मवती — मेवाड़ के सपूतों, मेवाड़ का अभिमान तुम्हीं हो। तुम्हारी कीर्ति अमर हो। जाओ, रणभूमि, तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। (क्षत्रियों का अभिवादन करके प्रस्थान।)

कर्मवती — बहनो! तुम शीघ्र जाकर घर-घर में वीर-व्रत की तैयारी करो।

(जवाहरबाई के अतिरिक्त सब बहनों का प्रस्थान)

कर्मवती — हाँ, बाघसिंहजी! युद्ध का क्या हाल है?

बाघसिंह — राजपूत वीरता से लड़ रहे हैं, किंतु एक तो हमारी संख्या बहुत कम है, दूसरे, शत्रु का यूरोपियन तोपखाना आग उगल रहा है। उसका मुकाबला तलवारों से तो हो नहीं सकता। हमें मरना है। हम हँसते-हँसते मरेगें और बहुतों को मारकर मरेंगे, पर दुःख है तो यही कि मेवाड़ के मान की रक्षा न कर पाएँगे।

कर्मवती — बड़ा कठिन प्रसंग है। इस समय मेरे स्वामी नहीं हैं। उनके रहते मेवाड़ की ओर आँख उठाने का किसमें साहस था? उनके आतंक से मेवाड़ के बाहर कभी दूर-दूर तक अत्याचारियों के प्राण काँपा करते थे? मेवाड़ की सीमा में पैर रखने का तो साहस ही किसमें हो सकता था? बाघसिंहजी, हमने आपस के वैमनस्य की आग में अपने ही हाथों अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया।

बाघसिंह — अब पश्चाताप करने से क्या होता है, देवि! अब तो हमें मार्ग बताइए। ऐसे प्रसंगो पर विवेक अनुशासन के चरणों में झुक जाता है।

कर्मवती — मुझे एक उपाय सूझा है।

बाघसिंह — क्या ?

कर्मवती — मैं हुमायूँ को राखी भेजूँगी।

जवाहरबाई — हुमायूँ को! एक मुगल को भाई बनाओगी?

कर्मवती — चौकती क्यों हो, जवाहरबाई! मुगल भी इंसान हैं। उनके भी बहनें होती हैं। सोचो तो बहन, क्या वे मनुष्य नहीं है। क्या उनके हृदय नहीं हैं? वे ईश्वर को खुदा कहते हैं, मंदिर में न जाकर मस्जिद में जाते हैं, क्या इसीलिए हमें उनसे घृणा करनी चाहिए।

बाघसिंह — किंतु और भी तो बाधाएँ हैं। क्या हुमायूँ पुराना वैर भुला सकेगा? सीकरी के युद्ध में जख्मों के निशान क्या आसानी से मिट सकेंगे?

कर्मवती — हमारी राखी वह शीतल प्रलेप है जो सारे घाव भर देता है, वह वरदान है जो सारे वैर-भावों को जलाकर भस्म कर देता है। राखी पाने के बाद भी क्या कोई वैर-विरोध याद रख सकता है?

जवाहरबाई — मुगल भारत के शत्रु हैं।

कर्मवती — ऐसा न कहो। उन्हें भी तो भारत में जीना-मरना है। हमारी तरह भारत उनकी भी जन्म-भूमि हो चुकी है। अब उन्हें काफिलें में लादकर उस जगह तो नहीं भेजा जा सकता जहाँ से उनके पूर्वज आए थे। उन्हें यहाँ रहना पड़ेगा और हमें उन्हें रखना होगा। वे हमें भाई समझें और हम उन्हें। यही स्वाभाविक है, यही उचित है। इस विकट अवसर पर मेवाड़ की रक्षा का और उपाय ही क्या है? बाघसिंहजी, आप ही कुछ बताइए आपकी क्या सहमति है?

बाघसिंह — हम तो आज्ञा-पालन करना जानते हैं, सम्मति देना नहीं।

कर्मवती — अच्छा तो फिर वही हो। भ्रातृत्व और मनुष्यत्व पर विश्वास करके हुमायूँ की परीक्षा ली जाए। लो यह राखी और यह पत्र, आज ही दूत के हाथ बादशाह हुमायूँ के पास भेजिए।

(राखी और पत्र देती है।)

जवाहरबाई — अच्छी बात है हम भी देखेंगी कि कौन कितने पानी में है। इस बहाने एक मुगल की मनुष्यता की परीक्षा हो जाएगी और यह भी प्रकट हो जाएगा कि एक राजपूतनी की राखी में कितनी ताकत है। (पटाक्षेप)

(2)

बिहार में गंगा-तट पर हुमायूँ का फौजी डेरा। अपने खास तंबू में हुमायूँ और उसके सेनापति हिंदूबेग और तातारखाँ बैठे हैं। एक पहरेदार का प्रवेश)

पहरेदार — (अभिवादन करके) जहाँपनाह!

हुमायूँ — क्या है?

पहरेदार — खिदमत में मेवाड़ से एक दूत आया है।

हुमायूँ — मेवाड़ से मेवाड़ से दूत आया है? अच्छा, यहीं भेज दो।

(पहरेदार का प्रस्थान)

हुमायूँ — (स्वागत) मेवाड़ से दूत! मेवाड़ लफ्ज में ही कुछ जादू है, बयाना और सीकरी की लड़ाई में मैं भी अब्बाजान के साथ था। राजपूतों से हमारी फौज कैसा खौफ खाती थी! राणा साँगा! उन्हें तो खुदा ने फौलाद से बनाया था। उनकी तिरछी नजर कयामत का पैगाम थी। मेवाड़ पर आजकल बहादुरशाह ने चढ़ाई कर रखी है न?

(दूत का प्रवेश)

हुमायूँ — आओ, मेवाड़ के बहादुर!

दूत — (अभिवादन करके) स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंह जी की महारानी कर्मवती ने आपको यह सौगात भेजी है।

हुमायूँ — (हाथ बढ़ाकर) मेरी किस्मत। हिंदूबेग! तुम जानते हो कि मैं मेवाड़ की बहुत इज्जत करता हूँ और हर एक बहादुर आदमी को करनी चाहिए। वहाँ की खाक भी सिर पर लगाने की चीज है, वहाँ के जर्रे-जर्रे में बहिश्त है।

तातारखाँ — दुश्मन की तारीफ करने में जहाँपनाह से बढ़कर...

हुमायूँ — दुश्मन! हःहःहः! तुम आँखों पर से तअस्सुब का चश्मा हटाकर देखो। जिन्हें हम दुश्मन समझते हैं, वे सब हमारे भाई हैं, हम एक ही खुदा के बेटे हैं, तातार! हाँ देखूँ तो इसमें क्या लिखा है।

(हुमायूँ पत्र पढ़ते-पढ़ते मगन हो जाता है।)

हिंदूबेग — क्या सपना देखने लगे, जहाँपनाह! महारानी कर्मवती ने क्या जादू का पिटारा भेजा है?

हुमायूँ — सचमुच हिंदूबेग, उन्होंने जादू का पिटारा भेजा है। मेरे सूने आसमान में उन्होंने मुहब्बत का चाँद चमकाया है। उन्होंने मुझे राखी भेजी है, मुझे अपना भाई बनाया है। (दूत से) बहन कर्मवती से कहना, हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा न हुआ तो क्या, वह तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है। कह देना - मेवाड़ की इज्जत मेरी इज्जत है। जाओ। (दूत का प्रस्थान)

तातारखाँ — आपके अब्बाजान के जानी दुश्मन की औरत से............

हिंदबेग — उसी औरत ने, जिसके खाविंद ने कसम खाई थी कि मुगलों को हिंदुस्तान के बाहर खदेड़े बगैर चित्तौड़ से कदम न रखूँगा।

हुमायूँ — अफसोस, कि तुम इस राखी की कीमत नहीं जानते। छोटे-छोटे दो धागे जानी दुश्मन को भी मुहब्बत की जंजीर में जकड़ देते हैं। यह खुशकिस्मती है कि मेवाड़ की बहादुर महारानी ने मुझे भाई बनाया है और बहादुरशाह से मेवाड़ की हिफाजत करने के लिए मेरी मदद चाही है।

तातारखाँ — तो क्या जहाँपनाह ने उनकी इल्तिजा मंजूर कर ली है?

हुमायूँ — यह इल्तिजा नहीं, हुक्म है। राखी आ जाने के बाद भी क्या सोच-विचार किया जा सकता है? यह तो आग में कूद पड़ने का न्यौता है। हिंदुस्तान की तवारीख कह रही है कि राखी के धागों ने हजारों कुरबानियाँ कराई हैं। मैं दुनिया को बता देना चाहता हूँ कि हिंदुओं के रस्मोरिवाज हम मुगलों के लिए भी उतने ही प्यारे हैं, उतने ही पाक हैं।

तातारखाँ — एक मुसलमान के ऊपर एक हिंदू को तरजीह........

हुमायूँ — कौन हिंदू है और कौन मुसलमान, यह मैं खूब समझता हूँ। तातारखाँ, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, खुदा की हिदायत के मुताबिक कह रहा हूँ।

तातारखाँ — एक काफिर कौम को मुसलमानों के खिलाफ मदद दे रहे हैं, क्या यही खुदा की हिदायत है?

हुमायूँ — तुम भूलते हो। तुम सब एक परबरदिगार की औलाद हो। हिंदुओं के अवतारों ने और तुम्हारे पैगंबर ने एक रास्ता दिखाया है। कुरान शरीफ में साफ लिखा है, ''हमने हर गिरोह के लिए इबादत का खास रास्ता मुकर्रर कर दिया है। जिस पर वह अमल करता है, इसलिए उस पर झगड़ा न करो।'' तुम्हें साफ बताया गया है कि ''नेकी यह नहीं है कि तुमने इबादत के वक्त मुँह मशरिफ की तरफ किया या मगरिब की तरफ, या इसी तरह की कोई जाहिरा रस्म-रिवाज अदा कर ली। नेकी की राह तो उसकी राह है, जो खुदा पर, सारी खुदादाद किताबों पर और सारे पैगंबरों पर इनाम लाता है; अपना प्यारा धन रिश्तेदारों, अपाहिजों, गरीबों, जियारत करने वालों, माँगने वालों की राह में और गुलामों को आजाद कराने में खर्च करता है, जो बात का पक्का है, जो डर और घबराहट, तंगी और मुसीबत के वक्त धीरज रखता है। ऐसे ही लोग हैं जो बुराईयों से बचने वाले इंसान हैं।'' यही बात हिंदुओ की मजहबी किताबें कहती हैं। फिर मजहब दोनों की दोस्ती के बीच में दीवार कैसे बन सकता है? इंसान-इंसान में दीवार बने तो वह मजहब नहीं कहला सकता।

तातारखाँ — वे हमारे पैगंबर को नहीं मानते।

हुमायूँ — और तुम उनके पैगंबर को मानते हो? तुम्हारे कुरान शरीफ में तो तुम्हें हुक्म दिया गया है कि तुम दूसरों के पैगंबरों पर भी ईमान लाओ, उनका यकीन करो। सच्चाई जहाँ भी रोशन हुई है, जिस किसी के मुँह से रोशन हुई है, सच्चाई है। खुदा की साफ हिदायत होते हुए भी तुम हिंदुओं के धर्म और अवतारों की इज्जत न करते हुए उनसे लड़ते हो। राजपूत इस वक्त सच्चाई पर हैं और बहादुरशाह गुमराह। सच्चे मुसलमान का काम सच्चाई का साथ देना है, फिर चाहे उसे मुसलमान के ही खिलाफ क्यों न लड़ना पड़े। बस, आज ही मेवाड़ के तरफ कूच करना होगा।

हिंदूबेग — मुझे हिंदू-मुसलमान का ख्याल नहीं। पर मैं समझता हूँ कि शेरखाँ को खुला छोड़कर मेवाड़ की तरफ लौट जाना खतरे से खाली नहीं।

हुमायूँ — अब सोचने का वक्त नहीं है। बहन का रिश्ता दुनिया के सारे सुखों, दौलतों, ताकतों और सल्तनतों से बढ़कर है। मैं इस रिश्ते की इज्जत रखूँगा। सल्तनत जाए, पर मैं दुनिया को यह कहते हुए नहीं सुनना चाहता कि मुगल अपनी बहन की इज्जत करना नहीं जानते। तख्त से उतारकर अगर किसी सच्ची बहन के दिल में जगह पा सकूँ, तो अपने आपको दुनिया का सबसे बड़ा खुशकिस्मत इंसान समझूँगा। बहन कर्मवती! तुम्हारी राखी मुझे वही ताकत दे, जो वह राजपूतों को देती आई है। तातारखाँ, हिंदूबेग! जल्द फौज तैयार करो।

(राखी हाथ में बाँधते-बाँधते जाता है। सबका प्रस्थान)

(पट — परिवर्तन)

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

प्रतिदान = दान के बदले दान, अजस्र = निरंतर, प्रतीक = चिह्न, वैमनस्य = शत्रुता, प्रलेप = मरहम, भ्रातृत्व = भाईचारा, जर्रा-जर्रा = कण-कण, बहिश्त = स्वर्ग, तअस्सुब = पक्षपात, इल्तिजा = विनती, तवारीख = इतिहास, हिदायत = निर्देश, काफिर = नास्तिक, परवरदिगार = ईश्वर, मुकर्रर = निश्चित, अमल = आचरण, मशरिक = पूर्व दिशा, मगरिब = पश्चिम दिशा, जियारत = हज, मजहबी = धार्मिक, कुच करना = प्रस्थान करना।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) हुमायुँ कौन थे तथा इनके पिता का नाम क्या था?

(ख) श्रावणी किसे कहते हैं और इस दिन क्या होता है?

(ग) चित्तौड़गढ़ के महाराणा साँगा की कितनी पत्नियाँ थी, नाम बताइए।

(घ) राखी बाँधने से क्या आश्य है?

(ङ) क्या अंत में हुमायूँ कर्मवती द्वारा भेंजी गयी राखी बाँध लेता है?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कर्मवती कौन थी? मेवाड़ पर बहादुरशाह के आक्रमण के समय उसने अपने सरदारों से क्या चर्चा की?

(ख) कर्मवती ने मेवाड़ राज्य की रक्षा हेतु क्या उपाय सोचा?

(ग) मुगल बादशाह हुमायूँ ने कर्मवती की राखी का सम्मान क्यों किया?

(घ) हिंदूबेग और तातारखाँ रानी कर्मवती की मदद के लिए क्यों सहमत नहीं थे?

(ङ) 'राखी की मर्यादा' एकांकी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

2. सही उत्तर चुनकर (✓) का निशान लगाइए–

(क) महाराणा साँगा ने तराइन के क्षेत्र लड़ाई में साथ दिया—

☐ पृथ्वीराज चौहान का ☐ मौहम्मद गौरी का ☐ हुमायूँ का

(ख) कर्मवती ने मेवाड़ राज्य की रक्षा हेतु सोचा—

☐ उद्देश्य ☐ प्रकरण ☐ उपाय

(ग) क्या पाने के बाद कोई पैर-विरोध याद नहीं रख सकता?

☐ मित्र ☐ राखी ☐ प्रेम

(घ) हुमायूँ ने कहा— मैं राखी के इस रिश्ते की रखूँगा—

☐ देखभाल ☐ ध्यान ☐ इज्जत

(ङ) हुमायूँ कर्मवती से कहता है कि तुम्हारी राखी मुझे वही ______________ दे, जो वह राजपूतों को देती आई है।

☐ साहस ☐ ताकत ☐ बल

3. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) हम लोग सदियों से हँसते-हँसते प्राण देते आए है हमारी इस ______________ का स्रोत और कहाँ है? ______________ की राखियों के धागे ही तो हमें बल देते आए हैं।

(ख) ______________ वीरता से लड़ रहे है, किंतु एक तो हमारी संख्या बहुत कम है दूसरे, शत्रु का ______________ तोपखाना आग उगल रहा है। उसका मुकाबला ______________ से तो हो नहीं सकता।

(ग) ______________ और ______________ पर विश्वास करके हुमायूँ की परीक्षा ली जाए। लो यह राखी और यह पत्र, आज ही दूत के हाथ ______________ के पास भेजिए।

(घ) मेवाड़ ______________ में ही कुछ जादू है। ______________ और सीकरी की लड़ाई में मैं भी अब्बाजान के साथ था।

(ङ) हिंदुस्तान की ______________ कह रही है कि राखी के धागों ने हजारों ______________ कराई है।

4. किसने, किससे कहा–

(क) मुझे हिंदू मुसलमान का ख्याल नहीं। पर मैं समझता हूँ कि शेरखाँ को खुला छोड़कर मेवाड़ की तरफ लौट जाना खतरे से खाली नहीं। ______________ ______________

(ख) मेवाड़ में ऐसी रंगीन श्रावणी कभी न आई होगी। भाइयो! क्षत्राणियों की राखियाँ सस्ती नहीं होतीं। हमारे तारों का प्रतिदान सर्वस्व बलिदान है। जिन्हें प्राण चढ़ाने का शौक हो, वे ही ये राखियाँ स्वीकार करें। ______________ ______________

(ग) अब पश्चाताप करने से क्या होता है। देवि! अब तो हमें मार्ग बताइए। ऐसे प्रसंगो पर विवेक अनुशासन के चरणों में झुक जाता है। ______________ ______________

(घ) मुगल भारत के शत्रु हैं। ______________ ______________

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

शब्द निर्माण – ''शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई होता है। वाक्यों में प्रयुक्त होने से पहले शब्दों को पद बनाया जाता है। इस प्रकार ऐसे रूपों को जिनका प्रयोग वाक्य में किया जाता है, 'शब्द रूप' या 'पद' कहते हैं।'' इस कथन पर विचार किया जाए तो निम्नलिखित तथ्य उभरकर आते हैं–

- **शब्द की सत्ता वाक्य से बाहर है।**
- **जब भी वाक्य में प्रयुक्त होगा, उसमें पद या शब्द रूप बनाने वाला कोई-न-कोई प्रत्यय अवश्य लगेगा।**

- प्रकार्य तथा वाक्य में प्रयुक्त होने की दृष्टि में एक ही शब्द हमें अनेक रूपों में प्राप्त हो सकते हैं।
- 'पद' या 'शब्द रूप' का संबंध एक ओर शब्द से है तो दूसरी ओर वाक्य से, क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त शब्द ही 'पद' है।

अत: शब्द निर्माण की प्रक्रिया तीन प्रकार से होती है–

(क) उपसर्गो द्वारा (ख) प्रत्ययों द्वारा (ग) समास प्रक्रिया द्वारा

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- निम्नलिखित शब्दों के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) त्योहार ________ ________ ________ ________

(ख) आभूषण ________ ________ ________ ________

(ग) उन्नति ________ ________ ________ ________

(घ) शोभा ________ ________ ________ ________

(ङ) मृत्यु ________ ________ ________ ________

- निम्नलिखित उपसर्ग लगाकर चार-चार शब्द लिखिए–

(क) अधि ________ ________ ________ ________

(ख) उप ________ ________ ________ ________

(ग) प्र ________ ________ ________ ________

(घ) निस/निर् ________ ________ ________ ________

(ङ) प्राग् ________ ________ ________ ________

- निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) प्रत्यक्ष ________ (ख) हँसते-हँसते ________

(ग) मरते-मरते ________ (घ) शत्रु ________

(ङ) मरना ________ (च) बहादुर ________

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- अपने पुस्तकालय से हरिकृष्ण प्रेमी के निम्नलिखित नाटक 'प्रतिरोध', 'अमर आन', बंधु मिलन' और 'प्रकाश स्तंभ' आदि के बारे में जानकारी ग्रहण कीजिए।

शिक्षण-संकेत

- कक्षा में बच्चों को कुछ ऐसी ही पौराणिक कथाओं के बारे में सजीव वर्णन कीजिए।

जेबखर्च 13

(विदेशी लोककथा)

दो साल पहले ही नन्हे मेई की माँ ने एक कारखाने में काम पर जाना आरंभ किया था। माँ उसे बहुत प्यार करती थीं। प्रतिदिन सवेरे माँ जब काम पर जाने के लिए निकलतीं तो उसे जेबखर्च के लिए पाँच पैसे देती थीं।

पहली बार जब उसने माँ से पैसे लिए तो वह मन ही मन सोचने लगा-''मैं इन पैसों से मिठाई और गुब्बारे खरीदूँगा।'' फिर सोचा- ''अरे, इन्हें बेकार खर्च नहीं करूँगा। माँ कितनी कठिनाई और मेहनत से पैसे कमाती हैं। अगर मैं इन्हें बचाकर रख लूँ तो बाद में काम आएगा। पर इसे किस स्थान पर छिपाना ठीक होगा?''

नन्हा मेई पैसे छिपाने की जगह के बारे में सोच ही रहा था कि अचानक पैसे उसके हाथ से गिरकर फ़र्श के एक छेद में जा गिरे। उसने सोचा 'ये तो गड़बड़ हो गई।' फिर उसने अपनी नन्ही उँगली छेद में डालकर पैसे निकालने का बहुत प्रयास किया, पर पैसे नहीं निकले क्योंकि छेद बहुत छोटा था। उसके नीचे से पैसे बाहर नहीं निकल सकते थे। फिर मेई ने आश्चर्य से अपनी भौंहे फैलाकर कहा-''अरे! ये तो पैसे जमा करने के लिए वास्तव में बहुत ही अच्छी जगह है। कोई देख भी नहीं सकता और ले जा भी नहीं सकता। ये तो सचमुच ही एक सुरक्षित स्थान है।''

बस, फिर क्या था! उस दिन से नन्हा मेई रोज माँ से जेबखर्च के पैसे लेकर फ़र्श के नीचे डाल देता था। इस प्रकार पलक झपकते ही दो वर्ष बीत गए। एक दिन मशीन में काम करते समय माँ के हाथ में चोट लग गई। चोट बहुत गहरी थी। मेई की माँ काम पर नहीं जा पाईं और उन्होंने एक महीना घर पर आराम किया। अब नन्हे मेई को जेबखर्च भी मिलना बंद हो गया था। कुछ दिन बाद माँ फिर से काम पर जाने लगीं।

एक दिन नन्हा मेई अकेला फ़र्श के ऊपर बैठकर, दो साल पहले की घटनाओं के बारे में सोच रहा था। सोचते-सोचते स्वयं ही मुस्कुराने लगा, कुछ दिनों में मैं फ़र्श के नीचे से सारे पैसे निकाल लूँगा ओर माँ के लिए कपड़े खरीदूँगा। नए-नए कपड़े देखकर माँ कितनी खुश होगी!

नन्हा मेई अभी यह सोच ही रहा था कि माँ काम से वापस लौट आई। वह भागता हुआ गया और उसने माँ को पुकारा। पर माँ ने कुछ नहीं कहा, ऐसा लगता था शायद माँ आज बहुत चिंतित और दुखी थी और बोलना भी नहीं चाहती थी। नन्हें मेंई ने सोचा कि माँ शायद फिर से बीमार पड़ गई है।

कुछ ही देर में बाहर से किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। जैसे ही दरवाजा खुला तो एक आदमी ने घर में प्रवेश किया और ऊँचे स्वर में माँ से बोला-''तुमने मुझसे पच्चीस रूपए उधार लिए थे। क्या लौटाने नहीं हैं?''

''श्रीमानजी, मुझे क्षमा कर दीजिए मैं पिछले महीने काम पर नहीं जा पाई परंतु अब मैंने काम पर जाना शुरू कर दिया है। अब मैं आपके रूपए शीघ्र ही लौटा दूँगी। क्या आप कुछ दिन और प्रतीक्षा नहीं कर सकते?'' नन्हे मेई की माँ ने कहा।

उस आदमी ने जैसे ही यह सुना तो गुस्से से मेज़ पर हाथ मारने लगा और बोला-पिछले महीने भी तुमने यही कहा था। मैंने पहले ही इतने दिन इंतज़ार कर लिया है। पर तुमने अभी तक रूपए नहीं लौटाए। और यदि तुम आज मेरे रूपए नहीं लौटाओगी तो मैं तुम्हें जेल में डलवा दूँगा।''

नन्हा मेई उस आदमी को देखकर डर गया था। जब उसे यह मालूम हुआ कि एक बार जब माँ का हाथ मशीन में आ गया था, तब इसने ही माँ को रूपए उधार दिए थे। तभी नन्हा मेई धीरे-से माँ के पीछे आकर खड़ा हो गया और बोला-''माँ, मेरे पास पैसे हैं।''

माँ आश्चर्य से नन्हे मेई की ओर देखकर बोली-''तेरे पास पैसे कहाँ से आए?''

नन्हे मेई ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उसने जल्दी से जाकर एक छैनी ढूँढ़ी और छैनी से फ़र्श को दो-तीन बार ठोका। फिर लकड़ी के फ़र्श को खोला और नीचे हाथ डालकर हाथ भरकर पैसे निकाले और बोला-''माँ, देखों मेरे पास बहुत सारे पैसे हैं।'' माँ ने देखा कि वह सचमुच पैसे ही थे पर उनमें जंग लग चुका था। माँ ने जल्दी से नन्हे मेई की सहायता से सारे पैसे मेज़ पर फैला दिए और जल्दी-जल्दी गिनने लगी। माँ ने इस पैसों से साहूकार का कर्ज चुका दिया। तब नन्हे मेई ने माँ से कहा-''माँ, ये सारे तुम्हारे दिए हुए जेबखर्च के पैसे हैं। इन्हें मै दो साल से जमा कर रहा था। तभी तो आज इतने ज़्यादा हो गए हैं।''

माँ ने नन्हे मेई को गले से लगा लिया ओर बोलीं-''मेरे अच्छे बच्चे, आज तुमने मुश्किल में मेरी सहायता की है।'' ऐसा कहते हुए उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

—चीनी कथा से अनूदित

—अनु. ललिता पांडे

अनुवादक परिचय

ललिता पांडे का जन्म दिल्ली में हुआ। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से भाषा विज्ञान में (एम.ए.) किया है तथा द मदर्स इंटरनेशनल स्कूल तथा निवेदिता विद्यामंदिर में अध्यापन का कार्य किया है। हिंदी के अतिरिक्त इन्हें अंग्रेज़ी, चीनी तथा पंजाबी भाषा का ज्ञान है। इन्होंने अनेक कहानियों तथा लेखों का अंग्रेज़ी तथा चीनी भाषा से हिंदी में अनुवाद किया है। हिंदी भाषा को खेलों के माध्यम से पढ़ाने से इनकी विशेष रूचि रही है। इन्हें फोर्ड फाउंडेशन स्कॉलरशिप तथा मणि पिल्लै अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

प्रयास = प्रयत्न, कोशिश, छैनी = काटने का औज़ार, सुरक्षित = अच्छी तरह रखा हुआ, साहूकार = बड़ा व्यापारी घटना = कार्य रूप में आने वाली बात, कर्ज़ = उधार, प्रतीक्षा = इंतज़ार।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) नन्हा मेई माँ के दिए पैसों का क्या करता था?

(ख) नन्हे मेई की माँ को चोट कैसे लग गई थी?

(ग) साहूकार को देखकर नन्हा मेई क्यों डर गया था?

लिखित (Written)

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) नन्हे मेई के हाथ से पैसे अचानक कहाँ गिर गए?

____

(ख) नन्हे मेई को जेबखर्च मिलना क्यों बंद हो गया?

____

(ग) नन्हे मेई ने फर्श से किन औजारों के सहारे पैसे निकाले?

____

(घ) नन्हा मेई कितने वर्षों से पैसे जमा कर रहा था?

____

(ङ) साहूकार नन्हे मेई की माँ पर क्यों चिल्ला रहा था?

____

(च) नन्हे मेई की छोटी सी बचत उपयोगी कैसे सिद्ध हुई?

(छ) 'कई बार अनजाने में की गई बचत बहुत काम आती है।'-पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) नन्हे मेई ने पैसे कहाँ छुपाए?

☐ गुल्लक में ☐ अलमारी में ☐ फ़र्श के छेद में

(ख) अपने बचाए पैसों से मेई क्या करना चाहता था?

☐ माँ के लिए नए कपड़े खरीदना चाहता था।

☐ अपने लिए कपड़े खरीदना चाहता था।

☐ अपने लिए खिलौने तथा मिठाई खरीदना चाहता था।

(ग) माँ एक महीने तक काम पर क्यों नहीं गई?

☐ माँ बीमार थीं। ☐ माँ के हाथ में चोट लग गई थी।

☐ माँ को नौकरी से निकाल दिया गया था।

(घ) साहूकार ने माँ को क्या धमकी दी?

☐ जेल में डलवा दूँगा। ☐ उसके स्थान पर मेई को काम करना पड़ेगा।

☐ तुम्हारा घर गिरवी पर रख दूँगा

(ङ) माँ की आँखों से खुशी के आँसू क्यों बहने लगे?

☐ उसका उधार चुक गया। ☐ उसे मेई के पैसे खर्च हो जाने का दुख था।

☐ उसे अपने पति की याद आ गई।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों में से गलत पर्याय पर (✗) का निशान लगाइए–

घर –	◯ निवेश	◯ निकेत	◯ गृह
रात –	◯ रजनी	◯ दिशा	◯ निशा
आँसू –	◯ अश्रु	◯ नेत्रजल	◯ अश्क
कपड़े –	◯ साड़ी	◯ वस्त्र	◯ वसन
सवेरे –	◯ भोर	◯ सुबह	◯ उजाला
दरवाज़ा –	◯ कपाल	◯ कपाट	◯ द्वार

2. दिए गए शब्दों के सही विलोम पर (✓) का निशान लगाइए–

अनेक –	◯ प्रत्येक	◯ एक	अंत –	◯ आरंभ	◯ शुभारंभ
नकद –	◯ उदार	◯ उधार	असुरक्षित –	◯ रक्षित	◯ सुरक्षित
प्रश्न –	◯ हल	◯ उत्तर	सरलता –	◯ कठोरता	◯ कठिनता

3. दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए–

माँ	____________	सम्राट	____________
श्रीमान	____________	कवि	____________
आदमी	____________	साधु	____________
विद्वान	____________	युवक	____________

4. इनमें से कौन-सा शब्द शब्द-परिवार का नहीं है–

जेब	–	○ जेबखर्च	○ जेबघड़ी	○ जेब्रा	○ जेबकतरा
खर्च	–	○ खर्चा	○ खर्चीला	○ खुरचन	○ खर्ची
दिन	–	○ दिनचर्या	○ दीनता	○ दैनिक	○ दिनोंदिन
क्षमा	–	○ क्षमता	○ क्षम्य	○ क्षमादान	○ क्षमापर्वक
चिंता	–	○ चिंतित	○ चिंतापूर्वक	○ चिंतक	○ चिंतेरा

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **कुछ विदेशी, पौराणिक तथा लोककथाएँ पढ़िए। उनमें क्या अंतर होता है तथा क्या समानताएँ होती हैं? लिखिए (चित्रों की सहायता भी ले सकते हैं।)**
- **आप जिस राज्य में रहते हैं वहाँ की कुछ प्रसिद्ध लोककथाएँ पढ़िए।**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **दिए गए शब्दों से कुछ शब्द बनाइए–**

खर्च	ख	ला	चमक	च	र
बुद्धि	बु	न	बच्चा	ब	न
भारत	भा	य	समझ	स	री

- **अतिरिक्त ज्ञान**

'र' और 'ऋ' में अंतर है। 'र' व्यंजन है और 'ऋ' स्वर।

उदाहरण–राजा, राम रास्ता, सहारा (र)

कृपा, नृप, गृह (ऋ)

- **'र' के विभिन्न प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द लिखिए–**

(्र)	प्र	____________	(र्)	कार्य	____________
(्र)	ट्रक	____________	(र)	रात	____________

शिक्षण-संकेत

- सभी विधार्थियों को पाठ से प्राप्त शिक्षा व जेबखर्च के विषय के बारे में बताइए।
- सभी विधार्थियों को कक्षा में एकत्रित करके उन्हें बहुत ही आवश्यकता की चीजों पर पैसे खर्च करने की प्रेरणा दें।
- शिक्षक इस कहानी को अन्य विधाओं के रूप में बच्चों का प्रेरणासहित सुनाएं।

14 मैं कवि कैसे बना
(हास्य व्यंग्य)

सच मानिए, मेरी कविता किसी पक्षी के करूण क्रंदन से प्रारंभ नहीं हुई। न मेरी कोई भाभी थी कि जिसने खाने में नमक माँगने पर ताने दिए हों और भड़भड़ाकर मेरी कविता का स्रोत खड़खड़ाकर फूट पड़ा हो। सुकुमारी तो क्या, कभी किसी अधेड़ भगवती के भी नयन-बाणों से घायल होने का सौभाग्य मुझे जागते हुए तो क्या, स्वप्न में भी सुलभ नहीं हुआ। यों तो मैंने मनुष्य से लेकर गधों तक पर कविता लिखी है, पर विश्वास कीजिए, इनमें से कोई भी मेरी कविता का वाहन नहीं है। यों अपनी कविताओं में मैंने अपनी पत्नी को काफी यश-अपयश प्रदान किया है, पर दरअसल, ईमान से, मेरी कविता के मूल में उस बेचारी का जरा भी हाथ नहीं है। सही बात यह है कि सरस्वती के दरबार में भी मेरा प्रवेश राजपथ से नहीं हुआ। वहाँ तो मैं चोर दरवाजे से दाखिल हुआ हूँ।

कोई सन् 1924 के आस-पास की बात है। मैं मथुरा के अग्रवाल विद्यालय में शायद तीसरे दरजे में पढ़ा करता था। वह भारत का जागरण काल था। समाज सुधार और राष्ट्रीयता दोंनो ही अपने पूर्ण यौवन में थे। शिक्षण संस्थाओं में भी इनकी गहरी छाप थी। हमारे विद्यालय में भी लगभग प्रति सप्ताह कोई न कोई उत्सव आयोजन होता ही रहता था। मुझे भी इन अवसरों पर उजले-उजले कपड़े पहनकर आगे बैठने में बड़ा आनंद आता था।

संगीत तो मेरे परिवार की नस-नस में था, इसलिए संगीत का ज्ञान मुझे विरासत में मिला था। लेकिन मेरा यह संगीत ज्ञान मुझे विद्यालय के सभा-समारोह में कोई सुविधा प्रदान नहीं कर सका। मुझे किसी समारोह में संगीत सुनाने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया। यह मेरे साथ सरासर अन्याय था। और जहाँ तक याद पड़ता है, जान-बूझकर तो मैंने अन्याय को बचपन से ही सहन नहीं किया है।

तभी मैंने देखा कि लोगों के मन में संगीत से अधिक कविता की कद्र है। मैंने देखा कि मेरे साथी लड़को को संगीत सुनाने के लिए तो नहीं, पर कविताएँ सुनाने को बड़े चाव से आमंत्रित किया जाता है। फिर यह भी देखा कि अच्छे-बुरे की, आदर-अनादर की सूचना तालियों द्वारा ही प्रकट होती है। मैं देखता कि साथी लड़कों का संगीत सुनने के बाद तालियों की तड़तड़हाट बड़ी क्षीण होती है और उसमें भी लड़के नहीं, अध्यापक ही थोड़ा रस लेते हैं। मगर कविता के बाद जिस तरह तालियों के

बादल गरजते थे, उन्हें देखकर मेरे मन में भी कविताएँ सुनाने की लालसा उत्पन्न होने लगी।

मथुरा में तब ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि श्री नवनीत चतुर्वेदी जीवित थे। उनकी वहाँ अच्छी शिष्य मंडली थी। इन शिष्यों को बब्रभाषा के हजारों चुने गए कवित्त-सवैये कंठस्थ होते थे। बसंत के फूल-डोलों, सावन के हिंडोलों और श्रीकृष्णजन्माष्टमी के अवसर पर जगह-जगह इनके पढ़ंत-दंगल जुटा करते थें, जिनमें दूर-दूर के कवित्त सवैये पढ़ने वाले मथुरा आया करते थे और हार-जीत की बाजी लगा करती थी। इनमें से एक रामलला जी हमारे पड़ोसी थे। इन्हें अकेले पावस पर ही कोई पाँच सौ छंद याद थे। यों वे उम्र में मुझसे थोड़े ही बड़े थे, लेकिन कवि होने के कारण इनकी गिनती समझदारों में हो चली थी। मैंने रामलला जी से मेल-जोल बढ़ाना प्रारंभ किया। मैं भी अब ब्रजभाषा के कवित्त-सवैये याद करने लगा और उन्हें विद्यालय में अपना बना-बनाकर सुनाने लगा।

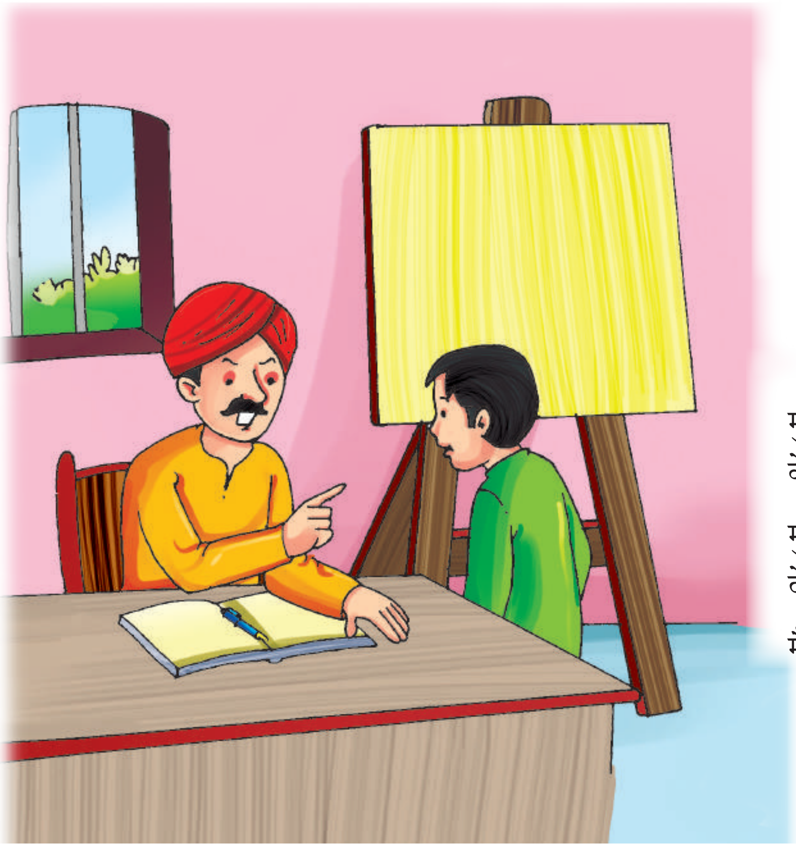

हमारे नगर में प्रतिवर्ष नुमाइश लगा करती थी और उसमें हर बार एक कवि सम्मेलन हुआ करता था। इस कवि सम्मेलन में एक घंटा पूर्व समस्या दी जाती थी और सर्वोत्तम तीन समस्या पूर्तियों को स्वयं गोरे कलक्टर साहब इनाम दिया करते थे। इसके लिए शिक्षण संस्थाएँ अपने यहाँ से चुने हुए कविगण भेजा करती थीं। इस बार हमारे विद्यालय से मेरा नाम भी प्रतियोगिता के लिए प्रेषित कर दिया गया। मैंने सुना तो मुझे काठ मार गया। घबराया हुआ अपने क्लास टीचर के पास गया।

मुझ जैसे शरारती को चुपचाप, खिसियाया-सा बड़ा देखकर बोले, ''कहो, क्या बात है?''

मैं धरती की ओर देखता रहा।

उन्होंने समझा कि किसी से पिटकर या किसी को पीटकर आया है। जरा रूखाई से बोले, ''बताओ न, क्या बात है?''

मेरे मुँह से फिर कोई बोल न निकला, लेकिन मेरी आँखों की आर्द्रता और मुँह की बेबसी ने उसकी रूखाई को ठंडा कर दिया। उन्होंने अनुभव किया कि कोई गंभीर बात है। मेरी पीठ पर हाथ रखकर पुचकारते हुए बोले, "बोले बेटे, क्या बात है?"

मैंने लगभग हकलाते हुए कहा, "आपने नुमाइश में मेरा नाम भिजवाया है?"

उन्हें हँसी आ गई, कहने लगे, हाँ, तो क्या हुआ? शाम को ठीक समय पर पंडाल में पहुँच जाना। मैं भी वहीं मिलूँगा।"

शब्द आते-आते मेरे गले में अटक गए। वे कहने लगे, "झिझक तो शुरू-शुरू में होती ही है, पर नालायक, तूने झिझकना कब से सीख लिया?"

अंत में साहस करके मैंने कह दिया कि मैं जो कविताएँ यहाँ सुनाया करता हूँ, वे सब पराई होती हैं। कोई और अवसर होता, तो मास्टर जी ने मलते-मलते कान सुर्ख कर दिए होते। लेकिन भगवान की कृपा से इस बार उन्होंने वैसा कुछ नहीं किया। मुस्कुराकर बोले, "हत् तेरे की। पर अब क्या हो? हमने तो विद्यालय से अकेला तुम्हारा ही नाम भेजा है। तुम्हारे न जाने से बड़ी बदनामी होगी।"

मैं इसका क्या जवाब देता?

वे कुछ देर चुपचाप सोचते रहे। फिर एकाएक मेरा भविष्य जैसे उनकी आँखों में घूम गया हो, ऐसे उत्साह में भरकर बोले- "कविता करना बड़ा आसान है। तुम घबराओ नहीं। देखो, वहाँ मामूली-सी समस्याएँ दी जाएँगी। यही 'आई हैं', 'सुहायौ हैं', आदि। तुम ऐसा करना कि जो भी समस्या तुम्हें दी जाए, पहले उसकी चार तुकें जमा लेना। उदाहरण के लिए, 'अगर आई हैं' समस्या दी जाए, तो पहले छाई है, लाई है, भाई है, एक ओर लिख लेना। समझ गए न?"

मैंने छंद रचना के पहले पाठ को हृदयंगम करते हुए स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया।

"तो बताओ, 'सुहायो है' की क्या तुकें बनाओगे?"

सारी हिचक हवा हो गई और मैंने तड़ाक से कहा, "आयो हैं, गायो है, भायो है।"

"शाबाश, बस एक काम और करना।"

वे कहने लगे, "एक कविता में चार पंक्तियाँ होती हैं और हर पंक्ति में इक्कतीस अक्षर होते हैं। अंत के अक्षरों में वही तुकें रख देना, कविता बन जाएगी।"

यों गणित में मैं कभी अच्छा नहीं रहा। हमेशा तिमाही-छमाही में इसने मुझे अंडा और सालाना में बड़े प्रयत्नों के बाद प्रमोशन दिलाया है। मगर होनहार की बात है कि उस दिन कविता का यह जटिल गणित मेरी समझ में तत्काल आ गया।

मुझे आज की-सी याद है कि उस दिन जब मैं नुमाइश में कविता की परीक्षा देने के लिए पहले-पहल पहुँचा, तो मेरे मन में कोई दुविधा या संकोच नहीं था। यद्यपि कविजनों में सबसे छोटा था, मगर सच कहता हूँ कि मैंने उस दिन सबको अपने से

छोटा अनुभव किया था क्योंकि मैंने समझ लिया था कि कविता का जो गुर मैंने अभी आज दोपहर को प्राप्त है, वह इनमें से किसी के पास नहीं है।

समस्या दी गई ''कर्ज को करिबौ और मरिबौ बराबर है''। मैंने फौरन 'बराबर' शब्द को पकड़ा और कागज की दाहिनी तरफ एक के नीचे एक लिखना शुरू किया - 'सरासर है' 'झराझर है'। लेकिन जैसे बंदूक और संदूक के बाद तीसरी तुक नहीं मिलती, वैसे ही मुझे बराबर की तीसरी तुक नहीं मिली, पर मैं रूका नहीं। मैंने ''तेली रे तेली, तेरे सिर पर कोल्हू'' वाली कहावत का अनुसरण, कि तुक नहीं मिली तो क्या, बोझ से तो मरेगा ही, किया। मैंने 'बराबर है' की तीसरी तुक 'ऊपर है' लिखकर फौरन समस्या हल कर डाली।

कविता तो मुझे आज याद नहीं रही, लेकिन उसका भाव यह था कि देखो मित्र, तुम्हारे पिता ने कर्ज लिया था, उसका कैसा बुरा फल निकला? वे स्वयं तबाह हुए और तुम्हें भी तबाह कर गए। इसलिए किसी ने सच ही कहा है कि 'कर्ज के करिबौ और मरिबौ बराबर है।'

समस्या पूर्ति के लिए एक घंटे का समय दिया गया था। मगर मैंने कोई बीस मिनट में ही, जैसे तेज विद्यार्थी सवाल हल करके स्लेट मास्टर साहब को पकड़ा देता है, कागज परीक्षक को थमा दिया।

उस दिन का वह दृश्य आज तक मेरी आँखों के सामने चित्र की तरह खिंचा हुआ है। कवि सम्मेलन का पंडाल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। मेरे हैड मास्टर और कविता की कुंजी बताने वाले क्लास टीचर भी बगल की कुरसियों पर बैठे हुए थे। भीड़ में मेरे विद्यालय के कितने ही विद्यार्थी और सहपाठी भी शामिल थे। मेरा नाम पुकारा गया। मैं उत्साह के साथ भीड़ को चीरता हुआ मंच पर आया। चारों ओर तालियाँ बज रहीं थीं, पर मैंने उन पर न दिया। विश्राम घाट के चौराहे वाले हनुमान जी को मैं रोज हनुमान चालीसा का पाठ सुनाया करता था। मन ही मन उनका स्मरण किया और हाथ हिला-हिलाकर कविता सुनाने लगा।

तब मेरी उम्र कोई 9-10 वर्ष की रही होगी। स्वर मेरा सधा हुआ था। शक्ल भी बचपन में बुरी नहीं लगती थी। लोगों ने जो बच्चे के मुहँ से कच्ची समस्या पूर्ति सुनी, तो गद्गद हो गए। सभी लोग प्रशंसा और आश्चर्य के भाव से मुझे देख रहे थे। कविता की समाप्ति के बाद मैं तालियों के तूफान में जो खोया, तो फिर सुध-बुध न रही। मेरी साँस फूलने लगी, पसीने आ गए। शायद और अधिक देर होती, तो मैं लड़खड़ाकर मंच पर ही बैठ जाता कि तभी हमारे विद्यालय के हैड मास्टर श्री मुकुट बिहारी लाल जी लपके हुए मंच पर आए और उन्होंने दौड़कर मुझे गोदी में उठा लिया। मुझे लगा कि मानो साक्षात् देवी सरस्वती ने मुझे अंक में भर लिया है। उनकी गोद में जाते ही मेरा सम्मान कई गुणा बढ़ गया। मेरे विद्यालय के लड़के और जोर-जोर से तालियाँ बजा-बजाकर कूदने लगे।

मैंने गोदी से उतरकर हैड मास्टर साहब और कामेश्वरनाथ जी के चरण छुए और इस प्रकार मेरी पहली कविता ने ही धूमधाम से मेरे कवि होने की घोषणा जनता में कर दी। घड़ी भर में मैं चोर से साहूकार बन गया।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

क्रंदन = रोदन, दुविधा = मन की अस्थिरता, बेबसी = लाचारगी, सरस्वती = विद्या और कला की देवी, अंक = गोद, तत्काल = तुरंत, कद्र = सम्मान, सुलभ = आसानी से प्राप्त, श्रोता = सुनने वाले, लालसा = तीव्र इच्छा, क्षीण = कमजोर, साहूकार = बड़ा व्यापारी, सुर्ख = लाल, पावस = वर्षा।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) लेखक तीसरे दरजे में कहाँ पढा करता था?

(ख) लेखक को किस चीज का ज्ञान विरासत में मिला था?

(ग) लेखक को चुपचाप, खिसियाया-सा खड़ा देखकर अध्यापक ने क्या समझा?

(घ) अध्यापक ने लेखक को तुक के बारे में क्या समझाया?

(ङ) समस्या पूर्ति के लिए कितना समय दिया गया?

(च) कविता सुनाने से पहले लेखक ने किसका स्मरण किया?

(छ) उस समय लेखक की उम्र कितनी थी?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिन दिनों लेखक पढ़ता था, उन दिनों शिक्षण संस्थाओं में किन दो बातों की गहरी छाप थी?

____

(ख) संगीत के बजाय लेखक का झुकाव कविता की ओर क्यों हुआ?

____

(ग) लेखक ने रामलला जी से मेल-जोल बढ़ाना क्यों प्रारम्भ किया?

____

(घ) जब लेखक का नाम कविता प्रतियोगिता के लिए भेज दिया गया, तो वह क्यों घबराया?

____

(ङ) कविता प्रतियोगिता में पहुँचकर लेखक के मन में संकोच क्यों नहीं रहा?

____

(च) लेखक ने कितनी देर में समस्या पूर्ति कर दी?

____

(छ) समस्या पूर्ति सुनकर लोग लेखक को आश्चर्य से क्यों देख रहे थे?

____

(ज) अपने विद्यालय के हैड मास्टर साहब की गोद मे आकर लेखक को कैसा लगा?

____

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) श्री नवनीत चतुर्वेदी

- [ ] खड़ी बोली के प्रसिद्ध लेखक थे।
- [ ] ब्रज भाषा के प्रसिद्ध लेखक थे।
- [ ] एक सुप्रसिद्ध संगीतकार थे।

(ख) अंत में साहस करके लेखक ने कह दिया कि मैं जो कविताएँ यहाँ सुनाया करता हूँ, वे सब पराई होती हैं। कोई और अवसर होता, तो मास्टर जी

- [ ] मारते-मारते कचूमर निकाल देते।
- [ ] मलते-मलते कान सुर्ख कर देते।
- [ ] हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) सरस्वती के दरबार में मेरा प्रवेश राजपथ से नहीं हुआ। वहाँ तो मैं चोर दरवाजे से दाखिल हुआ हूँ।

____

____

(ख) मेरी आँखों की आर्द्रता और मुँह की बेबसी ने उनकी रूखाई को ठंडा कर दिया।

____

____

(ग) घड़ी भर में मैं चोर से साहूकार बन गया।

____

____

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निम्नलिखित पदों में समास विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

पद	समास विग्रह	समास का नाम
नयन-बाण	____________	____________
यश-अपयश	____________	____________
समाज सुधार	____________	____________
सभा-समारोह	____________	____________
प्रतिवर्ष	____________	____________

2. 'नालायक' शब्द में 'ना' उपसर्ग है और 'लायक' मूल शब्द है। इसका अर्थ है – जो लायक न हो। 'ना' उपसर्ग से बने पाँच शब्द और उनके अर्थ लिखिए–

शब्द	अर्थ
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

तालियों के बादल गरजना ______________________

____

काठ मार जाना ______________________

____

हृदयंगम करना ______________________

____

सुध-बुध न रहना ______________________

____

गद्‌गद होना ______________________

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **अपने पुस्तकालय व इंटरनेट की सहायता से कवि गोपाल प्रसाद व उनसे सम्बन्धित कुछ अन्य कवियों के बारे में जानकारी एकत्रित करें।**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **निम्नलिखित शब्दों को सही क्रम से लिखिए–**

(क) न यो आ ज ______________ (ख) व नु भ अ ______________

(ग) रो मा स ह ______________ (घ) ष घो णा ______________

(ङ) र म या स ______________ (च) म न स मे ल ______________

- **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाक तीन-तीन शब्द बनाइए–**

(क) प्र ______________ ______________ ______________

(ख) उप ______________ ______________ ______________

(ग) निर ______________ ______________ ______________

(घ) अभि ______________ ______________ ______________

(ङ) अप ______________ ______________ ______________

(च) सह ______________ ______________ ______________

शिक्षण-संकेत

- कक्षा में बच्चों को पाठ से प्राप्त शिक्षा लगन व कठोर परिश्रम से कार्य करने की प्रेरणा दें तथा बच्चों को गोपाल प्रसाद के कवि परिचय के विषय में जानकारी दें।

झाँसी की रानी

(प्रेरक प्रसंग)

15

"मुंदरबाई," रघुनाथसिंह, ने कहा, "रानी साहब का साथ एक क्षण के लिए भी न छूटने पाए। आज अंतिम युद्ध लड़ने जा रही हैं।"

मुंदर, "आप कहाँ रहेंगे?"

रघुनाथसिंह, "जहाँ उनकी आज्ञा होगी। वैसे आप लोगों के समीप ही रहने का प्रयत्न करूँगा।"

मुंदर, "मैं चाहती हूँ कि आप बिल्कुल निकट ही रहें। मुझे लगता है, मैं आज मारी जाऊँगी। आपके निकट होने से शांति मिलेगी।"

रघुनाथसिंह, "मैं भी नहीं बचूँगा। रानी साहब को किसी प्रकार सुरक्षित रखना है, मैं तुम्हें तुरंत ही स्वर्ग में मिलूँगा। केवल आगे-पीछे की बात है। वह सूखी हँसी हँसा।"

मुंदर ने रघुनाथसिंह की ओर आँसूभरी आँखों से देखा। कुछ कहने के लिए होंठ हिले। रघुनाथसिंह की आँखें भी धुँधली हुईं।

दूर से दुश्मन के बिगुल के शब्द की झाईं कान में पड़ी। मुंदर ने रघुनाथसिंह को मस्तक नवाकर प्रणाम किया और उसके ओट में जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ डाले। रघुनाथसिंह ने मुंदर को नमस्कार किया और दोनों शर्बत लिए हुए रानी के पास पहुँचे।

मुंदर ने जूही को शर्बत पिलाया और रघुनाथसिंह ने रानी को। अंग्रेज़ों के बिगुल का शब्द साफ़ सुनाई दिया। तोप का धमाका हुआ, गोला सन्ना कर ऊपर से निकल गया। रानी दूसरा कटोरा नहीं पी सकीं।

रानी ने रामचंद्र देशमुख को आदेश दिया, "दामोदर को आज तुम पीठ पर बाँधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह सुरक्षित दक्षिण पहुँचा देना। तुमको आज मेरे प्राणों से बढ़कर अपनी रक्षा की चिंता करनी होगी। दूसरी बात यह है कि मेरे मारे जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को छू न पाएँ। बस! घोड़ा लाओ।"

मुंदर घोड़ा ले आई। उसकी आँखें छलछला रही थीं। पूर्व दिशा में अरुणिमा फैल गई। अबकी बार कई तोपों का धमाका हुआ। रानी मुसकराईं और बोलीं, "यह तात्या की तोपों का जवाब है।"

मुंदर की छलछलाती हुई आँखों को देखकर रानी ने कहा, ''यह समय आँसुओं का नहीं है, मुंदर! जा, तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो। अपने लिए आए हुए घोड़े को देखकर बोली, ''यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है। परंतु अब दूसरे को चुनने का समय ही नहीं है। इसी से काम निकालूँगी।''

जूही के सिर पर हाथ फेरकर रानी ने कहा, ''जा जूही अपने तोपखाने पर। छका तो दे इन बैरियों को आज।''

जूही ने प्रणाम किया। जाते हुए कह गई, ''इस जीवन का यथोचित अभिनय आपको न दिखला पायी। खैर!''

इतने में सूर्य का उदय हुआ।

सूर्य की किरणों ने रानी के सुंदर मुख को प्रदीप्त किया। उनके नेत्रों की ज्योति दोहरे चमत्कार से भासमान हुई। लाल वर्दी के ऊपर मोती-हीरों का कंठा दमक उठा और चमक पड़ी म्यान से निकली हुई तलवार।

रानी ने घोड़े को ऐंड़ लगाई। घोड़ा पहले ज़रा हिचका, फिर तेज़ हो गया। रानी ने सोचा कई दिन से बँधा होगा, थोड़ी देर में गरम हो जाएगा।

उत्तर और पश्चिम की दिशाओं में तात्या और राव साहब के मोर्चे थे। दक्षिण में बाँदा के नवाब का, रानी ने पूरब की ओर झपट लगाई।

गत दिवस की हार के कारण अंग्रेज़ जनरल सावधान और चिंतित हो गए थे। इन लोगों ने अपनी पैदल पलटनें पूरब और दक्षिण की बीहड़ में छिपा लीं और हुजर सवारों द्वारा कई दिशाओं में आक्रमण की योजना बनाई। उनकी पीठ पर रक्षा के लिए तोपें थीं। हुजर सवारों ने पहला हमला कड़ाबीन बंदूकों से किया। बंदूकों का जवाब बंदूकों से दिया गया। रानी ने आक्रमण पर आक्रमण करके हुजर रणकौशलों को मार डाला, जिसको देख अंग्रेज़ जनरल थर्रा गए। काफ़ी समय हो गया, परंतु अंग्रेज़ों को पेशवाई मोर्चा से निकल जाने की गुंजायश न मिली।

जूही की तोपें गजब ढा रही थीं। अंग्रेज़ नायक ने इन तोपों का मुँह बंद करना तय किया। हुजर सवार बढ़ते जाते थे, मरते जाते थे, परंतु उन्होंने इस तरफ़ की तोपों को चुप कराने का निश्चय कर लिया था। रानी ने जूही की सहायता के लिए कुमुक भेजी। उसी समय उनको खबर मिली कि पेशवा की अधिकांश ग्वालियरी सेना और सरदार 'अपने महाराज' की शरण में चले गए हैं। मुंदर ने रानी से कहा, ''सवेरे अस्तबल का प्रहरी रिस-रिस कर अपने सरकार का स्मरण कर रहा था। मुझे संदेह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ी करेंगे।''

''गाँठ में समय न होने के कारण कुछ नहीं किया जा सकता था'', रानी बोलीं, ''अब जो कुछ संभव है वह करो।''

इनकी लालकुर्ती अब तलवार खींचकर आगे बढ़ी। उस धूल धूसरित प्रकाश में भी तलवारों की चमचमाहट ने चकाचौंध पैदा कर दी। कुछ ही समय उपरांत समाचार मिला कि ग्वालियरी सेना के पक्ष में मिल जाने के कारण रावसाहब के दो मोर्चे छिन गए और अंग्रेज़ उनमें घुसने लगे हैं। रानी के पीछे पैदल पलटन थी। इसको स्थिति सँभालने की आज्ञा देकर वह एक ओर बढ़ी। उधर सवार जूही के तोपखाने पर जा टूटे। जूही तलवार से भिड़ गई, घिर गई और मारी गई। परंतु शत्रु की तलवार जिसे चीरने में असमर्थ रही, वह थी जूही की क्षीण मुसकराहट, जो उसके होठों पर अनंत दिव्यता की गोद में खेल गई।

वर्दी के कट जाने पर हुजरों ने देखा कि तोपखाने का अफसर गोरे रंग की एक सुंदर युवती थी और उसके होंठों पर मुस्कराहट थी।

समाचार मिलते ही रानी ने इस तोपखाने का प्रबंध किया।

इतने में ही ब्रिगेडियर स्मिथ ने अपने छिपे हुए पैदलों को छिपे हुए स्थान से निकाला। वे संगीनें सीधी किए रानी के पीछे वाली पैदल पलटन पर दो पार्श्वों से झपटे। पेशवा की पैदल पलटन घबरा गई। उसके पैर उखड़े तथा भाग उठी। रानी ने प्रोत्साहन, उत्तेजन दिया। परंतु उनके और उस भागती हुई पलटन के बीच में गोरों की संगीनों और हुजरों के घोड़े आ चुके थे। अंग्रेज़ों की कड़ाबीनें, संगीनें और तोपें पेशवायी सेना का संहार कर रही थीं। पेशवा की दो तोपें भी उन लोगों ने छीन लीं। अंग्रेज़ी सेना बाढ़ आई हुई नदी की तरह बढ़ने और फैलने लगी।

रानी की रक्षा के लिए लालकुर्ती सवार अटूट शौर्य और अपार विक्रम दिखलाने लगे। न कड़ाबीन की परवाह, न संगीन का भय और तलवार तो मानो उनको ईश्वरीय देन थी। उस तेजस्वी दल ने घंटों अंग्रेज़ो का प्रचंड सामना किया। रानी धीरे-धीरे पश्चिम दक्षिण की ओर अपने मोर्चे की शेष सेना से मिलने के लिए मुड़ी। यह मिलान लगभग असंभव था, क्योंकि उस भागती हुई पैदल पलटन और रानी के बीच में बहुसंख्यक हुजर सवार और संगीन बरदार पैदल थे, परंतु उन बचे-खुचे लालकुर्ती वीरों ने अपनी तलवारों की आड़ बनाई।

रानी ने घोड़े की लगाम अपने दाँतों में थामी और दोनों हाथों से तलवार चलाकर अपना मार्ग बनाना आरंभ किया। दक्षिण-पश्चिम की ओर सोनरेखा नाला था। आगे चलकर बाबा गंगादास की कुटी के पीछे दक्षिण और पश्चिम की ओर हटती हुई पेशवायी पैदल पलटन, मुंदर रानी के साथ थी। अगल-बगल रघुनाथसिंह और रामचंद्र देशमुख थे। पीछे कुँवर गुलमुहम्मद और केवल बीस-पच्चीस अवशिष्ट लाल सवार। अंग्रेज़ों ने थोड़ी देर में इन सबके चारों तरफ़ घेरा डाल दिया। सिमट-सिमट कर उस घेरे को कम करते जा रहे थे।

परंतु रानी की दुहत्थी तलवारें आगे का मार्ग साफ करती चली जा रही थीं। पीछे के वीर सवारों की संख्या घटते-घटते नगण्य हो गई थी। उसी समय तात्या ने रुहेली और अवधी सैनिकों की सहायता से अंग्रेज़ों के व्यूह पर प्रहार किया। तात्या कठिन-से-कठिन व्यूह में होकर बच निकलने की रणविद्या का पारंगत पंडित था। अंग्रेज़ थोड़े से सवारों को लालकुर्ती का पीछा करने के लिए छोड़कर तात्या की ओर मुड़ गए। सूर्यास्त होने में कुछ विलंब था।

लालकुर्ती का अंतिम सवार मारा गया। रानी के साथ केवल चार सरदार और उनकी तलवारें रह गईं। पीछे से कड़ाबीन और तलवार वाले दस-पंद्रह गोरे सवार तथा आगे कुछ संगीन वाले गोरे पैदल थे।

रानी ने पीछे की तरफ़ देखा, रघुनाथसिंह और गुलमुहम्मद तलवार से अंग्रेज़ सैनिकों की संख्या कम कर रहे थे। एक ओर रामचंद्र देशमुख, दामोदरराव की रक्षा की चिंता में बरकाव करके लड़ रहा था। दूसरी ओर रानी ने देशमुख की सहायता के लिए मुंदर को इशारा किया और वह स्वयं संगीनबरदारों को दोनों हाथों की तलवारों से खटाखट साफ़ करके आगे बढ़ने लगीं। एक संगीनबरदार की हूल रानी के सीने के नीचे पड़ी। हूल करारी थी, परंतु आँतें बच गईं।

रानी ने सोचा, स्वराज्य की नींव बनाने जा रही हूँ। रानी का खून बह निकला।

उस संगीनबरदार के खत्म होते ही बाकी भागे। रानी आगे निकल गई। उसके साथी दाएँ-बाएँ और पीछे। आठ-दस गोरे घुड़सवार उनको पछियाते हुए।

रघुनाथसिंह पास थे। रानी ने कहा, ''मेरी देह को अंग्रेज़ न छूने पावें।''

गुलमुहम्मद ने भी सुना और समझ लिया। वह और भी ज़ोर से लड़ा।

एक अंग्रेज़ सवार ने मुंदर पर पिस्तौल दागी। उसके मुँह से केवल ये शब्द निकले, ''बाई साहब, मैं मरी और मेरी देह ...... भगवान।''

अंतिम शब्द के साथ उसने एक दृष्टि रघुनाथसिंह पर डाली और वह लटक गई। रानी ने मुड़कर देखा और रघुनाथसिंह से कहा, 'सँभालो उसे। वे उसके शरीर को न छूने पाएँ।'' और वे घोड़े को मोड़कर अंग्रेज़ सवारों पर तलवारों की बौछार करने लगीं। कई कटे। मुंदर को मारने वाला मर गया।

रघुनाथसिंह फुर्ती के साथ घोड़े से उतरा। अपना साफा फाड़ा। मुंदर के शव को पीठ पर कसा और घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा।

गुलमुहम्मद बाकी सवारों से उलझा। रानी ने फिर सोनरेखा नाले की ओर घोड़े को बढ़ाया। देशमुख साथ हो गया।

चार-पाँच अंग्रेज़ सवार रह गए थे। गुलमुहम्मद उनको बहकावा देकर रानी के साथ हो लिया। रानी तेज़ी के साथ नाले पर आ गईं।

घोड़े ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया और बिल्कुल अड़ गया। रानी ने पुचकारा। कई प्रयत्न किए, परंतु सब व्यर्थ। इतने में वहाँ अंग्रेज़ सवार आ पहुँचे।

एक गोरे ने पिस्तौल निकाली और रानी पर दागी। गोली उनकी बाईं जंघा में लगी। वे गले में मोती-हीरों का दमदमाता हुआ कंठा पहने हुए थीं। उस अंग्रेज़ सवार ने रानी को कोई बड़ा सरदार समझकर विश्वास कर लिया कि अब कंठा मेरा हुआ। रानी ने बाएँ हाथ की तलवार फेंककर घोड़े की लगाम पकड़ी और दूसरे जाँघ तथा हाथ की सहायता से अपना आसन सँभाला। इतने में वह सवार और भी निकट आ गया। रानी ने दाएँ हाथ के वार से उसको समाप्त कर दिया। उस सवार के पीछे से एक और सवार निकल पड़ा।

रानी ने आगे बढ़ने के लिए फिर एक पैर की एड़ लगाई।

घोड़ा बहुत प्रयत्न करने पर भी अड़ा रहा। वह दो पैरों से खड़ा हो गया। रानी को पीछे खिसकना पड़ा। एक जाँघ काम नहीं कर रही थी। बहुत पीड़ा थी। पेट और जाँघ के घाव से खून के फव्वारे छूट रहे थे।

गुलमुहम्मद आगे बढ़े हुए अंग्रेज सवार की ओर लपका।

परंतु अंग्रेज़ सवार ने गुलमुहम्मद के पहुँचने के पहले ही रानी के सिर पर तलवार का वार किया।

वह उनकी दाईं ओर पड़ा। सिर का वह हिस्सा कट गया और आँख बाहर निकल पड़ी। इस पर उन्होंने अपने घातक पर तलवार चलाई और उसका कंधा काट दिया।

गुलमुहम्मद ने उस सवार के ऊपर अपना भरपूर हाथ कसकर छोड़ा। उसके दो टुकड़े हो गए।

बाकी दो-तीन अंग्रेज़ सवार बचे थे। उन पर गुलमुहम्मद बिजली की तरह टूटा। उसने एक को घायल कर दिया। दूसरे के घोड़े को लगभग अधमरा कर दिया। वे तीनों मैदान छोड़कर भाग गए। अब वहाँ कोई शत्रु न था। जब गुलमुहम्मद मुड़ा तो उसने देखा रामचंद्र देशमुख घोड़े से गिरती हुई रानी को साधे हुए हैं।

दिनभर के थके माँदे थे। भूखे-प्यासे, धूल और खून में सने हुए गुलमुहम्मद ने पश्चिम की ओर मुँह फेरकर कहा, ''खुदा, पाक परवरदिगार, रहम रहम!''

रघुनाथसिंह और देशमुख ने रानी को घोड़े पर से सँभालकर उतारा। आवेश में आकर उस अड़ियल घोड़े को एक लात मारी। वह अपने अस्तबल की दिशा में भाग गया।

रघुनाथसिंह ने देशमुख से कहा, ''एक क्षण का भी विलंब नहीं करना चाहिए। अपने घोड़े पर इनको होशियारी के साथ रखो और बाबा गंगादास की कुटी पर चलो। सूर्यास्त होने ही वाला है।''

देशमुख का गला रुँधा हुआ था। बालक दामोदरराव अपनी माता के लिए चुपचाप रो रहा था।

रामचंद्र ने पुचकारकर कहा, ''इनकी दवा करेंगे, अच्छी हो जाएँगी, रोओ मत।''

रामचंद्र ने रघुनाथसिंह की सहायता से रानी को सँभालकर अपने घोड़े पर रखा।

रघुनाथ ने गुलमुहम्मद से कहा, ''कुँवर साहब, इस कमज़ोरी से काम और बिगड़ेगा। याद कीजिए, अपने मालिक ने क्या कहा था। अंग्रेज़ अब भी मारते-काटते दौड़-धूप कर रहे हैं। यदि आ गए, तो रानी साहब की देह का क्या होगा!''

गुलमुहम्मद चौंक पड़ा। साफ़े के छोर से आँसू पोंछे। गला बिल्कुल सूख गया था, आगे बढ़ने का इशारा किया। वे सब द्रुतगति से बाबा गंगादास की कुटी पर पहुँच गए।

—वृंदावनलाल वर्मा

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

नवाकर = झुकाकर, भासमान = प्रकाशित, हुजर = अश्वारोही, घुड़सवार, पार्श्व = दाएँ-बाएँ का भाग, अवशिष्ट = बचा हुआ, शेष, पारंगत = निपुण, दक्ष, नगण्य = जो गणना में न आ सके, तुच्छ, क्षुद्र, बरकाव = बचाव, हूल = लंबी कटार, दोधारी छुरा, आवेश = जोश, गुस्सा, विलंब = देर, द्रुतगति = तेज़ रफ़्तार, व्यूह = विधिपूर्वक रखना, कड़ाबीन = छोटे मुँह की बंदूकें।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) मुंदर ने रघुनाथसिंह की ओर कैसी आँखों से देखा?

(ख) लाल वर्दी के ऊपर क्या दमक उठा?

(ग) रानी ने मुसकराकर क्या कहा?

(घ) रानी ने जूही के सिर पर हाथ फेरते हुए क्या कहा?

(ङ) रामचंद्र ने किसकी सहायता से रानी को सँभालकर घोड़े पर रखा?

(च) रानी ने आगे बढ़ने के लिए क्या किया?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मुंदरबाई उदास क्यों थी?

____

(ख) सूर्य की किरणों ने किसको प्रदीप्त किया?

____

(ग) उत्तर और पश्चिम की ओर किसके मोर्चे थे?

____

(घ) वर्दी के कट जाने पर हुजरों ने क्या देखा?

____

(ङ) 'झाँसी की रानी' पाठ में किस समय का वर्णन है?

____

(च) रानी ने रामचंद्र देशमुख को क्या आदेश दिया था?

____

(छ) 'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है।' रानी ने घोड़े के लिए यह वाक्य क्यों कहा?

____

2. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) अंतिम युद्ध कौन लड़ने जा रही हैं?

☐ झाँसी की रानी ☐ मुंदरबाई ☐ जूही

(ख) रघुनाथसिंह ने रानी को क्या पिलाया?

- [ ] पानी
- [ ] दूध
- [ ] शर्बत

(ग) ब्रिगेडियर का क्या नाम था?

- [ ] डायर
- [ ] स्मिथ
- [ ] वॉकर

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए वाक्यों को सरल वाक्य में बदलिए–

(क) रघुनाथसिंह फुर्ती से घोड़े से उतरा और अपना साफ़ा फाड़ा।

____

(ख) घोड़े पर इनको होशियारी के साथ रखो और बाबा गंगादास की कुटी पर ले चलो।

____

(ग) मुझे संदेह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ करेंगे।

____

(घ) रानी ने कहा कि मैं मारी जाऊँ तो दामोदर को सुरक्षित दक्षिण पहुँचा देना।

____

2. दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

(क)	सुरक्षित	________	________	(ख)	ग्वालियरी	________	________
(ग)	अरुणिमा	________	________	(घ)	मुसकराहट	________	________
(ङ)	विधर्मी	________	________	(च)	अंतिम	________	________

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- युद्ध के अंतिम समय में जब नया घोड़ा सोनरेखा नाले पर अड़ गया था, उस समय रानी के मन में कैसे विचार उत्पन्न हुए होंगे? सोचकर लिखिए।
- पाठ में किस समय का वर्णन है। इससे देश की दशा के बारे में क्या पता चलता है? कल्पना कीजिए और लिखिए।

विश्वास की डायरी के पन्ने 16
(डायरी लेखन)

दिनांक 22 जून, 2009

आज का दिन खूब गर्म था। लू के थपेड़ों से सब परेशान थे-आज था भी तो वर्ष का सबसे बड़ा दिन क्योंकि आज सूर्य की किरणें अधिकतम समय तक पृथ्वी को तप्त कर रही थीं। सारा दिन घर के अंदर बंद-बंद मेरा तो दम ही निकल गया, समय काटना दूभर हो गया। इस साल गर्मी भी अपने चरम पर है। बारिश के दूर-दूर तक कोई आसार नहीं है। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, बच्चे-बड़े सभी मुरझा गए हैं। लोगों को भय है कहीं इस साल सूखा न पड़ जाए। सूखे का परिणाम पता नहीं क्या होगा? खेती नहीं हो पाएगी, फ़सल नहीं उगेगी। न मालूम कितने परिवार दाने-दाने को मोहताज हो जाएँगे। भूखे पशु-पक्षी बेमौत मरेंगे। यही सोच-सोचकर मन परेशान हो रहा था ... शाम को टेलीविज़न में समाचार देखने बैठ गया। तभी एक समाचार देखा। सूखे से बचने के लिए देश के विभिन्न भागों में हवन का आयोजन ... मध्य प्रदेश के उज्जैन से लेकर काशी तक शिवलिंग का विशेष अभिषेक और इन सभी विशाल आयोजनों में न जाने कितनी बड़ी मात्रा में हवन सामग्री, घी, लकड़ी, अन्न, मिष्ठान, फल-फूल, वस्त्र-जल का व्यर्थ व्यय। इसी प्रकार 'अभिषेक' के नाम पर घी, दूध, दही, शहद, चंदन, अक्षत, रोली का पानी की तरह बहाया जाना। सब कुछ देखकर मन अत्यंत क्षुब्ध हो गया। एक ओर भूखमरी और दाने-दाने को तरसते लोग, जल की बूँद के लिए तड़पते पशु-पक्षी, वनस्पति और दूसरी ओर अभिषेक के नाम पर दूध, दही, घी, शहद का पानी की तरह बहाया जाना। मन अशांत हो गया। एक ओर अभाव का हाहाकार तो दूसरी ओर हवन और अभिषेक के नाम पर मिट्‌टी में मिलती हुई ढेरों सामग्री। लाखों रूपयों की धनराशी का पलभर में स्वाहा, सत्यानाश और फिर भी वैसा का वैसा वातावरण और आकाश। न आते हैं वर्षा के बादल ओर काले मेघ ... बढ़ता जाता है सिर्फ़ अंधविश्वास का वेग।

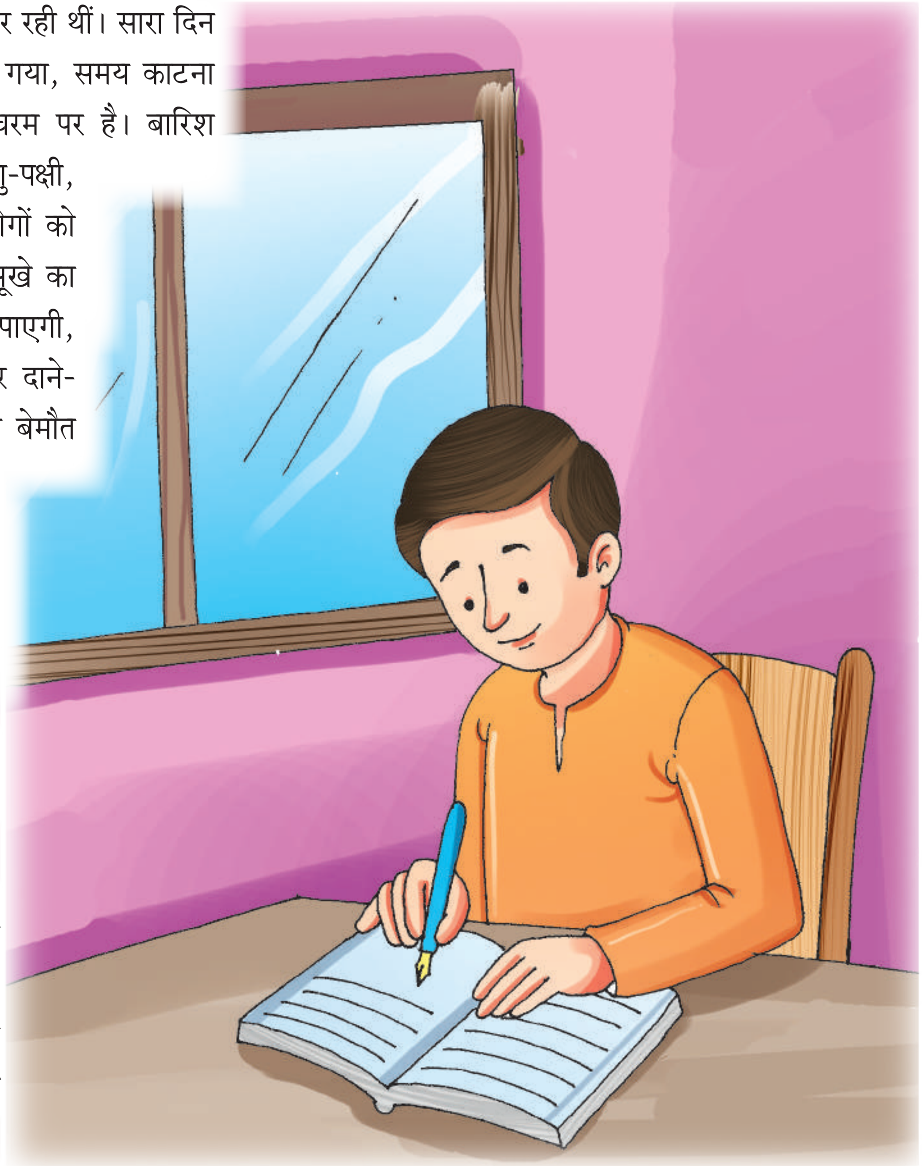

पढ़-लिखकर भी, इस वैज्ञानिक युग में हम कहाँ जा रहे हैं? क्या हमारी वैचारिक शक्ति बिल्कुल क्षीण हो गई है? क्या हमारी सोच अपाहिज हो गई है? क्या हमने अपनी तर्क और विश्लेषण करने की क्षमता को ताक में रख दिया है? अंधविश्वास नाम की घनी अँधेरी सुरंग में हम, आँखों में पट्टी बाँधे, बढ़ते चले जा रहे हैं जहाँ घोर अँधेरे के सिवाय कुछ भी नहीं है ... पता नहीं इन सवालों में उलझकर कब तक जागता रहूँगा मैं ...।

22 जुलाई, 2009

सूर्य से हमारा जीवन का रिश्ता है। हमारे जीवन का दाता है सूर्य। शक्ति, ऊर्जा, उष्मा और प्रकाश का स्रोत सूर्य ... ज्योति का पुंज, समय और दिशा ज्ञान का कारक । आज का दिन विशेष था क्योंकि आज पूर्ण सूर्य ग्रहण लगा था। यह एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण था, इस सदी के बाद अगली सदी में ही दिखाई पड़ेगा। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि जब चंद्रमा की परछाईं सूर्य पर पड़ती है और उसे पूरी तरह से आच्छादित कर देती हे तब पूर्ण सूर्य ग्रहण होता है। पर इस सूर्य ग्रहण के साथ न जाने कितनी भ्रांतियाँ और भ्रम जुड़े हुए हैं। यथा, ग्रहण को देखने से नुकसान होना, ग्रहण में भोजन न पकाना या खाना, ग्रहण में पूजा-पाठ करना, दान देना, जल में स्नान करना आदि। मैं उस मानसिकता को समझ ही नहीं पाता जो अपनी समझने-बूझने की शक्ति के विपरीत, परमपराओ से चले आ रहे गलत रीति-रिवाज़ों को मानने और अपनाने को हमें विवश कर देती है। यह मानसिकता जाने-अनजाने में हमें विवेक का दामन छोड़कर चली आ रही कुप्रथाओं को ओढ़ने पर मज़बूर करती है।

मैं आज सारा दिन घर, पड़ोस, मुहल्ले और स्कूल में सबके सामने ग्रहण से जुड़े अंधविश्वासों का खुलासा करते-करते थक गया। मेरी समकक्ष आयु के सहपाठियों व युवाओं ने जहाँ मेरी बातों के तथ्य को समझा, वहीं बड़े-बूढ़ों, बुज़ुर्गों ने मुझे डाँट-डपटकर चुप रहने पर मज़बूर कर दिया।

शाम को थका-मांदा, खिन्न मन लिए जब मैं टेलीविज़न के सामने बैठा तो एक खबर ने मानों मुझे भीतर से हिला दिया। मेरा रोम-रोम रोमांचित हो गया। कर्नाटक में एक स्थान पर ग्रहण के समय प्रातः 6 बजे से 10 बजे तक, चार घंटे तक 100 से भी अधिक विकलांग बच्चों को गरदन के नीचे तक मिट्टी में इस अंधविश्वास के कारण गाड़कर रखा गया कि ऐसा करने से उनकी विकलांगता समाप्त हो जाएगी। कुछ बच्चे रो रहे थे, कुछ चीख रहे थे, कुछ धूप में बिलबिला रहे थे, कुछ बिलख रहे थे, कुछ सिसक रहे थे, किंतु उनके माता-पिता के कानों में जूँ तक न रेंगी। इतना ही नहीं स्थानीय प्रशासन भी आँखें मूँदकर बैठा रहा। मेरा रोम-रोम विद्रोह करने लगा। क्या इस प्रकार की कुप्रथाओं का कभी अंत नहीं होगा? क्या हम अपने अँधेरों से कभी बाहर नहीं निकल पाएँगे? हम कैसे इतना बड़ा अत्याचार अपनी ही संतान के साथ कर सकते हैं? मैं सन्न रह गया हूँ। जी करता है कि सब कुछ बदल डालूँ, विद्रोह की आग लगा दूँ ... पर कैसे?

27 जुलाई, 2009

पिछले कुछ दिनों से मन का बोझ लगातार बढ़ता चला जा रहा है। मुझे बार-बार यही सवाल परेशान करता है कि मैं लोगों की कुंठित सोच को बदलने के लिए क्या करूँ? कैसे इन लोगों को झकझोर कर चेतना जगाऊँ? कल की एक और खबर ने मुझे पूरी तरह से तोड़ दिया है। कल टेलीविज़न की एक खबर को देखकर मै मानों आसमान से धरती पर आ गिरा। एक मंदिर की छत से छोटे-छोटे बच्चों को, जिनमें से कुछ मात्र चंद महीनों के थे, मंदिर की छत से नीचे फेंका जा रहा था। नीचे कुछ व्यक्ति एक चादर लिए खड़े ज़रूर थे इन पर इतनी ऊँचाई से नन्ही-नन्ही जानों को केवल इसलिए फेंका जाना कि उनके माता-पिता ने मंदिर में आकर संतान पाने की मन्नत माँगी थी। मन की मुराद पूरी होने पर अपना धन्यवाद देने की यह परंपरा जो जाने कब से चली आ रही थी, उसे वे अंधविश्वासी माता-पिता निभा रहे थे। उन्हें इस बात की चिंता भी नहीं थी कि इस दकियानूसी परंपरा को पूरा करने में उन मासूम बच्चों की जान भी जा सकती है। और उतनी ऊँचाई से नन्ही-सी जान को फेंकने पर उन्हें जो मानसिक सदमा पहुँचा होगा उसकी ओर तो किसी का ध्यान ही न था। इस प्रकार के समाचारों से मैं पूरी तरह से बिखर गया हूँ ... इसी उधेड़बुन में सो तक न पाया।

आज विद्‍यालय की बाल-सभा में, मैंने अंधविश्वास का मुद्‍दा उठाया। सूर्य ग्रहण में बच्चों को भूमि में दबाने, उसके बाद उन्हें ऊपर से नीचे फेंके जाने की घटना से में बहुत विचलित था। मेरे सहपाठी साथी भी मेरे विचारों से पूरी तरह से सहमत थे। हम सबने मिलकर यह निर्णय लिया कि हम एक 'विश्वास दल' बनाएँगे जो अंधविश्वासों ओर रूढ़ियों की सदियों से चली आ रही गलत परंपराओं के विरूद्‍ध अभियान छेड़ेगा। अंधविश्वास को जड़ से समाप्त करने के लिए हमने विभिन्न योजनाएँ बनाने का निर्णय लिया, ताकि हम लोगों की वैज्ञानिक सोच को जाग्रत कर सकें तथा गलत रूढ़िवादी परंपराओं का त्याग करने के लिए उनसे आग्रह कर सकें। हमारे 'विश्वास दल' का गठन हो गया और उस दल का अध्यक्ष मुझे ही चुना गया।

हमने कई योजनाएँ आज ही बना लीं जिनसे हम जन-साधारण तक पहुँचने का प्रयास करेंगे और उन्हें सचेत करेंगे। छुट्‍टी के दिनों में हम नुक्कड़ नाटक करेंगे, प्रभात फेरियाँ लगाएँगे और जागरूकता के गीत गाएँगे। इतना ही नहीं, हम बच्चे मिलकर अपना एक अखबार भी निकालेंगे, जिसका नाम होगा 'विश्वास'। हम लेख, कथा-कहानियों, कविताओं के माध्यम से जन-मानस को जागरूक करने का प्रयास करेंगे। इस कार्य के लिए हमें स्कूल के शिक्षक-अभिभावक संघ से धन की सहायता का आश्वासन भी मिला है।

मुझे अपने 'विश्वास' पर भरोसा है। आज मैं निश्चिंत होकर सो पाऊँगा।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

दूभर या दुर्लभ = कठिन, भ्रांति = भ्रम, आसार = लक्षण, समकक्ष = बराबर, परंपरा = वर्षों से चले आ रहे रीति-रिवाज़, मोहताज = गरीब, दूसरों पर आश्रित, आयोजन = समारोह जुटाना, प्रबंध, तैयारी, दकियानूसी = पिछड़े विचारों का, अपाहिज = विकलांग, निश्चिंत = बेफ़िक्र, जागरूकता = जाग्रत करने की भावना, सतर्कता, सावधानी, विश्लेषण = छानबीन करना, जाँच करना, क्षमता = सामर्थ्य, अभिभावक = माता-पिता, ऊर्जा = शक्ति, आश्वासन = दिलासा, पुंज = समूह।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) विभास का मस्तिष्क बार-बार किस माध्यम द्‍वारा समाचारों को देख विचलित हो जाता था?

(ख) वर्ष के सबसे बड़े दिन सब क्यों परेशान थे?

(ग) सूखे से बचने के लिए देश के विभिन्न भागों में क्या किया जा रहा था?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सूर्य से हमारा क्या रिश्ता है?

____

(ख) सूखा क्यों पड़ता है?

____

(ग) विभास ने अपने विद्यालय में अंधविश्वास मिटाने के लिए कौन–सा दल बनाया?

____

(घ) विश्वास दल की धन से सहायता करने का आश्वासन किसने दिया था?

____

(ङ) विभास गर्मी को लेकर क्यों परेशान था?

____

(च) सूर्य ग्रहण कैसे होता है?

____

(छ) कर्नाटक में पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय की किस घटना से विभास का मन अत्यंत विचलित हो गया था?

____

(ज) सूर्य ग्रहण के संबंध में लोगों की भ्रांतियों को कैसे दूर किया जा सकता है?

____

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) जून के महीने का सबसे बड़ा दिन कौन–सा होता है?

☐ 15 जून ☐ 22 जून ☐ 31 जून

(ख) अंधविश्वास की तुलना किससे की गई है?

☐ पूजा–पाठ से ☐ भूलभुलैया से ☐ घनी अँधेरी सुरंग से

(ग) विभास ने बाल–सभा में किस विषय पर चर्चा की?

☐ झूठ ☐ चोरी ☐ अंधविश्वास

3. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) ____________ ही हमारे जीव का दाता है।

(ख) जब चंद्रमा की परछाई सूर्य पर पड़ती है, तब ____________ होता है।

(ग) आज भी हमारे देश में चंद्रग्रहण व सूर्यग्रहण से सम्बन्धित अनेको ________________ विद्यमान है।

(घ) हमारे समाज में आज भी अनेक ________________ प्रचलित हैं।

(ङ) इस पाठ का आशय जन-जन को अंधविश्वासों के प्रति ________________ करना है।

4. गलत विकल्प चुनकर (✗) लगाइए–

(क) लोग अंधविश्वासी क्यों बनते हैं?

- भय के कारण
- अनपढ़ होने के कारण
- वैज्ञानिक सोच के अभाव में

(ख) सूर्य ग्रहण के साथ क्या भ्रांतियाँ जुड़ी हैं?

- सूर्य ग्रहण के समय भोजन नहीं पकाना चाहिए।
- सूर्य ग्रहण देखने से आँखों की ज्योति बढ़ती है।
- सूर्य ग्रहण के समय दान देना चाहिए।

(ग) 'विश्वास दल' ने क्या करने का निश्चय किया?

- अखबार निकालेंगे
- प्रभात फेरी निकालेंगे
- पानी बचाएँगे

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. नीचे दिए गए शब्दों में से गलत (✗) विकल्प छाँटिए–

किरण	–	रश्मि	लाली	अंशु
बादल	–	जलद	वारिद	घनघोर
प्रात:	–	प्रकाश	प्रभात	भोर
संतान	–	औलाद	वंशज	संतति
लकड़ी	–	काष्ठ	काठ	बुरादा
दूध	–	दुग्ध	क्षीर	दधि

2. दिए गए शब्दों से दो-दो शब्द बनाइए–

ज्ञान – ज्ञानी ________________ ________________

विशेष – विशेषता ________________ ________________

युग – कलयुग ________________ ________________

प्रकाश – प्रकाशवान ________________ ________________

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द चुनकर कीजिए–

उदार, योग, पावन, योग्य, पवन, कूल, कुल, उधार

(क) दो और दो का ________________ चार होता है

(ख) गौरव ने अपने कार्यों से सिद्ध कर दिया है कि वह एक ____________ बालक है।

(ग) मैं लोगो से ____________ लेने में विश्वास नहीं रखता।

(घ) प्रतीक बहुत ____________ दिल का व्यक्ति है।

(ङ) यमुना एक ____________ नदी है।

(च) शीतल ____________ का झोंका सबको राहत देता है।

(छ) नदी के ____________ पर नौकाएँ खड़ी हैं।

(ज) आज ____________ दस छात्र कक्षा में उपस्थित हैं।

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- सप्ताह में एक दिन डायरी लिखिए। उसमें लिखिए कि आपने सप्ताह-भर कौन-सा विशेष या अच्छा कार्य किया?
- आप अपने विद्यालय या कॉलोनी में 'विश्वास दल' जैसा क्लब बनाना चाहते हैं। उसके उद्देश्यों को बताते हुए एक आकर्षक नोटिस बनाइए।
- समाचार-पत्र तथा पत्रिकाओं से प्रेरणादायक समाचार या चित्रों को एकत्रित कर फाइल में संकलित कीजिए।

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक शब्द लिखिए–

उपकार करने वाला	____________	भगवान में आस्था रखने वाला	____________
देवों की वाणी	____________	साथ में पढने वाला	____________
लोगों में प्रिय	____________	उपकार मानने वाला	____________
जो कभी न मरे	____________	साहित्य गाथाऐं लिखने वाला	____________

- 'डायरी' शब्द का अर्थ बताते हुए इस पर अपने शब्दों में कुछ तथ्य लिखिए।
- क्या आपके पास कोई गुप्त व पर्सनल डायरी है? यदि है तो आपने उसमें अपनी दिनचर्या से अलग किस-२ के बारे में विवरण दिया है?
- यदि आप 'डायरी' के विषय जानते हैं, तो आप अपने घर में पड़े व्यर्थ सामान व व्यर्थ किताबों आदि को एकत्रित कर एक नयी डायरी तैयार कीजिए।

शिक्षण–संकेत

- सभी बच्चों को कक्षा में हमारे समाज में हो रहे सभी अंधविश्वासों और कुप्रथाओं के बारे में जानकारी दें।
- पाठ में उपस्थित सभी अंधविश्वासों को कक्षा में एक चार्ट पेपर और श्यामपट्ट की सहायता से चित्रित करके बच्चों को इनके प्रति जागरूक करने का प्रयास कीजिए।

पसीने की कमाई 17
(कहानी)

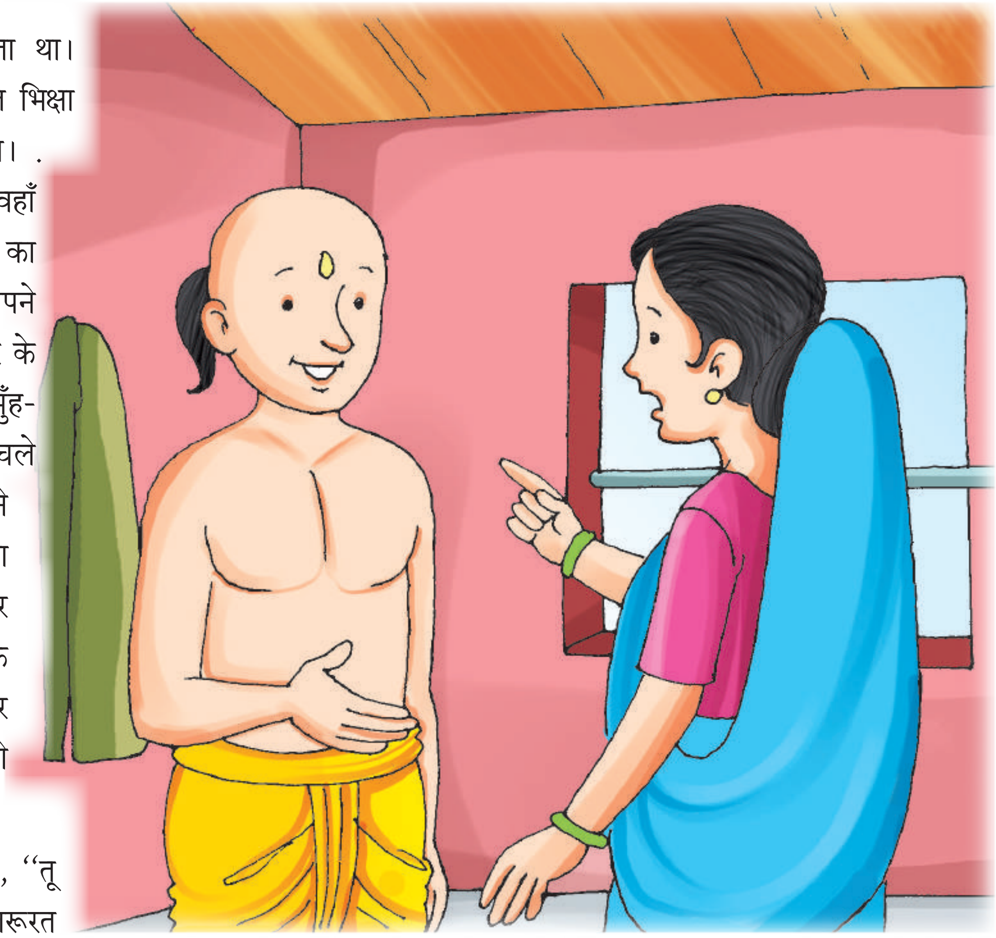

किसी नगर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। पेट भरने के लिए वह बस्ती से हर रोज भिक्षा माँगता और ईश्वर-भजन में लगा रहता। . जरूरत से ज्यादा वह कभी नहीं माँगता। वहाँ का राजा बड़ा धनवान और गौ-ब्राह्मणों का बहुत भक्त था। ब्राह्मणों को वह कभी अपने द्वार से विमुख नहीं जाने देता था। दूर-दूर के ब्राह्मण, साधु-संत उसके पास आते, मुँह-माँगा दान पाकर उसे आशीष देते हुए चले जाते हैं। एक दिन उस ब्राह्मण की पत्नी ने अपने पति से कहा, ''दूर-दूर के ब्राह्मण तो राजा के पास से मनमाना धन माँग कर ले जाते हैं और तुम यहीं के यहीं एक दिन भी राजा के पास नहीं गए। जन्म-भर कंगाली कहाँ तक भोगूँ? आज तुम जाओ और राजा से कुछ माँग लाओ।''

ब्रह्मण ने अपनी पत्नी को समझाकर कहा, ''तू तो बावरी है। ब्रह्मण को धन की क्या ज़रूरत है? भोजन के लायक रोज़ माँग ही लाता हूँ। राजा का धन अच्छा नहीं होता। वह हम लोगों को नहीं लेना चाहिए।''

परंतु ब्रह्मण की पत्नी अड़ गई। कहने लगी, ''मैं तुम्हारी शास्त्र की बातें नहीं सुनना चाहती। तुम तो माला लेकर जपने बैठ जाते हो और मेरे सिर पर यह कच्ची गृहस्थी लदी हुई है। इन लड़के-बच्चों को क्या पहनाऊँ और क्या लिखाऊँ? आखिर वे भी तो चार जनों के बीच में रहते हैं, अपने संग के लड़के-बच्चों को पहनते-ओढ़ते और तरह-तरह की चीज़ें खाते-पीते देखते हैं तो उनका मन भी ललचाता है। आज तुम राजा के पास जाओ। राजा भला मानुष है। जाओगे तो वह तुमको ज़रूर मुँह-माँगा दान देगा।''

लाचार होकर ब्राह्मण राजा के पास गया। राजा उस समय शिकार खेलने गया था। ब्राह्मण आर्शीवाद की बेलपत्ती और फूल रखकर लौट आया। ब्राह्मणी ने उसे दूसरे दिन फिर भेजा, परंतु संयोगवश राजा फिर भी न मिला। ब्राह्मणी तो पीछे पड़ गई थी। उसने निश्चय कर लिया था कि इस बार राजा के यहाँ से धन अवश्य माँगना चाहिए। उसने तीसरे दिन फिर ब्राह्मण को भेजा।

राजा ब्राह्मणों का भक्त तो था ही, ब्राह्मण को आते देखकर अपने सिंहासन से उठकर आदर के साथ प्रणाम किया और प्रेमपूर्वक आसन पर बैठाया। फिर नम्रता के साथ कहा, ''महाराज, आपने मेरी कुटिया में पधारकर मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है। मैं दो

दिन आपकों नहीं मिल सका, इसका मुझे दुःख है। उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। अब आप बतलाइए कि आपका शुभागमन किसलिए हुआ है? मैं आपकी क्या सेवा करूँ?''

ब्राह्मण ने कहा, ''राजन्, जो आप मेरी इच्छानुसार दान देना स्वीकार करें तो मैं कहूँ।''

राजा ने कहा, ''हाँ-हाँ कहिए, मेरे बड़े भाग्य जो मैं आपकी कुछ सेवा कर सकूँ।''

ब्राह्मण ने निवेदन किया, ''मैं और कुछ नहीं चाहता। आप अपनी कमाई में से मुझे चार पैसे दान दीजिए।''

ब्राह्मण की बात सुनकर राजा सन्नाटे में आ गया। विचार करने लगा कि ''खजाने में जो अपार धन भरा पड़ा है उसमें सारा धन तो प्रजा की कमाई का है, मेरी मेहनत की कमाई तो एक कौड़ी भी नहीं है। मैं ब्राह्मण को चार पैसे कहाँ से दूँ?'' फिर राजा ने कुछ सोचकर ब्राह्मण से कहा ''महाराज, आप मुझे एक दिन की मोहलत दीजिए। कल आपको आपका मुँह-माँगा दान दे सकूँगा।'' सुनकर ब्रह्मण कल आने के लिए कहकर लौट आया।

ब्राह्मण ने कहा, ''नहीं, कल देने को कहा है।''

ब्राह्मणी समझी कि मेरे पति ने बहुत-सा धन माँगा होगा जिसे राजा आज नहीं दे सका। कल इन्तजाम करके देगा। यह सोचकर वह मन-ही-मन बहुत खुश हुई।

इधर ब्राह्मण के जाते ही राजा ने अपने राजसी कपड़े उतारकर फटे-पुराने कपड़े पहने और मज़दूर जैसा वेश बना लिया। रानी के पूछने पर राजा ने स्पष्ट रूप से सारी बात बता दी। रानी को ब्राह्मण द्वारा कही गई बात उचित लगी। उसने राजा से कहा, ''थोड़ा ठहरिए, मैं भी आपके साथ चलती हूँ। मैं अपनी यह साड़ी बदल आऊँ।'' ऐसा कहकर रानी गई और एक पुरानी साड़ी पहनकर आ गई।

इस प्रकार वेश बदलकर राजा-रानी दोंनों मज़दूरी की तलाश में शहर में निकल पड़े। लुहारों के मोहल्ले में जाकर राजा ने आवाज़ लगाई, ''किसी को मज़दूर चाहिए, मज़दूर !'' आखिर एक लुहार ने, जो गाड़ियों के पहियों पर हाल चढ़ाने की तैयारी कर रहा था, राजा को बुलाकर कहा, ''देखो भाई, मज़दूर तो मुझे चाहिए पर पता नहीं तुम काम कर पाओगे या नहीं! पहले तुम्हें खलात धौंकनी पड़ेगी और जब ताव आ जाएगा तब घन चलाना होगा।'' फिर रानी की ओर देखकर कहा, ''तुम्हें कुएँ से पानी लाकर यह हौज़ भरना पड़ेगा और कोयले वाले घर से कोयला भर-भरकर भट्ठी में डालना होगा। तुम दोनों आदमियों को दिन-भर में दो-दो आने मिलेंगे। काम पसंद हो तो करो, वरना इसके अलावा मेरे पास और कोई काम नहीं।''

राजा-रानी दोनों काम करने के लिए राज़ी हो गए। लुहार का बतलाया हुआ काम करने लगे। राजा खलात धौंकने लगा, परंतु उससे काम ठीक तौर पर बनता नहीं था। बीच-बीच में हाथ रूक जाता। तब लुहार नाराज़ होकर ठीक काम करने की ताकीद करता। बार-बार बतलाने पर राजा जैसे-तैसे अपना काम ठीक करने लगा। रानी कुएँ से पानी भर-भर कर लाने लगी। दो-चार घड़ा पानी खींचते ही उसक हाथ में फफोले पड़ गए। किसी तरह बड़ी कठिनाई से उसने पानी का हौज़ भरा। बीच-बीच में लुहार के कहने पर रानी टोकनी में कोयला भर लाती थी और भट्ठी में डाल देती थी। कोयला भरने से रानी के कपड़े और गोरे हाथ काले हो गए। ताव आ जाने पर लुहार ने पाँत भट्टी में से निकालकर पहिये पर जमाई और एक घन अपने हाथ में लेकर और एक राजा के हाथ में देकर कहा ''देखो, बारी-बारी से घन इस पर मारना। हाथ ज़रा भी इधर-उधर न होने पाए।'' राजा ज़ोर-ज़ोर से घन मारने लगा, लेकिन उनका निशाना ठीक नहीं बैठता। कभी घन हाल पर गिरता तो कभी पहिए पर। मज़दूरों का यह हाल देखकर लुहारिन भीतर से बड़बड़ाती हुई आई और लुहार से कहने लगी, ''तुमने आज कहाँ से बेसऊर मज़दूर लगाए हैं। इनसे काम नहीं होगा। इन्हें अलग करके दूसरे मज़दूर लगाओ। ये सस्ते मज़दूर तुम्हारा सब काम बिगाड़ देंगें।''

राजा-रानी दोनों लुहार और लुहारिन की डाँट-फटकार सहते हुए अपना-अपना काम मन लगाकर कर रहे थे। घन चलाते-चलाते राजा का शरीर पसीने से तर हो गया, ज़ोर-ज़ोर से साँसे चलने लगीं। रानी भी पानी भरते-भरते और कोयला झोंकते-झोंकते थक गई थीं। उसके कोमल अंग से पसीने की धार बह रही थी। बड़ी मुश्किल से एक पहिए पर हाल चढ़ पाई। लुहार ने तब उनसे कहा, ''देखो भाई, यह काम बहुत मेहनत का है, तुम लोगों से ठीक-ठीक नहीं बनेगा। अभी तो तुमने दो घंटे ही काम किया है, उसकी मज़दूरी लो और अपने घर जाओ।''

राजा ने कहा, ''जैसी मरजी ! जितनी मज़दूरी आप देना चाहें, दे दें। हम लोग दूसरी जगह काम खोज लेंगे।''

लुहार ने राजा-रानी को दो-दो पैसे दिए जिन्हें वे बड़ी खुशी से लेकर अपने महल वापस आ गए। आज उनको पता चला कि पसीने की कमाई कैसी होती है, उसके लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। महल में आकर राजा ने चारों पैसे अलग संदूक में रख लिए और राजा द्वारा दिए गए वचन के अनुसार अगले दिन सवेरे जब ब्राह्मण आया तो चारों पैसे उसे दे दिए।

ब्राह्मण राजा को आर्शीवाद देकर घर लौटा ओर ब्रह्मणी से कहा, ''लो, राजा के यहाँ से दक्षिणा ले आया हूँ।''

ब्राह्मणी प्रसन्न होकर दौड़ी। पास आते ही उसने अपना आँचल फैला दिया। ब्राह्मण ने अपनी पिछौरी की गाँठ से पैसे निकालकर उसमें डाल दिए। ब्राह्मणी बड़ी आशा लेकर आई थी। परंतु जब उसने सिर्फ़ चार पैसे देखे तो वह ठिठककर रह गई और उन्हें दूर फेंक दिया। जल-भुनकर ब्राह्मण से बोली, ''तुम जैसे दरिद्री से राजा के यहाँ जाकर भी न माँगा गया। समुंद्रर के पास जाकर भी प्यासे लौट आए। राजा ऐसा धर्मात्मा है कि वह ब्राह्मणों को मुँह-माँगा दान देता है। आज और कोई होता तो इतना धन माँगकर लाता कि उसकी सात पीढ़ी बैठी खाती, लेकिन तुम ऐसे हो कि चार पैसे लेकर आए। शरम भी नहीं आती।''

इस प्रकार ब्राह्मणी बहुत देर तक बक-बक करती रही। ब्राह्मण ने पैसे उठाकर आँगन में तुलसीघरा पर रख दिए। सोचा, ब्राह्मणी शांत हो जाएगी या उसे जब ज़रूरत पड़ेगी तब वह उन्हें उठा लेगी। परंतु पैसे वहीं रखे रहे और ऊपर फूल-बेलपत्र आदि के गिरने से मिट्टी के नीचे दब गए। ब्राह्मण-ब्राह्मणी दोनों की उनकी खबर लेना भूल गए।

कुछ दिनों बाद तुलसीघरा में चार पौधे उगे। चारों लहलहाते थे और देखने में भले मालूम पड़ते थे। ब्राह्मणी उन्हें फूलों के झाड़ समझकर कभी-कभी पानी दे दिया करती थी। चार महीने बाद वे चारों पौधे बड़े हो गए और फूलने लगे। एक-एक पेड़ में टोकनियों फूल फूलते थे। सूखने पर उनमें से मोती झरते। मोतियों की चमक और खूबसूरती देखते ही बनती थी। ब्राह्मण-ब्राह्मणी ने कभी मोती नहीं देखे थे। वे समझते कि ये उस पोधे के बीज हैं।

हर रोज़ फूल इतने झरते कि तुलसीघरा के चारों ओर पुर जाते थे। ब्राह्मणी नित्य उन्हें समेटकर एक टोकनी में भर लेती और घर के एक कोने में डाल दिया करती थी।

इस प्रकार कई महीने हो गए। घर मोतियों से भर गया। एक दिन एक तरकारी वाली आई। ब्राह्मणी को तरकारी की ज़रूरत थी, परंतु उस दिन उसके पास देने को कुछ भी नहीं था। तुलसीघरा के आस-पास से बटोरे हुए मोती सूपा में रखे थे। ब्राह्मणी ने उनकी ओर इशारा करते हुए तरकारी वाली से कहा, ''इन बीजों के बदले में कुछ तरकारी देना चाहो तो दे जाओ।'' तरकारी वाली ने दूर से ही उन बीजों की चमक-दमक देखकर कहा, ''ये हैं क्या, बहन? काम की चीज़ हुई तो ले लूँगी।'' ब्रह्मणी ने सूपा आगे सरकाते हुए कहा, ''तुम्हीं देख लो! ये इस तुलसीघरा में लगे हुए फूलों के बीज हैं।'' तरकारी वाली ने जब पास से देखा तो उसे मालूम हुआ कि ये तो मोती हैं। उसने खुशी से उन मोतियों के बदले तरकारी दे दी। उस दिन से वह प्रायः रोज आती और मोतियों के बदले में तरकारी दे जाती।

तरकारी वाली और ब्राह्मणी दोनों ही इस लेन-देन से खुश थीं। तरकारी वाली यह सोचकर खुश होती थी कि मुझे एक पैसे की तरकारी में हज़ारों का माल मिलता है और ब्रह्मणी यह सोचकर खुश होती कि बीजों के बदले हमारी तरकारी की गुज़र चलती है। इस प्रकार कई महीने बीत गए।

राजमहल में कई जोड़े राजहंसों के थे। वे मोती चुगते थे। राजा का यह नियम था कि जब राजहंस मोती चुग लेते तब भोजन करता था। एक दिन मोती चुक गए। इस कारण राजहंसों को दाना नहीं मिला और राज-परिवार भूखा ही रहा। सारे नगर भर में यह बात फैल गई। यह समाचार ब्राह्मण-ब्राह्मणी ने भी सुना। उन दोनों ने विचार किया कि ''राजा बड़ा दानी है। शायद आज सब कुछ उसने दान कर दिया है। यहाँ तक कि उसके पास खाने तक को भी कुछ बचा नहीं दिखता। ऐसी हालत में हम लोगों को उसकी सहायता करनी चाहिए।''

इसके बाद ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा, ''तू कहे तो इनमें से कुछ बीज राजा को दे आऊँ। तू कहती थी कि इनके बदले में भाजी-तरकारी और थोड़ी-बहुत खाने की चीज़ें मिल जाती हैं!''

ब्राह्मणी ने कहा, ''हाँ, मैं तो रोज इनके बदले में सौदा लिया करती हूँ! तुम्हारी इच्छा हो तो दे आओ। किसी दिन राजा के यहाँ से उससे हज़ार गुना मिल जाएगा।''

ऐसा कहकर ब्राह्मणी अंदर से एक टोकरी बीज भर लाईं उसमें कूड़ा-करकट मिला हुआ था, उसे सूपा से साफ करके उन्हें एक पोटली में बाँध दिया। ब्राह्मण पोटली सिर पर रखकर राजा के पास पहुँचा। राजा ने उसका आदर-सत्कार करके पूछा, ''कहिए महाराज, सेवक को क्या आज्ञा है।''

ब्राह्मण ने कहा, ''महाराज मैंने सुना है आज आपके घर रसोई नहीं बनी है और आपने तथा आपके परिवार ने भोजन नहीं किया। मैं जानता हूँ आप इतने दानी हैं कि अपना सब कुछ तक दे सकते हैं। यही सोचकर आज की गुज़र के लायक यह तुच्छ भेंट लाया हूँ। अनाज तो मेरे घर में नहीं है, परंतु ये एक प्रकार के फूलों के बीज हैं। इनके बदले में भाजी-तरकारी और खाने-पीने की चीज़ें मिल जाती हैं। आप इस मेरी तुच्छ भेंट को स्वीकार कीजिए।''

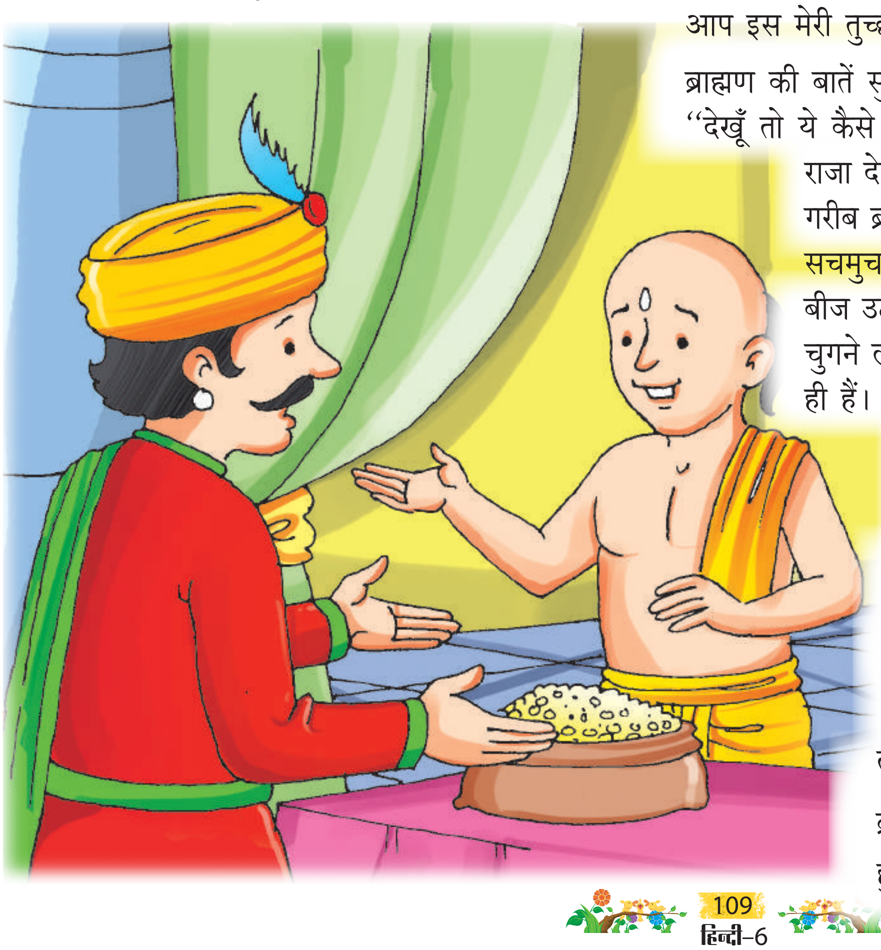

ब्राह्मण की बातें सुनकर राजा को बड़ा कौतूहल हुआ। उसने कहा, ''देखूँ तो ये कैसे बीज हैं?'' ब्राह्मण ने पोटली खोलकर रख दी। राजा देखकर चकित हो गया। ''अरे, ये तो मोती हैं। इस गरीब ब्राह्मण के पास इतने मोती कहाँ से आए? क्या ये सचमुच मोती ही हैं?'' ऐसा सोचकर उसने एक मुट्ठी बीज उठाकर राजहंसों के सामने फेंक दिए। राजहंस तुरंत चुगने लगे। राजा को भरोसा हो गया कि वे सचमुच मोती ही हैं। एक-एक मोती सैकड़ों रूपयों की कीमत का है।

अब राजा ने ब्राह्मण से पूछा, ''महाराज, तुम्हारे पास इतने मोती कहाँ से आए? सच-सच बताओ।''

ब्राह्मण ने कहा, ''ऐसे बीज तो हमारे घर पर हैं। हमारे तुलसीघरा में फूलों के चार पौधे हैं, उन्हीं में से रोज़ मोती झरते हैं। भरोसा न हो तो मेरे घर चलकर देख लीजिए''।

ब्राह्मण की बातें सुनकर राजा को बड़ा अचंभा हुआ। मंत्री तथा अन्य बहुत-से लोगों के साथ

राजा ब्राह्मण के घर गया। सब लोगों ने देखा कि तुलसीघरा में चार पौधे लगे हुए हैं, जिनके सूखे हुए फलों से मोती झरते हैं। पूछताछ करने से मालूम हुआ कि राजा ने ब्राह्मण को अपने पसीने की कमाई के जो चार पैसे दिए थे, उन्हीं से मोती के इन चार पौधों की उत्पत्ति हुई है। पौधों की जड़ टटोलने पर उनमें एक-एक पैसा चिपका मिला।

आज ब्राह्मण-ब्राह्मणी को मालूम हुआ कि उनके पास लाखों-करोड़ों की ज़ायदाद है। जिसे वे एक साधारण फूल का बीज समझते थे, उसका एक-एक बीज सैकड़ों की कीमत का है। ब्राह्मण ने सोचा कि यह सब धन मेरे किस काम का? मुझे तो नित्य एक सेर आटा चाहिए। ऐसा सोचकर ब्राह्मण ने वे सब मोती किसी धर्म-कर्म में खर्च करने के लिए राजा को दे दिए। राजा की आँखें खुल गईं। परिश्रम से पैदा किए हुए धन की कीमत उन्हें आज मालूम हुई। उस दिन से राजा ने प्रण कर लिया कि मैं खजाने का एक भी पैसा अपने निजी खर्चे में नही लगाऊँगा। निजी खर्च मेहनत करके चलाऊँगा। खजाने और ब्राह्मण के दिए हुए द्रव्य से राजा ने जनता के फायदे के कई काम शुरू करा दिए। जैसा ब्राह्मण और राजा ने धर्म का पालन किया, भगवान करे, वैसा सब करें !

—संकलित

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

विमुख = खाली, भूखा, आशीष = आशीर्वाद, दुआ, कंगाली = दरिद्रता, गरीबी, हौज = गड्ढा, खलात = खाल की बनी हुई, ताकीद = हिदायत, पाँत = पिघला हुआ लोहा, सूपा = छाज, गृहस्थी = परिवार, तुच्छ = छोटी, भला मानुष = अच्छा आदमी, मोहलत = समय, अचंभा = हैरानी, तलाश = खोज, प्रण = प्रतिज्ञा, जन = मनुष्य, जायदाद = माल, धन = संपत्ति।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) ब्राह्मण प्रतिदिन बस्ती में से क्या माँगकर लाता था?

(ख) राजा किसका भक्त था?

(ग) राजा का स्वभाव कैसा था?

(घ) ब्राह्मण की पत्नी किस बात पर अड़ गई?

(ङ) तुलसीघरा में कितने पौधे उगे थे?

(च) ब्राह्मण परिवार को मोती कहाँ से प्राप्त हुए?

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ब्राह्मण की पत्नी ने ब्राह्मण को राजा के पास क्यों भेजा?

____

(ख) ब्राह्मण ने राजा से क्या दान माँगा?

(ग) राजा ने ब्राह्मण को मेहनत के चार पैसे का दान कैसे किया?

(घ) भोजन करने से पूर्व राजा किस नियम का पालन करता था?

(ङ) राजा के परिश्रम के चार पैसे कई गुना कैसे हुए?

(च) पसीने की कमाई का रहस्य कैसे स्पष्ट हुआ?

(छ) यह कहानी आपको क्या प्रेरणा देती है? स्पष्ट कीजिए।

2. उचित उत्तर के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) "ब्राह्मण को धन की क्या जरूरत है।" ये शब्द किसने कहे?

☐ ब्राह्मण की पत्नी ने ☐ ब्राह्मण ने। ☐ राजा ने।

(ख) 'ब्राह्मण ने राजा से उनकी कमाई में से कितने पैसे माँगे?

☐ चार आने। ☐ पाँच पैसे। ☐ दस पैसे।

(ग) राजा व रानी ने किसके यहाँ मज़दूरी की?

☐ सुनार के ☐ किसान के। ☐ लुहार के।

(घ) ब्राह्मण ने राजा को जो बीज दिए, वे असल में क्या थे?

☐ अनार के बीज। ☐ सच्चे मोती। ☐ संतरे के बीज।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) पसीने की कमाई –

(ख) सन्नाटे में आना –

(ग) अड़ जाना –

(घ) आँखें खुलना –

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम लिखिए–

आशीर्वाद – ______________ – ______________ ______________

शुभागमन – ______________ – ______________ ______________

इच्छानुसार – ______________ – ______________ ______________

धर्मात्मा – ______________ – ______________ ______________

अत्यंत – ______________ – ______________ ______________

3. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। जैसे- देश से निकाला। इसका समास होगा- 'देश-निकाला'–

निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का नाम बताइए–

गुरू-दक्षिणा – ______________ ______________

गौ-ब्राह्मण – ______________ ______________

उदर-पोषण – ______________ ______________

मनमाना – ______________ ______________

तुलसीघरा – ______________ ______________

4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

बावरी	______________	लायक	______________	गिरस्ती	______________
खजाना	______________	मेहनत	______________	मोहलत	______________
इन्तजाम	______________	ताकीद	______________	बेसऊर	______________
समुन्दर	______________	भरोसा	______________	जायदाद	______________

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- **एक चार्ट बनाइए और उस पर अपने परिवार के उन सभी सदस्यों के नाम तथा उनके बारे में लिखिए (कि उनका क्या-क्या व्यवसाय है) व बताइए, कि क्या वे भी कठिन परिश्रम करते हैं?**

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- **कठिन परिश्रम के रूप में ही यदि आपको किसी एक बूढ़े व्यक्ति की सहायता करनी हो तो आप किस प्रकार करेंगे? अपने विद्यालय में एक नाटक मंचन के रूप में प्रस्तुत करके बताइए।**

शिक्षण-संकेत

- सभी बच्चों को कठिन परिश्रम करने का अर्थ, महत्व बताते हुए उसके लाभ व परिश्रम करने की प्रेरणा दीजिए।

कुंडलियाँ (दोहे) 18

(1)

पानी बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै।
पर स्वारथ के काज, शीश आगे धरि दीजै।।
कह गिरधर कविराय, बड़ेन की याही बानी।
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी।।

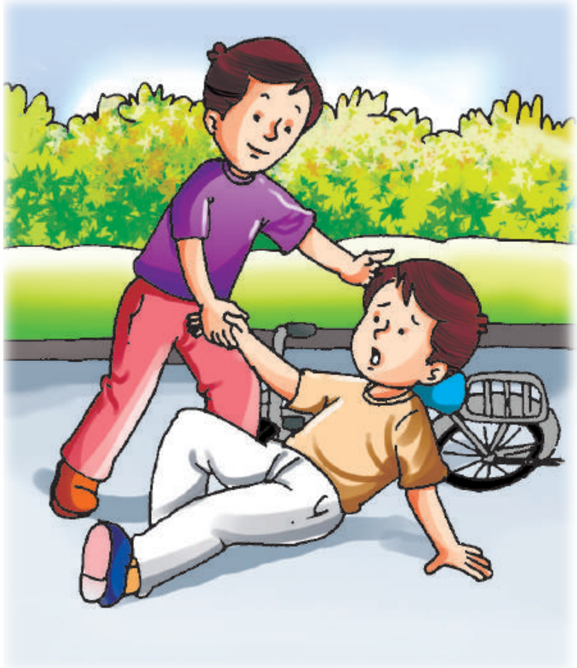

(2)

बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान-पान-सम्मान, राग-रँग उनहिं न भावै।।
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना बिचारे।।

(3)

साँई अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोय।
तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होय।।
जब लग कारज होय,भूलि कबहूँ नहिं कहिए।
दुरजन हँसै न कोय, आप सियरे ह्वै रहिए।।
कह गिरधर कविराय, बात चतुरन की ताईं।
करतुती कहि देत, आप कहिए नहिं साईं।।

(4)

दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाँउ न रहत निदान।।
ठाँउ न रहत निदान जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय विनय सब ही की कीजै।।
कह गिरधर कविराय अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निस दिन चारि रहत सब ही के दौलत।।

शब्द-पिटारा (Word-Meanings)

बाढ़ै = बढ़ना, दाम = धन, उलोचिए = दान देना, निकालना।, पर स्वारथ = दूसरों की भलाई, उनहिं — उनको, सयानो = चतुर, जग = संसार, शीश = सिर, हँसाय = हँसी, बड़ेन = बूढ़े, अनुभवी व्यक्ति, चित्त = मन, चैन = सुकून, शांति, सुचाल = सीधी चाल, अच्छी चाल, पानी = यहाँ इज्जत, सम्मान, भूलि = भूल कर, करतूत = कमियाँ, बुरे कार्य, बिचारे = विचार किए, कारज = कार्य, पाछे = बाद में, दुरजन = दूसरे व्यक्ति, खटकना = चुभना, दौलत = धन-संपदा जस = कीर्ति, बड़ाई, विनय = विनती, घट = कम।

अभ्यास (Exercises)

मौखिक (Oral)

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कवि ने किसका स्मरण करने को कहा है?

(ख) खान-पान-सम्मान राग-रँग किस व्यक्ति को नहीं भाते हैं?

(ग) जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे काम करते हैं, उनका संसार में क्या हाल होता है?

(घ) कार्य संपन्न होने तक हमें क्या करना चाहिए?

(ङ) धन-संपदा पाने पर हमें क्या नहीं करना चाहिए।

लिखित (Written)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कवि गिरधर के अनुसार जीवन को सुखी बनाने हेतु मनुष्य को कैसा आचरण करना चाहिए?

____

(ख) 'चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी' में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।

____

(ग) बिना विचारे कार्य करने से क्या परिणाम होते हैं?

____

(घ) 'साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोय' कवि के ऐसा कहने का क्या तात्पर्य है?

____

(ङ) अपना काम बिगड़ने पर मन की क्या दशा होती है?

____

1. सही उत्तर चुनकर (✓) का निशान लगाइए–

(क) कविता में कवि ने दोनों हाथों से देने के लिए कहा है–

☐ धन ☐ पानी ☐ दान

(ख) जो व्यक्ति बिना विचार करे अपना कार्य करता है, तो उसका कार्य–

☐ सम्पन्न हो जाता है। ☐ बिगड़ जाता है। ☐ अच्छा हो जाता है।

(ग) किन लोगों के चित्त (मन) में चैन नहीं होता है, जो लोग–

☐ दूसरों पर हँसते हो। ☐ बिना विचार किये कार्य करते हैं। ☐ अपना कार्य सम्पन्न करते हैं।

(घ) हमारा कार्य पूर्ण कब होता है, जब हम कार्य–

☐ पूरा करते हैं। ☐ अच्छी प्रकार से करते हैं। ☐ लगन से करते हैं।

(ङ) हमें क्या पाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए ?

☐ दौलत ☐ अभिमान ☐ चतुराई

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) पानी बाढ़ै नाव में, ____________
____________ यही सयानो काम ।।
यही सयानो काम, ____________
____________ शीय आगे धरि दीजै ।।
____________ सब ही के दौलत ।।

(ख) दौलत पाय ____________
____________ न रहत निदान ।।
ठाँऊ न रहत ____________
कह गिरधर कविराय ____________
____________ सब ही के दौलत ।।

भाषा-ज्ञान (Language Knowledge)

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो तुकान्त शब्द लिखिए–

पानी – ____________ ____________
कीजै – ____________ ____________
चतुर – ____________ ____________
दाम – ____________ ____________
सम्मान – ____________ ____________
दौलत – ____________ ____________

2. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

दुर्गम	______	अनावश्यक	______	शंकराचार्य	______
कारज	______	आढ़ै	______	सयानो	______
काज	______	बानी	______	आपनो	______
उनहिं	______	दुरजन	______	जिय	______
सुमिरन	______	याही	______	हँसाय	______
जश	______	भूलि	______	सियरे	______

3. निम्नलिखित शब्दों-युग्मों के शब्दों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए ताकि उनका अन्तर स्पष्ट हो जाए–

(क) नाव – ______
नव – ______

(ख) दाम – ______
दम – ______

(ग) धीर – ______
धरि – ______

(घ) बिचारे – ______
बेचारे – ______

(ङ) आदि – ______
आदी – ______

(च) अन्न – ______
अन्य – ______

रचनात्मक कौशल (Creative Skill)

- गिरधर कवि की अन्य कुंडलियों का संकलन करके उन्हें याद कीजिए।
- बिना विचारे कार्य करने वाले मनुष्यों की मनोदशा कैसी होती है? पाठ के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

मनोरंजक गतिविधि (Recreational Activity)

- अपने कक्षा अध्यापक के माध्यम से कवि रहीमदास के विषय में जानकारी एकत्रित कर उन पर एक फाइल बनाइए।
- विभिन्न कवियों की कविता संग्रहण करके उन पर आप एक प्रोजेक्ट तैयार कीजिए।

शिक्षण–संकेत

- एक कवि का कविता प्रस्तुत करने के रूप में हमारे प्रति क्या उद्देश्य होता है' ? इस विषय में बच्चों को कक्षा में जानकारी देते हुए उन्हें कवि गिरधर जैसे कवि कबीरदास के विषय में भी ज्ञान दें।

प्रश्न-पत्र (Test-Paper) – I

समयः 2 घंटा **अंक.........**

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) श्रीनगर के बीच–

☐ चिनाव नदी बहती है। ☐ झेलम नदी बहती है। ☐ व्यास नदी बहती है।

(ख) मोहन के मन में क्या सपने पल रहे थे?

☐ परदेश जाने के ☐ खूब पैसा कमाने के ☐ बड़ा आदमी बनने के

(ग) बिस्मिल की माता का नाम था–

☐ भूलवती ☐ मूलवती ☐ राजवती

(घ) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की मित्रता का आधार क्या था?

☐ एक–सा खानपान ☐ समान धर्म ☐ समान विचार

(ङ) गुजरात सरकार ने 106 वर्ष की आयु में संतोखबा को कौन–सी उपाधि दी?

☐ श्रीदेवी ☐ कलादेवी ☐ मातृदेवी

(च) किसका आंदोलन पूरे जोर पर था?

☐ मजदूरों का। ☐ आर्य समाज का। ☐ देश–भक्तों का।

2. उचित शब्दों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) कश्मीर की राजधानी ____________ है।

(ख) ____________ के पद पर बैठकर कोई किसी का मित्र या दुश्मन नहीं होता।

(ग) ____________ विज्ञापन ने सारे मुल्क में मचा दी।

(घ) लेखक ____________ पिक्चर देखना चाहता था।

(ङ) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की ____________ में खेती होती थी।

(च) ____________ के आह्वान पर लेखक के पिताजी ने सरकारी नौकरी छोड़ दी।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) रास्ते में लेखक ने क्या–क्या देखा?

(ख) मोहन घर छोड़कर शहर क्यों गया?

(ग) लेखक ने खिरनी बाग की नगरपालिका में जाकर क्या देखा?

(घ) मित्रता का मूल मंत्र क्या है?

(ङ) संतोखबा का प्रारंभिक जीवन कैसा था?

(च) बचपन में लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?

4. विलोम शब्द लिखिए–

(क) जीवन ____________ (च) पीछे ____________

(ख) समतल ____________ (छ) दुर्दिन ____________

(ग) सुख ____________ (ज) प्रशंसा ____________

(घ) दिन ____________ (झ) उत्तीर्ण ____________

(ङ) स्वच्छ ____________ (ञ) प्राकृतिक ____________

5. निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) दाग लगाना ________________________

(ख) मिट्टी में मिल जान ________________________

(ग) नाक में दम करना ________________________

(घ) बंद आँखों से देखना ________________________

(ङ) लक्ष्मी की कृपादृष्टि होना ________________________

(च) सपने पूरा होना ________________________

6. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) बचपन ________ (ङ) कायर ________ (झ) आकाश ________

(ख) उन्नति ________ (च) आदि ________ (ञ) आशा ________

(ग) उदय ________ (छ) इच्छा ________ (ट) पसंद ________

(घ) आरंभ ________ (ज) गहरा ________ (ठ) निरक्षर ________

7. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध रूप लिखिए–

(क) र्दुदिन ____________ (घ) शीघ्रक ____________

(ख) सम्तल ____________ (ङ) आर्शीवाद ____________

(ग) मसती ____________ (च) निझर ____________

8. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए–

(क) सत्कार ____________ (च) कदापि ____________

(ख) समावेश ____________ (छ) सर्वोच्च ____________

(ग) मनोविकार ____________ (ज) नि:स्वार्थ ____________

प्रश्न-पत्र (Test-Paper) – II

समयः 2 घंटा **अंक.........**

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सरोजिनी नायडू का जन्म कब हुआ था?

☐ 13 फरवरी, 1879 ☐ 13 फरवरी, 1878 ☐ 12 फरवरी, 1879

(ख) पेड़ क्या नहीं लेना चाहता?

☐ झूठा श्रेय ☐ धन–संपदा ☐ खाद–पानी

(ग) कर्मवती ने मेवाड़ राज्य की रक्षा हेतु सोचा–

☐ उद्देश्य ☐ प्रकरण ☐ उपाय

(घ) नन्हे मेई ने पैसे कहाँ छुपाए?

☐ गुल्लक में ☐ अलमारी में ☐ फर्श के छेद में

(ङ) विभास ने बाल–सभा में किस विषय पर चर्चा की?

☐ झूठ ☐ चोरी ☐ अंधविश्वास

(च) 'ब्राह्मण ने राजा से उनकी कमाई में से कितने पैसे माँगे?

☐ चार आने। ☐ पाँच पैसे। ☐ दस पैसे।

2. उचित शब्दों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) ____________ हिंदुस्तान की कह रही है कि राखी के धागों दुश्मन ने हजारों कराई हैं।

(ख) ____________ हमारे समाज में आज भी अनेक प्रचलित है।

(ग) ____________ मेवाड़ में ही कुछ जादू है और सीकरी की लेड़ाई में मैं भी अब्बाजान के साथ था।

(घ) ____________ ही हमारे जीव का दाता है।

(ङ) आज भी हमारे देश में चंद्रग्रहण व सूर्यग्रहण से सम्बन्धित अनेकों ____________ विद्यमान है।

(च) आज ____________ दस छात्र कक्षा में उपस्थित हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सरोजिनी नायडू के व्यक्तित्व की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

(ख) मुगल बादशाह हुमायूँ ने कर्मवती की राखी का सम्मान क्यों किया?

(ग) साहूकार नन्हे मेई की माँ पर क्यों चिल्ला रहा था?

(घ) लेखक ने रामलाल जी से मेल–जोल बढ़ाना क्यों प्रारम्भ किया।

(ङ) वर्दी के कट जाने पर हुजरों ने उन्होंने क्या देखा?

(च) अपना काम बिगड़ने पर मन की क्या दशा होती है?

4. दिए गए शब्दों से दो-दो शब्द बनाइए-

(क) ज्ञान — ज्ञानी ________ ________

(ख) विशेष — विशेषता ________ ________

(ग) युग — कलयुग ________ ________

(घ) प्रकाश — प्रकाशवान ________ ________

5. निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) पसीने की कमाई ________

(ख) सन्नाटे में आना ________

(ग) अड़ जाना ________

(घ) आँखें खुलना ________

(ङ) सुध-बुध न रहना ________

(च) गद्गद होना ________

6. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

(क) बाबरी ________

(ख) खजाना ________

(ग) इन्तजाम ________

(घ) शमुन्दर ________

(ङ) लायक ________

(च) मेहनत ________

(छ) ताकीद ________

(ज) भरोसा ________

(झ) गिरस्ती ________

(ञ) मोहलत ________

(ट) बेसऊर ________

(ठ) जायदाद ________

7. निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क) उपकार करने वाला ________

(ख) देवों की वाणी ________

(ग) लोगों में प्रिय ________

(घ) भगवान में आस्था रखने वाला ________

(ङ) साथ में पढने वाला ________

(च) उपकार मानने वाला ________

8. दिए गए शब्दों के लिंग पहचान कर रिक्त स्थान में 'पुल्लिंग' या 'स्त्रीलिंग' लिखिए-

(क) सूरज ________

(ख) धरती ________

(ग) डालियाँ ________

(घ) स्तंभ ________

(ङ) बिजली ________

(च) चाँद ________

(छ) पेड़ ________

(ज) मिट्टी ________

(झ) पत्तियाँ ________

(ञ) आँधी ________